# छत्तीसगढ़ भारती

## कक्षा – 7

सत्र 2021–22

### DIKSHA एप कैसे डाउनलोड करें?

विकल्प 1 : अपने मोबाइल ब्राउज़र पर diksha.gov.in/app टाइप करें।

विकल्प 2 : Google Play Store में DIKSHA NCTE ढूंढ़े एवं डाउनलोड बटन पर tap करें।

DIKSHA

### मोबाइल पर QR कोड का उपयोग कर डिजिटल विषय वस्तु कैसे प्राप्त करें ?

**DIKSHA App को लॉच करे → App की समस्त अनुमति को स्वीकार करें → उपयोगकर्ता Profile का चयन करें।**

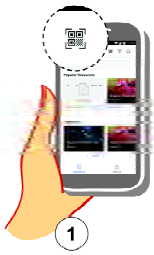


पाठ्यपुस्तक में QR Code को Scan करने के लिए मोबाइल में QR Code tap करें।

मोबाईल को QR Code पर केन्द्रित करें।

सफल Scan के पश्चात् QR Code से लिंक की गई सूची उपलब्ध होगी।

### डेस्कटॉप पर QR Code का उपयोग कर डिजिटल विषय–वस्तु तक कैसे पहुँचे ?

1 QR Code के नीचे 6 अंक का Alpha Numeric Code दिया गया है।

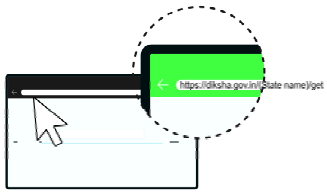

2 ब्राउज़र में diksha. gov.in/cg टाईप करें।

3 सर्च बार पर 6 डिजिट का QR CODE टाईप करें।

4 प्राप्त विषय–वस्तु की सूची से चाही गई विषय–वस्तु पर क्लिक करें।

**राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर**

निःशुल्क वितरण हेतु

7HUHUH

प्रकाशन वर्ष 2021

एस.सी.ई.आर.टी. छत्तीसगढ़, रायपुर

सहयोग– डॉ. हृदयकांत दीवान, विद्या भवन, उदयपुर
अजीम प्रेम जी फाउन्डेशन

e[; leUo;d श्री उत्पल कुमार चक्रबर्ती

fo"k; leUo;d डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

lEiknd डॉ. सी.एल. मिश्र, डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

y[kd&eMy

| हिन्दी | छत्तीसगढ़ी |
|---|---|
| डॉ. सी.एल. मिश्र, श्री बी.आर साहू, डॉ. एस.एस. त्रिपाठी, श्री राजेंद्र पांडेय, श्री गजानंद प्रसाद देवांगन, श्री दिनेश गौतम, श्रीमती उषा पवार, डॉ. (श्रीमती) रचना अजमेरा, श्री अजय गुप्ता, श्री विनय शरण सिंह डॉ. रचना दत्त, श्री कार्तिकेय शर्मा | डॉ. जीवन यदु, डॉ. पीसी लाल यादव, श्री विनय शरण सिंह, डॉ. मांघी लाल यादव, श्री मंगत रवींद्र, श्री डुमन लाल ध्रुव, श्री पाठक परदेशी, श्री गणेश यदु, श्री कुबेर साहू, श्रीमती नम्रता सिंह, श्री निशिकांत त्रिपाठी श्रीमती मैना अनंत |

vkoj.k i"B हेमंत अभयंकर

yvkmV fMtkbu रेखराज चौरागड़े

fp=kdu रेखराज चौरागड़े, राजेन्द्र सिंह ठाकुर, विद्याभवन, उदयपुर, समीर श्रीवास्तव, गिरीधारी साहू

(इस पुस्तक में जिन रचनाकारों की रचनाएँ संकलित की गई हैं, उन सबके या उनके उत्तराधिकारियों के प्रति राज्य शैक्षणिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, रायपुर अपना हार्दिक आभार प्रकट करता है।)

प्रकाशक

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर

मुद्रक

मुद्रित पुस्तकों की संख्या – ......................

# प्राक्कथन

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर को सत्र 2002–03 में छत्तीसगढ़ शासन की ओर से प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम तैयार करने तथा उन पर आधारित पाठ्यपुस्तकों की रचना करने का दात्यिव सौंपा गया था। यह निर्णय भी लिया गया था कि नवनिर्मित पाठ्यपुस्तकों का दो वर्षों तक राज्य के विभिन्न अंचलों के चयनित विद्यालयों में क्षेत्र–परीक्षण किया जाएगा और फिर विद्यार्थियों, शिक्षकों, प्रधानाध्यापकों, पालकों और विषय विशेषज्ञों के सुझावों के आधार पर उनमें संशोधन उपरांत उन्हें राज्य के समस्त विद्यालयों हेतु उपलब्ध कराया जाएगा। तदनुसार सत्र 2007–08 से कक्षा 3 और 7 की पाठ्यपुस्तकों को राज्य के समस्त विद्यालयों में अध्ययन हेतु उपलब्ध कराया जा रहा है।

इस पुस्तक को अंतिम रूप देते समय संस्था के विशेषज्ञों ने क्षेत्र के विद्यालयों में भ्रमण कर विद्यार्थियों, शिक्षकों और भाषा के अन्य विशेषज्ञों से चर्चा की और विद्यार्थियों के ज्ञान के स्तर, शिक्षकों तथा समुदाय से प्राप्त सुझावों को दृष्टिगत रखते हुए आवश्यक संशोधन, परिवर्तन किया है।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 बच्चों को गुणवत्तायुक्त शिक्षा देने पर जोर देता है। एन.सी.ई.आर.टी. ,नई दिल्ली द्वारा कक्षा 1–8 तक के बच्चों हेतु कक्षावार, विषयवार अधिगम प्रतिफलों का निर्माण कर सुझावात्मक शिक्षण प्रक्रियाओं का उल्लेख किया है। जिससे बच्चों के सर्वांगीण विकास के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकेगा। पुस्तकों में समयानुसार संशोधन तथा परिवर्धन एक निरंतर प्रक्रिया है। अतः सत्र 2018–19 हेतु पुस्तकों को समसामायिक तथा प्रासंगिक बनाया गया है। जिससे बच्चों को वांछित उपलब्धि प्राप्त करने के अधिक अवसर उपलब्ध होंगे। आशा है कि पुस्तकें शिक्षक साथियों तथा बच्चों को लक्ष्य तक पहुँचने में मददगार होंगी।

भाषा शिक्षण का मूल उद्देश्य है–सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना, व्यावहारिक व्याकरण का ज्ञान, भाषा प्रयोग तथा सृजनात्मकता का विकास करना। इस पुस्तक में इन सभी उद्देश्यों की प्राप्ति का प्रयास किया गया है। इस पुस्तक के द्वारा हमने विद्यार्थियों को साहित्य की विभिन्न विधाओं–निबंध, कहानी, कविता, पत्र, आत्मकथा, एकांकी आदि से परिचित कराया है। साहित्य की इन विधाओं का परिचय उनकी अभिरुचि को परिष्कृत करके उनको श्रेष्ठ साहित्य के अध्ययन की ओर प्रेरित करेगा, यह हमारा विश्वास है।

इस पुस्तक में जिन विचारों और मानवीय मूल्यों पर अधिक बल दिया गया है उनमें पारस्परिक सद्भाव, सामाजिक सहयोग, साहस, पर्यावरण चेतना को विशेष स्थान दिया गया है। पुस्तक को स्तरानुक्रम और रोचक बनाने में राज्य तथा राज्य के बाहर के अनेक शिक्षकों, विद्वानों, शिक्षाविदों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। पाठों के चुनाव करने में हमें डॉ. हृदयकान्त दीवान विद्याभवन, उदयपुर, प्रो. रमाकान्त अग्निहोत्री दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली एवं पाठ आधारित अभ्यास के लिए अजीम प्रेम जी फाउन्डेशन की विशेष रूप से मार्गदर्शन मिला है। परिषद् उनके बहुमूल्य सहयोग के लिए आभारी है। लेखक मण्डल के सदस्यों ने जिस कर्मठता और लगन से इस पुस्तक को अंतिम रूप प्रदान किया है, इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। पुस्तक में जिन कवियों/लेखकों की रचनाएँ संगृहीत की गई हैं, हम उनके या उनके उत्तराधिकारियों के प्रति भी अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

स्कूल शिक्षा विभाग एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छ.ग. द्वारा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में दक्षता संवर्धन हेतु अतिरिक्त पाठ्य संसाधन उपलब्ध कराने की दृष्टि से Energized Text Books एक अभिनव प्रयास है, जिसे ऑन लाईन एवं ऑफ लाईन (डाउनलोड करने के उपरांत) उपयोग किया जा सकता है। ETBs का प्रमुख उद्देश्य पाठ्यवस्तु के अतिरिक्त ऑडियो–वीडियो, एनीमेशन फॉरमेट में अधिगम सामग्री, संबंधित अभ्यास, प्रश्न एवं शिक्षकों के लिए संदर्भ सामग्री प्रदान करना है।

पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए विद्यार्थियों, शिक्षकों, शिक्षाविदों द्वारा भेजे गए सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे।

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

छत्तीसगढ़, रायपुर

# शिक्षकों से कुछ बातें

शिक्षक मित्रो, भारती 7 आपके हाथ में है। यों तो इसका प्रायोगिक संस्करण वर्ष–2005–06 में ही प्रकाशित हो गया था, किन्तु वह राज्य के कुछ सीमित विद्यालयों में ही प्रचलन में था। क्षेत्र–परीक्षण के दौरान विद्यार्थियों को आई कठिनाइयों को राज्य और राज्य के बाहर के शिक्षाविदों एवं राज्यस्तरीय पाठ्यपुस्तक समिति के सुझावों के उपरान्त उस संस्करण में आवश्यक संशोधन करके प्रस्तुत संस्करण का स्वरूप प्रदान किया गया है। फलस्वरूप वर्तमान संस्करण में आपको काफी परिवर्तन दिखाई पड़ेगा।

आप बाल मनोविज्ञान के ज्ञाता हैं। आप जानते हैं कि बच्चा सीखने की क्षमता लेकर स्कूल आता है। 11–12 वर्ष की आयु में तो यह क्षमता चरम सीमा पर रहती है। वे अधिक–से–अधिक जानना चाहते हैं। आवश्यकता यह नहीं कि उन्हें विषय से सम्बन्धित जानकारी दी जाए, आवश्यकता इस बात की है कि उनकी समझने की शक्ति का भरपूर विकास हो। बच्चे पढ़कर स्वयं समझ सकें और सुनी व पढ़ी बातों की सार्थक विवेचना कर सकें। बोलने के साथ–साथ लिखने की भी उनकी क्षमता का विकास हो। बच्चे औपचारिक एवं अनौपचारिक संदर्भ में बातचीत करना सीख जाएँ, संदर्भानुसार लिखित व मौखिक भाषा का प्रयोग कर सकें।

आपको अध्यापन करने का लंबा अनुभव है। प्रत्येक शिक्षक अपने –अपने ढंग से शिक्षण–पद्धति अपनाता है। शिक्षण की उसकी अपनी शैली होती है। फिर भी हम अपेक्षा करते हैं कि आप हमारे निम्नलिखित सुझावों पर विचार करेंगे। यदि आप इन सुझावों की उपयोगिता को समझकर इन्हें अपनाएँगे।

**1. पाठ की तैयारी–** किसी पाठ को पढ़ाना प्रारंभ करने से पूर्व यह अधिक उचित है कि पाठ की पृष्ठभूमि का निर्माण करें। इससे विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान का भी पता चल जाता है और उन्हें पाठ को समझने में सहायता भी मिल जाती है। पाठ को प्रारंभ करने के पूर्व विद्यार्थियों से पाठ से संबंधित ऐसे प्रश्न पूछिए जिनके उत्तरों से उनके पूर्व ज्ञान का भी पता चल जाए और उन्हें पाठ को समझने में भी सहायता मिले। उदाहरण के लिए 'रात का मेहमान' शीर्षक पाठ को पढ़ाने के पूर्व स्वाधीनता–संग्राम के संबंध में, क्रांतिकारी आन्दोलन के संबंध में, क्रांतिकारियों के संबंध में पूछें, चर्चा करें। 'सुभाषचंद्र बोस का पत्र' शीर्षक पाठ पढ़ाने के पूर्व नेताजी और लोकमान्य तिलक के संबंध में पूछें, चर्चा करें, बताएँ।

कविता के पाठ पढ़ाने के संबंध में यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि इसे पढ़ाने का ढंग कहानी, निबंध, चरित्र आदि गद्य–पाठों से बिल्कुल भिन्न है। कविता पढ़ाने का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को सौंदर्य–बोध और रसानुभूति कराना है। विद्यार्थी कविता पढ़कर आनंदित हों, साथ ही देश, प्रकृति, पशु–पक्षियों, उपस्थित मानकों आदि के प्रति उनके मन में सद्भावना और प्रेम पैदा हो।

**2. नवीन शब्द परिचय–** प्रायः सभी पाठों मे कुछ नवीन शब्दों का प्रयोग होता ही है। भाषा शिक्षण का यह एक उद्देश्य भी है कि प्रत्येक कक्षा मे विद्यार्थियों को कुछ नवीन शब्द अवश्य बताए जाएँ। बच्चों ने कोई नया शब्द सीख लिया है, यह हम तब कहेंगे जब वे उसका सही प्रयोग कर सकें। शब्द का अर्थ बताने के बाद अलग–अगल विद्याथियों से आप उसका प्रयोग कराएँ।

इस पुस्तक में शब्दार्थ पाठ के अंत में न देकर पुस्तक के अंत में शब्द–कोश के रूप में दिए गए हैं। इससे विद्यार्थियों को असली शब्द–कोश देखने की पद्धति ज्ञात होगी। पुस्तक के शब्द कोश की एक विशेषता यह है कि इसमें प्रत्येक वर्ण के बाद कुछ अलग शब्द दिए गए है, ये शब्द ऐसे हैं जिन्हें वे पूर्व की कक्षाओं में पढ़ चुके हैं, और उन्हें उन शब्दों का अर्थ मालूम है। इन शब्दों को क्रमानुसार लिखना

है, साथ ही उनके अर्थ भी लिखने हैं। इसके लिए रिक्त स्थान छोड़े गए है। जहाँ आवश्यकता हो, आप विद्यार्थियों का मागदर्शन करें।

**3. वाचन**–वाचन की शुद्धता पर भी आपको ध्यान देना आवश्यक होगा। सब को यदि 'शब', 'छात्र' को 'क्षात्र' और 'कर्म' को 'क्रम' पढ़ा जाए तो समझने वाला क्या समझेगा? अतः यह आवश्यक है कि विद्यार्थियों का उच्चारण शुद्ध हो। हमारा सुझाव है कि विद्यार्थियों से वाचन कराने के पूर्व, आप अनुच्छेद का आदर्श वाचन करें, फिर विद्यार्थियों से अनुकरण वाचन कराएँ। इससे विद्यार्थियों को शब्दों के सही उच्चारण करने, बलाघात, विराम–चिह्नों के अनुसार पढ़ने में सहायता मिलेगी। कौन कितनी शीघ्रता से वाचन करता है, यह जाँच करना अच्छे वाचन का लक्षण नहीं माना जा सकता। वाचन कराते समय इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखें कि वाचन करने का अवसर समान रूप से सभी विद्यार्थियों को मिले। जो विद्यार्थी वाचन में पिछड़े हैं, उन्हें अन्य विद्यार्थियों के समकक्ष ले जाने का प्रयास करें। विद्यार्थियों को पठन के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराएँ तथा पठन की पद्धतियों में आवश्यकतानुसार परिवर्तन भी करें।

**4. विषयवस्तु–** पाठ पढ़ाने के पश्चात् आपको यह देखना है कि विद्यार्थियों ने उस पाठ को कितना आत्मसात किया है। इसके लिए पुस्तक में विद्यार्थी द्वारा परस्पर पाठ पर आधारित मौखिक प्रश्न पूछने की विधि सुझाई गई है। इसके लिए विद्यार्थी एक–दूसरे समूह से प्रश्न पूछें, बाद में आप भी मौखिक प्रश्न पूछें। इससे जहाँ एक ओर विद्यार्थियों में मौखिक प्रश्न पूछने की दक्षता विकसित होगी, वहीं विषय– वस्तु को समझने में भी उन्हें सहायता मिलेगी।

**5. भाषा–** भाषा संबंधी दक्षताओं के विकास के लिए पाठ्यपुस्तक में पर्याप्त अभ्यास दिए गए हैं। आप ऐसे कुछ अन्य अभ्यास देकर उनकी दक्षताओं को विकसित कर सकते हैं।

**6. योग्यता विस्तार के क्रियाकलाप–** भाषा ज्ञान, एकाकी न रहे, इसके लिए आवश्यक है कि भाषायी योग्यता के साथ अन्य विषयों से उसका संबंध स्थापित किया जाए। इसके लिए योग्यता विस्तार शीर्षक में कुछ क्रियाकलाप सुझाए गए हैं। समय–समय पर कक्षा में वादविवाद प्रतियोगिता, अंत्याक्षरी प्रतियोगिता, चित्र निर्माण की प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, ऐतिहासिक या मनोरंजक स्थलों का भ्रमण कराके उनके संबंध मे लेख–लिखना आदि क्रियाकलापों से विद्यार्थियों के भाषायी कौशल में अभिवृद्धि हो सकती है।

**7.** इस पुस्तक में हमने शब्द–कोश के रूप में शब्दार्थ दिए हैं बीच–बीच में कुछ रिक्त स्थान छोड़े गए हैं जिनमें चौखाने में से शब्द छाँटकर उचित स्थान पर भरने हैं। विद्यार्थी इस गतिविधि को गंभीरता–पूर्वक करें– यह देखना आपका उत्तरदायित्व है। ऐसे शब्दों के अर्थ यदि उन्हें न आएँ तो आप बता सकते हैं।

आप सबको अध्यापन करने का लंबा अनुभव है। आपके इस लंबे अनुभव से विद्यार्थी निस्संदेह लाभान्वित होते हैं। हमारे बताए हुए उपर्युक्त सुझावों पर अमल करने से आपकी शिक्षण–कला में इससे कुछ लाभ होगा और यदि ऐसा हुआ तो हम अपने प्रयास को सार्थक समझेंगे।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

# विषय–सूची


| क्र. | पाठ | विधा | रचयिता | पृष्ठ |
|---|---|---|---|---|
| 1. | कुछ और भी दूँ | कविता | श्री रामावतार त्यागी | 1–3 |
| 2. | प्रेरणा के पुष्प | प्रेरक प्रसंग | लेखक –मंडल | 4–7 |
| 3. | विद्रोही शक्तिसिंह | कहानी | श्री विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक' | 8–13 |
| 4. | मौसी | कहानी | श्री भीष्म साहनी | 14–19 |
| 5. | सरद रितु आ गे | कविता | पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' | 20–22 |
| 6. | सदाचार का तावीज़ | व्यंग्य | श्री हरिशंकर परसाई | 23–28 |
| 7. | रात का मेहमान | चरित्र | संकलित | 29–34 |
| 8. | भिखारिन | कहानी | गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर | 35–42 |
| 9. | त्याग मूर्ति ठाकुर प्यारेलाल | जीवनी | लेखक–मंडल | 43–47 |
| 10. | सितारों से आगे | चरित्र | लेखक–मंडल | 48–52 |
| 11. | कोई नहीं पराया | कविता | श्री गोपालदास 'नीरज' | 53–56 |
| 12. | प्रेरणा स्रोत मेरी माँ | प्रेरक प्रसंग | लेखक–मंडल | 57–61 |
| 13. | सुभाषचन्द्र बोस का पत्र | पत्र | नेताजी सुभाष चन्द्र बोस | 62–66 |
| 14. | भारत बन जाही नंदनवन | कविता | श्री कोदूराम 'दलित' | 67–69 |
| 15. | शतरंज में मात | एकांकी | श्रीयुत् श्रीप्रसाद | 70–78 |
| 16. | काव्य–माधुरी | कविता | सूर,तुलसी,मीरा,रसखान, धरमदास | 79–82 |
| 17. | वर्षा बहार | कविता | श्री मुकुटधर पाण्डेय | 83–85 |
| 18. | मितानी | लोककथा | लेखक–मंडल | 86–89 |
| 19. | शहीद बकरी | कहानी | श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय | 90–93 |
| 20. | लक्ष्य–बेध | निबंध | श्री रामनाथ 'सुमन' | 94–98 |
| 21. | सुवागीत | निबंध | लेखक–मंडल | 99–103 |
| 22. | सुब्रह्मण्य भारती | चरित्र | लेखक–मंडल | 104–110 |
| 23. | राजीव गाँधी | संकलित | डॉ. विद्यावती चन्द्राकर | 111–112 |
| | शब्दकोश | | | 113–122 |


4Y8GS8

**नोट–** क्रमांक – 5, 9, 14, 18, 21 छत्तीसगढ़ी पाठ है।

# सीखने के प्रतिफल

## सीखने–सिखाने की प्रक्रिया

**सभी शिक्षार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम बच्चों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए ताकि उन्हें –**

- अपनी भाषा में बातचीत–चर्चा करने के अवसर हों।
- प्रयोग की जाने वाली भाषा की बारीकियों पर चर्चा के अवसर हों।
- समूह में कार्य करने और एक–दूसरे के कार्यो पर चर्चा करने, राय लेने–देने, प्रश्न करने की स्वतंत्रता हो।
- हिंदी के साथ–साथ अपनी भाषा की सामग्री पढ़ने–लिखने (ब्रेल/सांकेतिक रूप में भी) और उन पर बातचीत की आजादी हो।
- अपने परिवेश, समय और समाज से संबंधित रचनाओं को पढ़ने और उन पर चर्चा करने के अवसर हों।
- अपनी भाषा गढ़ते हुए लिखने संबंधी गतिविधियाँ हों; जैसे–शब्द खेल, अनौपचारिक पत्र, तुकबंदियाँ, पहेलियाँ, संस्मरण आदि।
- सक्रिय और जागरूक बनाने वाली रचनाएँ, अखबार, पत्रिकाएँ, फिल्म और अन्य ऑडियो–वीडियो सामग्री को देखने, सुनने, पढ़ने और लिखकर अभिव्यक्त करने की गतिविधियाँ हों।
- कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को विकसित करने वाली गतिविधियों ; जैसे–अभिनय, रोल–प्ले, कविता, पाठ, सृजनात्मक लेखन, विभिन्न स्थितियों में संवाद आदि के आयोजन हों और उनकी तैयारी से संबंधित स्क्रिप्ट लेखन और रिपोर्ट लेखन के अवसर हों।
- विद्यालय/विभाग/कक्षा की पत्रिका/भित्ति पत्रिका निकालने के लिए प्रोत्साहन हो।

## सीखने की संप्राप्ति (Learning Outcomes)

**बच्चे–**

LH701. विविध प्रकार की रचनाओं को पढ़कर समूह में चर्चा करते हैं।

LH702. किसी सामग्री को पढ़ते हुए लेखक द्वारा रचना के परिप्रेक्ष्य में कहे गए विचार को समझकर और अपने अनुभवों के साथ उसकी संगति, सहमति या असहमति के संदर्भ में अपने विचार अभिव्यक्त करते हैं।

LH703. किसी चित्र या दृश्य को देखने के अनुभव को अपने ढंग से मौखिक,/सांकेतिक भाषा में व्यक्त करते हैं।

LH704. पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते परिचर्चा करते हैं।

LH705. अपने परिवेश में मौजूद लोककथाओं और लोकगीतो के बारे में चर्चा करते हैं और उनकी सराहना करते हैं।

LH706. विविध कलाओं जैसे–हस्तकला, वास्तुकला, खेती–बाड़ी, नृत्यकला और इनमें प्रयोग होने वाली भाषा के बारे में जिज्ञासा व्यक्त करते है, उन्हें समझने का प्रयास करते हैं।

LH707. विभिन्न संवेदनशील मुद्दों/विषयों; जैसे–जाति, धर्म, रंग, जेंडर, रीति–रिवाजों के बारे में मौखिक रूप में अपनी तार्किक समझ अभिव्यक्त करते हैं।

LH708. सरसरी तौर पर किसी पाठ्यवस्तु को पढ़कर उसकी उपयोगिता के बारे में बताते हैं।

LH709. किसी पाठ्यवस्तु की बारीकी से जाँच करते हुए उसमें किसी विशेष बिंदु को खोजते हैं।

LH710. पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं।

LH711. विभिन्न पठन सामग्रियों में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों के अर्थ समझते हुए उनकी सराहना करते हैं।

LH712. कहानी, कविता आदि पढ़कर लेखन के विविध तरीकों और शैलियों को पहचानते हैं;

| | |
|---|---|
| | जैसे–वर्णनात्मक, विवरणात्मक, भावात्मक, प्रकृति चित्रण आदि। |
| | LH713. किसी पाठ्यवस्तु को पढ़ने के दौरान समझने के लिए जरूरत पड़ने पर अपने किसी सहपाठी या शिक्षक की मदद लेकर उपयुक्त संदर्भ सामग्री; जैसे– शब्दकोश, मानचित्र, इंटरनेट या अन्य पुस्तकों की मदद लेते हैं। |
| | LH714. विविध कलाओं; जैसे– हस्तकला, वास्तुकला, खेती–बाड़ी, नृत्यकला आदि से जुड़ी सामग्री में प्रयुक्त भाषा के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते हुए उसकी सराहना करते हैं। |
| | LH715. भाषा की बारीकियों/व्यवस्था तथा नए शब्दों का प्रयोग करते हैं; जैसे– किसी कविता में प्रयुक्त शब्द विशेष, पदबंध का प्रयोग–आप बढ़ते हैं तो बढ़ते ही चले जाते हैं या जल–रेल जैसे प्रयोग। |
| | LH716. विभिन्न अवसरों/संदर्भो में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से लिखते हैं; जैसे – अपने गाँव की चौपाल की बातचीत या अपने मोहल्ले के लिए तरह तरह के कार्य करने वालों की बातचीत। |
| | LH717. हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (समाचार, पत्र–पत्रिका, कहानी, जानकारीपरक सामग्री, इंटरनेट प्रकाशित होने वाली सामग्री आदि) को समझकर पढ़ते हैं और उसमें अपनी पसंद–नापसंद के पक्ष में लिखित या ब्रेल भाषा में अपने तर्क रखते हैं। |
| | LH718. अपने अनुभवों को अपनी भाषा शैली में लिखते है। |
| | LH719. विभिन्न विषयों और उद्देश्यों के लिए लिखते समय उपयुक्त शब्दों, वाक्य संरचनाओं, मुहावरों, लोकोक्तियों, विराम–चिह्नों एवं अन्य व्याकरणिक इकाइयों (जैसे– काल, क्रिया विशेषण, शब्द–युग्म आदि का प्रयोग करते हैं। |
| | LH720. विभिन्न संवेदनशील मुद्दों/विषयों; जैसे– जाति, धर्म, रंग, जेंडर, रीति–रिवाजों के बारे में लिखित रूप से तार्किक समझ अभिव्यक्त करते हैं। |
| | LH721. भित्ति पत्रिका/पत्रिका आदि के लिए तरह–तरह की सामग्री जुटाते हैं, लिखते हैं और उसका संपादन करते है। |

# विषय–सूची


| अध्याय | पाठ का नाम | LOs |
|---|---|---|
| 1. | कुछ और भी | LH701,LH702,LH709,LH711,LH713,LH716 |
| 2. | प्रेरणा के पुष्प | LH701,LH704,LH710,LH711,LH718,LH719 |
| 3. | विद्रोही शक्तिसिंह | LH701,LH702,LH709,LH711,LH712,LH720 |
| 4. | मौसी | LH701,LH702,LH704,LH710,LH712,LH721 |
| 5. | सरद रितु आगे | LH703,LH704,LH705,LH711,LH712,LH713 |
| 6. | सदाचार का तावीज़ | LH701,LH708,LH710,LH720 |
| 7. | रात का मेहमान | LH701,LH702,LH703,LH707,LH709,LH710,LH712, LH714 |
| 8. | भिखारिन | LH701,LH702,LH704,LH707,LH710,LH712,LH716 |
| 9. | त्याग मूर्ति ठाकुर प्यारेलाल | LH701,LH704,LH714,LH718,LH720 |
| 10. | सितारों से आगे | LH702,LH714,LH718,LH722 |
| 11. | कोई नहीं पराया | LH701,LH702,LH703,LH707,LH713 |
| 12. | प्रेरणा स्रोत मेरी माँ | LH704,LH710,LH711,LH718,LH719,LH720 |
| 13. | सुभाषचन्द्र बोस का पत्र | LH702,LH711,LH714,LH716,LH718,LH719 |
| 14. | भारत बन जाही नंदनवन | LH705,LH711,LH713,LH716 |
| 15. | शतरंज में मात | LH701,LH703,LH704,LH709,LH710 |
| 16. | काव्य–माधुरी | LH702,LH713,LH716 |
| 17. | वर्षा बहार | LH702,LH703,LH704,LH713 |
| 18. | मितानी | LH701,LH705,LH706,LH707,LH78,LH710,LH713, LH719, LH721 |
| 19. | शहीद बकरी | LH701,LH707,LH710,LH712,LH713,LH720 |
| 20. | लक्ष्य–बेध | LH701,LH704,LH710,LH711,LH712,LH713 |
| 21. | सुवागीत | LH701,LH704,LH705,LH706,LH721 |
| 22. | सुब्रह्मण्य भारती | LH702,LH704,LH718,LH719 |
| 23. | राजीव गाँधी | LH702,LH704,LH717,LH718,LH719,LH721 |

# उदाहराणार्थ रूब्रिक्स

| Chapter | Sub Topic | Level 1 | Level 2 | Level 3 | Level 4 |
|---|---|---|---|---|---|
| **After the lesson, students will be able to :**<br>पाठ के बाद, विद्यार्थी कर सकेंगेः– | | **remember, recall, list, locate, label, recite**<br>याद करना, स्मरण करना, सूचीबद्ध करना, खोजना लेबल करना, वर्णन करना | **understand, explain, illustrate, summaries, match**<br>समझना, व्याख्या करना, संक्षेप में लिखना, उदाहरण देना, मेल करना | **apply, organize, use, solve, prove, draw**<br>प्रयोग करना, व्यवस्थित करना, उपयोग करना, हल करना, साबित करना, चित्रण करना | **evaluate, hypothesize, analyse, compare, create, categories**<br>मूल्यांकन करना, परिकल्पना करना, विश्लेषण करना, तुलना करना, सृजन करना, वर्गीकरण करना |
| **पाठ–1**<br>**कुछ और भी दूँ** | पठन, सस्वर वाचन, शब्दार्थ पर्यायवाची, अलंकार व्याख्या, प्रश्नोत्तर | • कविता कंठस्थ करेंगे।<br>• शब्दार्थ<br>• पर्यायवाची | • अलंकार<br>• व्याख्या<br>• देशप्रेम<br>• चित्रण(कल्पना) | • देश प्रेम की भावना को लागू करना।<br>• साधारण वाक्यों को कविता के पंक्तियों में व्यवस्थित कर पायेंगे। | • देशभक्ति की कविता का सृजन कर पायेंगे।<br>• कुछ शब्दों को देने पर कविता सृजन करना। |

पाठ
1

# कुछ और भी दूँ

&Jh jkekorkj R;kxh

**jk"Vh; Hkkouk l vkr&çkr ;g dfork cPpk d dkey eu e Lon'k çe dh Hkkouk dk lgt gh tkxr djrh gA dfo n'k d fy, loLo U;kNkoj dju dk çLrr g] ij bru l gh mudk eu lr"V ugh gkrkA dfo&eu e gj iy jk"V d fy, dN vkj Hkh vfir dju dh mRdV pkgr gA Lo; dk vfdpu ekur g, Hkh dfo viu gj Hkko] pkgr vkj viuh gj p"Vk dk jk"V ekrk d pj.kk e lefir dju dk –r ldfYir g vkj n'kokfl;k dk Hkh ifjr djr gA**

eu lefir] ru lefir]
vkj ;g thou lefir]
pkgrk g n'k dh /kjrh] r> dN vkj Hkh nA

ek] rEgkjk _.k cgr g] e vfdpu]
fdUr bruk dj jgk] fQj Hkh fuonu
Fkky e ykÅ lt kdj Hkky tc]
dj n;k Lohdkj yuk og lei.k]
xku vfir] ik.k vfir]
jDr dk d.k&d.k lefir
pkgrk g n'k dh /kjrh] r> dN vkj Hkh nA

Hkkt nk ryokj dk ykvk u njh]
ck/k nk dl dj] dej ij <ky ejh]
Hkky ij ey nk pj.k dh /ky FkkMh]
'kh'k ij vk'kh"k dh Nk;k ?kujh]

Lolu vfir] i'u vfir]
vk; dk {k.k&{k.k lefir]
pkgrk g n'k dh /kjrh] r> dN vkj Hkh nA

rkMrk g ekg dk c/ku] {kek nk]

xko ej] }kj&?kj&vkxu {kek nk]

vkt lh/k gkFk e ryokj n nk]

vkj ck; gkFk e /ot dk Fkek nkA

; leu yk] ;g peu yk]

uhM dk r.k&r.k lefir]

pkgrk g n'k dh /kjrh] r> dN vkj Hkh nA

## vH;kl

### ikBl s

1- dfo n'k d fy, viuk loLo U;kNkoj D;k djuk pkgr g \

2- ek d fdl _.k dh ckr dfo dgr g \

3- dN vkj nu dh pkgr dfo dk D;k g \

4- dfo Lo; dk vfdpu D;k dg jg g \

5- D;k Lohdkj dju dk vkxg dfo jk"V ek l dj jg g \

6- pkgrk g n'k dh /kjrh] r> dN vkj Hkh n& ifä;k d ek/;e l dfo fdu Hkkok dk 0;ä djuk pkgr g\

### ikBl svkas

1- Lolu vfir] ç'u vfir vk; dk {k.k&{k.k lefir &

bl dfork dk i<u d ckn vkidk D;k egl l gkrk g\ ;g dfork ikB dh vU; dforkvk tlh g ;k ml l vyx gA viu 'kCnk e fyf[k,A

2- bl dfork e dfo jk"V d çfr viuk lc dN vfir dju dh ckr djrk gA D;k vkidk yxrk g fd gekj vkl&ikl d ykx bld fy, r;kj g \ fyf[k,

3- viuh ek vkj jk"V ekrk e vkidk D;k Qd yxrk g \ vxj ge lc viuh ek d lEeku d çfr mÙkjnk;h g] rk LokHkkfod :i l jk"V ekrk d çfr Hkh ge lefir gkxA fopkj dj fyf[k,A

4- jk"V d çfr gekj lei.k e vkidk D;k ck/kd yxrh g \ lkfFk;k d lkFk fopkj dj viuh le> dk fyf[k,A

4YR8VI

## Hkkxkl s

4Z14X6

1- bl dforke cgr l rRle 'kCnk dk ç;kx gvk g tl & _.k] vfdpu] Hkky] vi.k] pj.k] /ot] leu] uhM] r.k vkfn bu 'kCnk dk NrhlX<h Hkk"kk e D;k ç;kx çpfyr g mUg [kkt dj okD; e ç;kx dhft ,A

2- fuEufyf[kr 'kCnk d lgh :i dk NkV dj fyf[k,&

U;kNkoj@U;kNkoj]vk'kh'k@vk'kh"k] vfdpu@vdhUpu] lohdkj@Lohdkj] LokHkkfod@LoHkkfod] vkl;@vk'k;] vuijkl@vuçkl] —rK@ØrX;A

3- iLrr dforke rd d :i e r] u vkj j o.k dk ckj&ckj ngjko n[ku dk feyrk gA tgk o.kk dh ckj&ckj vkofÙk gkrh g] mlI ge vuçkl vydkj dgr gA

tl&  xku vfir] çk.k vfirA

jä dk d.k& d.k lefirA

ifä e ^r* o.k dk ngjko n[kk tk ldrk gA ikB e ,l vU; ifä;k dk << tgk vuçkl vydkj dk ç;kx gvk gkA

## ;kX;rk foLrkj

4Z9ZYT

1- ^^jk"V d çfr ukxfjdk d D;k drO; g** bl fo"k; ij d{kk e fopkj dj e[; fcUnvk dk fy[kdj d{kk e çnf'kr dhft ,A

2- vk'kk dk nhi&¼fnudj½] lkj tgk l vPNk&¼bdcky½] vkfn n'kHkfä i.k dforkvk dk [kkt dj if<,A

# पाठ 2

# प्रेरणा के पुष्प

& y[kd&e.My

**eu"; gku dk lgt ck/k ;g g fd ge ,l dk; dj ftl vf/kd l vf/kd ykxk dk l[k vkj vkun dh vuHkfr gkA çLrr ikB d n"Vkr bUgh ekuoh; HkkokuHkfr;k dk lgt #i e 0;ä djr gA ctx vxyh ih<h d fy, Qynkj o{kk d cht ckr g] ogh ,d ctx L=h vtku jkgk e lnj i"ik] Nk;knkj o{kk d cht bl mEehn e fc[kjrh pyrh g fd og jg u jg vku okyh ihf<;k dk bu i"ik vkj o{kk d mxu l lx/k vkj 'khryrk feyxhA foodkun vkj ctkfeu Ýdfyu d thoukuHko d çlx ekuo thou dh blh lkFkdrk dk li.krk d lkFk çfjr vkj vk'kkfUor djr gA**

¼ 1 ½

,d c<k vkneh] ftld cky lQn gk x, Fk] tehu [kkn jgk FkkA ,d uktoku u ml ctx dk ifjJe djr n[kdj iNk] Þckck] ;g D;k dj jg gk\Þ

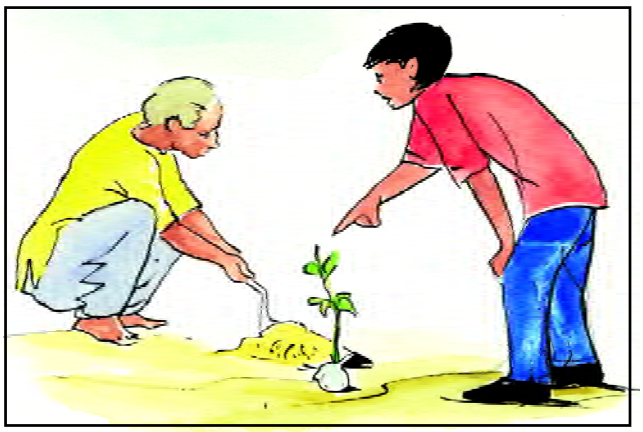

Þvke dk ik/kk jki jgk g&Þ c< u dgkA

Þbl me e\ bld Qy dc [kkvkx] ckck\Þ

Þe Qy ugh [kk ldrk] rk D;k gvk cV] re rk [kk ldkx u\ ej&rEgkj ukrh&ikr rk [kk,x\ n[kk] og vejkb ej nknk u yxkb Fkh] rk mld Qy eu [kk,A e ;g vke dk ik/kk yxk jgk gA bld Qy ej ukrh&ikr [kk,xAÞ

¼ 2 ½

,d o) efgyk jyxkMh l lQj dj jgh FkhA f[kMdh d ikl cBdj chp&chp e] viuh eVBh l dN ckgj Qdrh tk jgh FkhA ,d lg;k=h u iNk] Þ;g vki D;k Qd jgh g \Þ ml

efgyk u tokc fn;k] Þ; lnj Qyk vkj Qyk d cht gA e bUg bl mEehn l Qd jgh g fd bue l dN Hkh vxj tM idM y rk ykxk dk bul dN Qk;nk gkxkA irk ugh] e bl jkLr l fQj xt : ;k u xt :] blfy, D;k u e bl volj dk mi;kx dj y\Þ

¼ 3 ½

vefjdk d oKkfud] ctkfeu Ýdfyu] d ckj e ,d vudj.kh; ckr luh tkrh gA mud ikl ,d xjhc fo|kFkh enn ekxu d fy, vk;kA ml mUgku chl Mkyj fn,A o rk ;g NkVh&lh jde ndj Hky x,] yfdu og fo|kFkh bl midkj dk u HkykA tc mld fnu fQj] rc og chl Mkyj ykVku d fy, Ýdfyu d ikl vk;kA Ýdfyu u dgk] Þe> ;kn rk ugh fd eu ;g jde vkidk dc nh FkhA [kj] vki bl viu gh ikl jf[k, vkj tc vkid ikl dkb ,lk gh t:jren vk, rk ml ;g n nhft,AÞ ml 0;fDr u ,lk gh fd;kA

dgr g] vkt Hkh og jde vefjdk e t:jrenk d gkFkk e ?ke jgh gA

¼ 4 ½

Lokeh foodkun cyj eB d fuek.k&dk; vkj f'k{kknku d dk; e cgr 0;Lr FkA fujUrj Hkkx&nkM vkj dfBu Je dju d dkj.k o vLoLFk gk x, FkA fpfdRldk u mUg ok;&ifjoru rFkk foJke dju ij tkj fn;kA foo'k gkdj o nkftfyx py x,A ogk mud LokLF; e /khj&/khj l/kkj gk jgk FkkA rHkh mUg lekpkj feyk fd dkydkrk e lyx 0;kid :i l Qy x;k gA ifrfnu ldMk ykxk dh eR; gk jgh gA ;g n[kn lekpkj ludj D;k egkik.k foodkun fLFkj jg ldr Fk\ o rjUr dkydkrk ykV vk, vkj mlh fnu mUgku lyx jkx e vko';d lko/kkuh cjru dk tulk/kkj.k dk min'k fn;kA viu lkFk reke lU;kfl;k vkj cãpkfj;k dk ydj o jkfx;k dh lok e tV x,A dkydkrk e Hk; rFkk vkrd dk jkT; Qyk FkkA L=h&i#"k viu cPpk dk ydj ik.k cpku d mnn'; l Hkkx tk jg FkA fcfV'k ljdkj u lyx jkx d cpko d lc/k e dBkj fu;e tkjh dj fn;k FkkA ml l ykxk e Hkkjh vlrk"k FkkA bl ifjfLFkfr dk lkeuk dju dh Hkkjh pukrh Lokeh th d lkeu FkhA bl dk; e fdru /ku dh vko';drk gkxh vkj og dgk l vk,xk] bl ckr dh fpUrk djr g, fdlh x#Hkkb u Lokeh th l i'u fd;k] ÞLOkkeh th] #i; dgk l vk,x\Þ Lokeh th u rRdky mÙkj fn;k] Þ;fn vko';drk gb rk eB d fy, [kjhnh xb tehu cp MkyxA gtkjk

L=h&i#"k gekjh vk[kk d lkeu vlguh; n‰[k lgu djx vkj ge eB e jgx \ ge lU;klh g] vko';drk gkxh rk fQj o{kk d uhp jgx] fHk{kk }kjk ikIr vUu&oL= gekj fy, i;klr gkxkAÞ

Lokeh th u ,d cMh&lh tehu fdjk; ij yh vkj ogk ij dfV;k fuek.k dh xbA tkfr o o.k&fopkj NkM] vlgk; lyx d ejhtk dk ogk ij ykdj mRlkgh dk;dÙkkx.k lok&dk; e jr g,A Lokeh th Lo; Hkh mifLFkr jgdj lok&dk; dju yxA 'kgj dh xnxh lkQ dju e] vk"kf/k;k dk forj.k dju e] nfjn ukjk;.kk dh vfr mRlkg l lok dju e] lHkh dk;dÙkk lPp eu l yx x,A ^;= tho r= f'ko* e= d _f"k foodkun eR; dh dN Hkh ijokg u djr g, Lon'kokfl;k dk f'k{kk nu yx fd fdl idkj uj dk ukjk;.k eku lok djuk ;kX; gA ftu Mke&p.Mky] ekph vkfn l lfn;k l rFkkdfFkr Åph tkfr d vfHkekuh tu ?k.kk djr Fk] Lokeh th u mUgh dk ^ej Hkkb^ dgdj mudk vkfyxu fd;kA

## fVIi.kh

Mke & Hkkjro"k dh ,d vulfpr tkfrA dHkh ; ykx gh 'e'kku e fprk tyku dk dke djr FkA

## vH;kl

### ikBl s

1- ctx dk ifjJe djr n[k dj mul uktoku d D;k loky Fk \
2- jy l lQj djrh ctx efgyk eëh l ckgj D;k fc[kj jgh Fkh vkj D;k \
3- vejhdh oKkfud Ýdfyu ctkfeu d ckj e vudj.kh; ckr D;k luh tkrh g \
4- egkçk.k foodkuUn D;k vfLFkj fpÙk gk x, \
5- foodkuUn u lU;klh thou d ckj e D;k crk;k \
6- viu dke l foodkuUn Lon'kokfl;k dk D;k f'k{kk nu yx \
7- lyx ihfMrk dh lgk;rk d fy, foodkuUn u D;k&D;k fd;k \

### ikBl svkas

1- vkid vkl&ikl ,l ykx gkx tk nljk dh lok d fy, ckj&ckj ç;kl djr g ,l ykxk d ckj e irk dj fyf[k,A
2- ikB dk 'kh"kd ^çj.kk d i"i* j[kk x;k g \ bl ikB dk i<u l vkidk D;k vuHkfr gb nl ifä;k e fy[ku dk ç;kl dhft,A

3- ctx 0;fä viuh vku okyh ih<h d çfr fdru lonu'khy gkr g] ;g ikB l irk pyrk gA vkid vkl&ikl d ctx D;k pkgr g \ bl ij mul ckr dhft , vkj ckrphr d v'k l{ki e fyf[k,A

4- fdlh ctx 0;fä d çfr ge ub ih<h d ykxk dk D;k dr0; gkuk pkfg, \ fe=k l bl fo"k; ij ckrphr dj viu fopkj jf[k,A

5- ikB e ^tkfr lpd* 'kCn dk mYy[k gA D;k vkidk yxrk g fd dgh l Hkh] ,l ç;kx ekuoh; lekurk ;k fdlh lH; lekt dk ck/k djkr gA vkil e fopkj dj fyf[k,A

## Hkk"kk l s

512N4R

1- ikB e ^lg;k=h^ 'kCn dk vFk g lkFk&lkFk ;k=k djuokyk] bl 'kCn dh jpuk ^;k=h* e ^lg* 'kCn dk tkMdj dh xb g blh rjg l vki ^lg* 'kCn dk tkMdj dN vU; 'kCnk dh jpuk dhft ,A

2- ikB e lQn cky] o) efgyk] lnj Qy] xjhc fo|kFkh] vudj.kh; 0;fä] vlguh; n%[k] vlgk; ejht vkfn 'kCn] fo'k"k.k vkj fo'k"; d mnkgj.k g ble l fo'k"; vkj fo'k"k.k dk igpku dj fyf[k, vkj ikB e ç;ä g, ,l gh vU; 'kCn ç;kx dk [kkt dj fyf[k,A

3- ikB e bl rjg d ç;kx vki n[k ldr g **ftud** cky] **ml** ctx] **bl** me] **bl** mEehn] **bl** jkLr] **;g** NkVh jde] j[kkfdr 'kCnk dk ge lkoukfed fo'k"k.k dgr g] vFkkr ;gk ij louke 'kCn lKk ;k louke d ldr ;k fun'k d :i e vk; g] vr% lkoukfed fo'k"k.k d mnkgj.k gA ikB l bl çdkj d vkj Hkh lkoukfed fo'k"k.kk d mnkgj.k << dj fyf[k,A

## ;kX;rk foLrkj

51BJ6E

1- ctxk dk fdl çdkj dh mi{kk vkj vieku] vkt gekj lekt e lguk iMrk g vkj D;k \ bl fo"k; ij fo|ky; Lrj ij ,d fopkj xk"Bh dk vk;ktu dhft ,A

2- foodkuUn d thou vkj mud dk;k d ckj e iLrdky; l mudh thouh vFkok thou d dN çlxk dk [kkt dj if<, vkj lkfFk;k d lkFk ppk dhft ,A

5CPSLY

# पाठ 3

# विद्रोही शक्तिसिंह

&Jh fo'oEHkj ukFk 'kek ^dkf'kd*

nk ,frgkfld ik=k d ek/;e l dgkuhdkj u Hkkb&Hkkb d lc/kk d çe] çfr'kk/k] vUrnoU}] Xykfu Hkko vkj Hkkoukvk d vkox dk d'kyrk d lkFk fpf=r fd;k gA ,d NkV l eí ij egkjk.kk çrki vkj 'kfä flg e erHkn gkrk gA vieku l vkgr vkj çfr'kk/k Hkko l Hkjk gvk 'kfä flg Øk/k d vkox e fpÙkkM NkMdj vkxjk vdcj d 'kj.k e pyk tkrk gA mld eu e egkjk.kk çrki l cnyk yu dh cyorh vkdk{kk gA exy vkj jktirk d e/; ;) e 'kfä] vdcj dh vkj l yM jgk gkrk gA jktirk dh ijkt; d e/; tc egkjk.kk lukuk;dk d ncko e ;) d enku l ld'ky fudy tku dk ck/; fd; tkr g rk 'kfä flg bl j.kuhfr dk rkM yrk g vkj cnyk yu dk mi;ä volj le> viu ?kkM dk egkjk.kk d ihN yxk nrk gA jkLr e ohj jktir ;k)kvk d ekrHkfe ij cfynku vkj mRlx n[kdj 'kfä flg dk fglk Hkko Xykfu l Hkj mBrk gA egkjk.kk d le{k ureLrd gk cPpk dh rjg QV&QV dj jkrk gvk ohj 'kfä] Hkkb d pj.kk e viuk 'kh'k p<kdj çk;f'pÙk dju dk vkn'k ekxrk gA bl dgkuh dk ,d vkj lcy i{k g 'kfä flg dh iRuh dh Hkkoukvk dh thrA

Þeku tkvk] rEgkj mi;Dr ;g dk; u gkxkAÞ

Þpi jgk] re D;k tkuk\Þ

Þble ohjrk ugh] vU;k; gAÞ

Þcgr fnuk dh /k/kdrh gb Tokyk vkt 'kkUr gkxh&Þ 'kfDrflg u ,d yEch lkl Qdh vkj viuh iRuh dh vkj n[kkA

ÞNh&Nh] dyd yxxk] vijk/k gkxkAÞ

Þvieku dk cnyk yxkA irki d xo dk feVVh e feyk nxkA vkt e fot;h gkÅxk&Þ cMh n<rk l dgdj 'kfDrflg u f'kfoj d }kj ij l n[kkA exy&luk d prj flikgh viu&viu ?kkMk dh ijh{kk y jg FkA /ky mM jgh FkhA cM lkgl l lc ,d&nlj e mRlkg Hkj jg FkA

Þfu'p; gh egkjk.kk dh gkj gkxhA ckbl gtkj jktirk dk fnu&Hkj e ej }kjk cykb xb exy luk dkVdj l[k MBy dh Hkkfr fxjk nxhÞ & lkgl l 'kfDrflg u dgkA

ÞHkkb ij Øk/k djd n'knkgh cukx ----------Þ dgr&dgr ml jktir ckyk dh vk[kk l fpuxkfj;k fudyu yxhA

'kfDrflg vijk/kh dh rjg fopkj dju yxkA tyu dk mUekn ul&ul e nkM jgk FkkA irki d ik.k ydj gh NkMxk] ,lh ifrKk mlu dh FkhA uknku fny fdlh rjg u ekuxkA ml dku le>k ldrk Fkk \

j.kHkjh cthA dkykgy epkA exy lfud enku e ,df=r gku yxA iÙkk&iÙkk [kM[kMk mBkA

fctyh dh Hkkfr ryokj ped jgh FkhA ml fnu lce mRlkg FkkA ;n/k d fy, Hktk, QMdu yxhA

'kfDrflg u ?kkM dh yxke idMdj dgk& Þvkt vfre fu.k; g] e:xk ;k ekjdj gh ykVxkAÞ

f'kfoj d }kj ij [kMh ekfguh viu Hkfo"; dh dYiuk dj jgh FkhA mlu cMh xHkhjrk l dgk & Þb'oj vkidk lncf) n] ;gh ikFkuk gAÞ

,d egÙoi.k vfHk;ku d fo/ol dh r;kjh FkhA idfr dki mBhA ?kkM vkj gkfFk;k d phRdkj l vkdk'k FkjFkjk mBkA cjlkrh gok d FkiMk l txyk d o{k j.kukn djr g, >e jg FkA i'k&i{kh Hk; l =Lr gkdj vkJ; <<u yxA cMk ifrdy vkj fodV le; FkkA

ml Hk;kud enku e jktirluk ekpkcnh dj jgh FkhA gYnh?kkVh dh Åph pkfV;k ij Hkhy ykx /ku"k p<k, mUeÙk [kM FkA

Þegkjk.kk dh t; !Þ 'kyekyk l Vdjkrh gb /ofu exy&lukvk e ?kl iMhA ;) vkjHk gvkA Hkjoh j.kpMh u iy; dk jkx NMkA eu"; fgld trvk dh Hkkfr] viu&viu y{; ij VV iMA lfudk d fuMj ?kkM gok e mMu yxA

ryokj pedu yxhA iork d f'k[kjk ij l fo"ky ck.k exyluk ij cjlu yxA l[kh gYnh?kkVh e jDr dh /kkjk cgu yxhA

egkjk.kk vkx c<A 'k=luk dk 0;g VVdj frrj&fcrj gk x;kA nkuk vkj d lfud dV&dVdj fxju yxA n[kr&n[kr yk'kk d <j yx x,A

Hkj cknyk dk ydj vk/kh vkbA lyhe d lfudk dk cpu dk volj feykA exyk dh luk e u;k mRlkg Hkj x;kA rki d xky mFky&iFky dju yxA /kk;&/kk; djrh cndk l fudyh gb xkfy;k nkM jgh FkhA vkg ! thou fdruk lLrk gk x;k FkkA

egkjk.kk 'k=luk e flg dh Hkkfr mUeÙk gkdj ?ke jg FkA tku dh ckth yxh FkhA

o lc rjQ l f?kj Fk( geyk&ij&geyk gk jgk FkkA jk.kk ldV e iM FkA cpuk dfBu FkkA lkr ckj ?kk;y gku ij Hkh ij m[kM ugh] eokM dk lkHkkX; bruk ncy ugh FkkA

ekuflg dh de=.kk lR; fln/k gkuokyh FkhA ,l vkifÙkdky e og ohj ljnkj luk lfgr ogk dl vk;k \ vk'p; l egkjk.kk u mldh vkj n[kk vkj eUuk th u mud eLrd l eokM d jktfpgu dk mrkjdj Lo; /kkj.k dj fy;kA jk.kk u vk'p; vkj Økèk l iNk&Þvj! ;g D;k\Þ

Þvkt eju d le; ,d ckj jktfpgu /kkj.k dju dh cMh bPNk gb g&Þ gldj eUuk th u dgkA jk.kk u mldh mUekni.k glh e vVy /k; n[kkA

exyk dh luk e l 'kfDrflg bl pkrjh dk le> x;kA mlu n[kk] ?kk;y irkj

j.k{k= l thr&tkxr fudy py tk jg g vkj ohj eUuk th dk irkj le>dj exy mèkj gh VV iM gA mlh le; nk exy ljnkjk d lkFk egkjk.kk d ihN&ihN 'kfDrflg u viuk ?kkMk NkM fn;kA

[ky lekIr gk jgk FkkA Lor=rk dh cfy&onh ij lUukVk Nk x;k FkkA tUeHkfe d pj.kk ij ej feVuoky ohjk u viu dk mRlx dj fn;k FkkA ckbl gtkj jktir ohjk e l doy vkB gtkj cp x, FkA

fonkgh 'kfDrflg pipkj lkprk gvk viu ?kkM ij p<k pyk tk jgk FkkA ekx e 'ko dV iM Fk & dgh Hktk 'kjhj l vyx iMh Fkh( dgh /kM dVk gvk Fkk( dgh [ku l yFkiFk eLrd Hkfe ij fxjk gvk FkkA dlk ifjoru g ! nk ?kfM;k e glr&ckyr vkj yMr g, thfor iry dgk py x,\ vkg! ,l fujhg thou ij bruk xo !

'kfDrflg dh vk[k Xykfu l NyNyk xbA Þ; lc Hkh jktir FkA ejh gh tkfr d [ku FkA gk; j e ! ejk ifr'kk/k ijk gvk&D;k lpep ijk gvk \ ugh] ;g ifr'kk/k ugh] v/ke 'kfDr ! ;g rj fpjdky d fy, i'kkfpd vk;ktu FkkA r Hkyk ikxy] r irkj l cnyk yuk pkgrk FkkA ml irkj l tk viuh Loxknfi xjh;lh tuuh tUeHkfe dh e;knk cpkuokyk Fkk( og tUeHkfe] ftld vUu&ty l rjh ul Hkh Qyh&Qyh gA vc Hkh ek dh e;knk dk /;ku djAÞ

lglk /kk;&/kk; xkfy;k dk 'kCn gvkA pkddj 'kfDrflg u n[kkA nkuk exy irkj dk ihNk dj jg FkA egkjk.kk dk ?kkMk yLr&iLr gkdj >erk gvk fxj jgk FkkA vc Hkh le; gA 'kfDrflg d ân; e Hkkb dh eerk meM iMhA

fQj ,d vkokt gb & Þ#dkAÞ

nlj {k.k 'kfDrflg dh cUnd NVhA iyd ekjr nkuk exy ljnkj tgk&d&rgk <j gk x,A egkjk.kk u Øk/k l vk[k p<kdj n[kkA o vk[k iN jgh Fkh] ÞD;k ej ik.k ikdj fugky gk tkvkx \ bru jktirk d [ku l Hkh rEgkjh fglk rlr ugh gb \Þ

fdUr ;g D;k \ 'kfDrflg rk egkjk.kk d lkeu ureLrd [kMk FkkA og cPpk dh rjg QV&QVdj jk jgk FkkA 'kfDrflg u dgk&ÞukFk! lod vKku e Hky x;k FkkA vkKk gk rk bu pj.kk ij viuk 'kh'k p<kdj ik;f'pr dj yAÞ

jk.kk u viuh nkuk ckg Qyk nhA nkuk d xy vkil e fey x,] nkuk dh vk[k Lug dh o"kk dju yxhA nkuk d ân; xnxn gk x,A

bl 'kHk egr ij igkMh o{kk u i"io"kk dh] unh dh dy&dy /kkjk u onuk dhA

irki u mu McMckb gb vk[kk l gh n[kk&mudk fpj lgpj l;kjk ^prd^ ne rkM jgk gA lkeu gh 'kfDrflg dk ?kkMk r;kj gA

'kfDrflg u dgk&ÞHk;k ! vc vki foyc u dj] ?kkMk r;kj gAÞ

jk.kk 'kfDrflg d ?kkM ij lokj gkdj] ml nxe ekx dk ikj djr g, fudy x,A Jko.k dk eghuk FkkA

fnuHkj dh ekjdkV d i'pkr jkf= cMh lulku gk xb FkhA f'kfojk e l efgykvk d #nu dh d#.k /ofu ân; dk fgyk nrh FkhA

gtkjk lgkfxuk d lgkx mtM x, FkA mUg dkb <k<l c/kkuokyk u FkkA Fkk rk doy gkgkdkj] phRdkj] d"Vk dk vEckjA 'kfDrflg vHkh rd viu f'kfoj e ugh ykVk FkkA mldh iRuh Hkh irh{kk e fody FkhA mld ân; e thou dh vk'kk&fujk'kk {k.k&{k.k mBrh&fxjrh FkhA

v/kjh jkr e dky ckny vkdk'k e Nk x, FkA ,dk,d ml f'kfoj e 'kfDrflg u io'k fd;kA mld diM [ku l rj FkA iRuh u dkrgy l n[kkA

Þfi;; !Þ

ÞukFk !Þ

ÞrEgkjh eukdkeuk i.k gb] e irki d lkeu ijkLr gk x;kAÞ

# vH;kl

## ikB ls

1- 'kfä flg dku Fkk mlu D;k çfrKk dh Fkh \
2- jktir ckyk dh vk[kk l fpxkfj;k D;k fudyu yxh \
3- egkjk.kk çrki l 'kfä flg dh vucu D;k gb \
4- 'kfä flg dk vfre fu.k; D;k Fkk \
5- ekuflg dh de=.kk D;k Fkh \
6- eUuk th u eokM dk jkt fpà viu eLrd ij D;k /kkj.k fd;k \
7- 'kfä flg dh vk[k Xykfu l D;k NyNyk xb \
8- ;) vFkok ml ekjdkV d D;k ifj.kke g, \

## ikB ls svkxs

1- ikB e egkjk.kk çrki vkj 'kfä flg nk pfj= gA nkuk dk i<r g, dku lk pfj= vkidk vf/kd vkdf"kr djrk g \ fopkj dj fyf[k,A

2- vxj 'kfä flg u egkjk.kk çrki dk ihNk u fd;k gkrk rk mldk D;k ifj.kke gkrk\ lkfFk;k d lkFk fopkjdj fyf[k,A

3- 'kfä flg dh iRuh ekfguh d Hkko dk le>r g, mldh pkfjf=d fo'k"krkvk dk ijLij ckrphr dj fyf[k,A

4- nk Hkkb;k d lc/kk dk ge dgkuh e n[kr gA gekj vkl&ikl d ifjo'k e Hkkb&Hkkb d lc/kk dk n[kdj vki D;k egll djr g \ vkil e ckr dj fyf[k,A

## Hkkkk ls

1- ikB e vk, g, fuEufyf[kr okD;k dk /;ku l if<,&

**d**- 'kfä flg u ,d yEch lkl Qdh **vkj** viuh L=h dh vkj n[kkA

**[**k- 'kfä flg d ân; e Hkkb dh eerk meM iMh] **fQj** ,d vkokt vkb&#dkA

mijkDr nkuk okD;k e Øe'k% ^vkj* ,o ^fQj* v0;; 'kCnk I nk okD;k dk tkMk x;k gA bUg ge IePp; ck/kd v0;; dgr gA nk 'kCnk] okD;k'kk vFkok okD;k dk tkMu dk dk; dju oky v0;;] IePp;ck/kd v0;; dg tkr gA vki IePp; ck/kd v0;; d ikp mnkgj.k cuk,A

2- ikB e bu 'kCnk d ç;kx dk vki n[k Idr g &Hkj ckny] mUekni.k gIh] vVy /k;] u;k mRIkg] fodV Ie;] ILrk thou] çy; jkxA ,I ç;kx fo'k"k.k&fo'k"; d mnkgj.k gA ikB I vki bIh çdkj d vU; mnkgj.k dk [kkt dj fyf[k, vkj fo'k"; rFkk fo'k"k.k dk fpfàr dhft,A

3- ikB e cgr I LFkkuk ij ;ktd fpà ¼&½ dk ç;kx fd;k x;k gA ikB I bUg [kkt dj fyf[k, vkj ;ktd fpà dk ç;kx dgk gkrk g] bI fdrkc e I << dj if<, vkj f'k{kd dh enn I Ie>u dk i;kI dhft,A

## ; kX;rk foLrkj

1- gYnh?kkVh dgk ij g vkj D;k çfI) g \ f'k{kd I ckrphr dj bI fo"k; ij ,d fuc/k fyf[k,A

2- bI dguh dk ,d NkV I ukVd d :i e ifjf.kr dj mIdk epu dhft,A

5DRBTJ

# पाठ 4

# मौसी

& Jh Hkh"e lkguh

çLrr dgkuh ,d L=h d ekuoh; yxko vkj LoHkko d mnkÙk Lo:i dk o.ku g] tk lcd l[k&n%[k e viuh igy vkj çfrc)rk d lkFk 'kkfey gkrh gA og cMk d fy, gh ugh cPpk d lkFk Hkh mud [ky] f[kyku vkj dFkk llkj d vkune;h nfu;k e 'kkfey jgrh gA yfdu lcd dke vkuokyh ^ekl h* tc chekj iMrh g rk mld lkFk mi{kk dk 0;ogkj gkrk gA mld ifr ;g 0;ogkj cgr gh dk#f.kd gA cPpk dh vkReh;rk vkj jkxkRed Hkko ekl h d bl ,glkl dk tkxr dj nr g ftle ekl h cgn fo'okl d lkFk dgrh g fd ^vc e ej Hkh tkÅ rk re ykxk dk NkMdj dgh ugh tkÅxh*A

ml lc ekl h dgdj idkjr Fk( cPp Hkh vkj cMh me d ykx HkhA fdl h d ?kj cPpk chekj gkrk] rk lcl igy ekl h dk gh cyk;k tkrkA fdl h d ?kj 'kknh gkrh] rk ogk Hkh lcl igy ekl h gh igprhA fnuHkj egYy e dHkh ,d d ?kj] rk dHkh nlj d ?kj ekl h cBh utj vkrhA

dHkh fdl h ?kj d vkxu e cBh yMdh d cky dk< jgh gkrh( dHkh fdl h d ?kj dh Nr ij 'kyte dh drfy;k l[ku d fy, Mky jgh gkrhA

tc pn dh cfgu dh 'kknh gb] rk ekl h fnuHkj nYgu dh gFkfy;k ij egnh d cy&cV cukrh jghA

,d fnu vkxu e cBh ekl h] uhy jx d iYy ij f>yfeykr fl rkj Vkd jgh FkhA ge cPpk l cky h& Þvkvk] rEg fl rkjk tMk vkleku fn[kÅAÞ dgdj mlu gekj lkeu iYyk fcNk fn;kA lpep ge yxk tl rkjk l f>yfeykrk vkdk'k gekj lkeu Qy x;k gkA

cMh cfgu lukrh Fkh fd igy ekl h rht&R;kgkj d ekd ij ukpk Hkh djrh Fkh( rjg&rjg d Lokx HkjrhA ij vc og dN&dN c<k xb FkhA

ekl h dku Fkh] dgk l vkb Fkh] dkb ugh tkurk FkkA fdl h dk ;g Hkh ekye ugh Fkk fd og jgrh dgk gA ,d ckj ek u e>l dgk& Þtk] ekl h dk cyk ykAÞ eu iNk& Þdgk feyxh\Þ ek cky h& ÞegYy e gh dgh feyxhAÞ ;g Hkh dkb ugh tkurk Fkk fd ekl h dc ml egYy e vkb FkhA cPp tc cM gk tkr] NkV Ldy dk NkMdj fefMy Ldy e tku yxr rk ekl h dk nkeu NkM nrA rc egYy d nlj uUg cPp mldk lkFk idM yr FkA

jkt nkigj <yu ij ekl h uhe d iM ry igp tkrh FkhA ogk lHkh cPp [kyk djr FkA ekl h dk cPpk d lkFk [kyuk] mUg dgkfu;k] pVdy lukuk cgr iln FkkA tc 'kke

gk tkrh vkj cPp [kydj Fkd tkr] rk ekh dk ?kjdj cB tkr( mll dgkfu;k lurA vkt e> ftruh dgkfu;k ;kn g&rkrk&rkrh dh dgkuh] dkB d ?kkM dh dgkuh] lUnjckb dh dgkuh& o eu ekh d eg l gh luh FkhA

ekh eyk&lk niVVk vk< jgrh FkhA mld gj dku e dN&u&dN cèkk jgrk Fkk& fdlh dku e FkkM&l pu] fdlh e fVfd;k] fdlh e nky&Qfy;kA ekh niVV d Nkjk dk [kkydj] ge lcdh gFkyh ij FkkMk&FkkMk puk&pcuk j[k nrhA ,d ckj eu ek dk crk;k rk ek u euk dj fn;k] Þml xjhfcuh l ydj D;k [kkr gk\ og FkkMk&lk puk&pcuk viu fy, j[krh gkxhAÞ

ekh d lkFk fnu&jkr jgr g, Hkh dkb ugh tkurk Fkk ekh dku g \ mldk dkb lxk lc/kh g Hkh ;k ugh\ dkb cPpk mll iNrk& Þekh] re dgk dh jguokyh gk]Þ rk dgrh& ÞrEgkj egYy dhAÞ Þre dku gk \Þ rk dgrh& ÞrEgkjh ekhA** ÞrEgkj cV&cfV;k dgk g \Þ rk viuh mxyh l ,d&,d cPp dk Ndj dgrh& Þ;g ejk cVk] ;g ejh cVhAÞ uke iNk rk dgrh& Þe ekh gA ;gh ejk uke gAÞ

,d fnu tc Ldy dh NVVh gb] ge ykx cLr mBkdj ckgj fudy rk ekh QkVd ij ugh feyhA ml fnu cPpk dk dkb yu ugh x;kA nkigj dk cPp [kyu d fy, fudy rk ekh iM d uhp Hkh ugh FkhA lHkh u ,d&nlj l iNk ij fdlh dk ekye ugh Fkk fd ekh dgk xb gA

db fnu chr x, ij ekh dk dN irk u pykA dkb dgrk] ekh chekj gA dkb dgrk] og viu xko pyh xb gA ekh d u jgu l egYyk cMk [kkyh&[kkyh yxrk FkkA iM d uhp Hkh luk&luk jgrk FkkA dN fnu ckn ,d ekph iM d uhp vkdj cBu yxkA ij cPpk u ml [knMdj Hkxk fn;k& Þ;g ekh dh txg gA ;gk dkb ugh cB ldrkAÞ ekh iM d uhp cBrh Fkh] rk ?kjokyk dk Hkh cPpk dh fprk ugh FkhA vc o cPpk dk ckgj ugh [kyu nr FkA

,d fnu ge ekh dh [kkt e ?ke jg Fk] rHkh ge ,d edku d vnj l Åph&Åph ckyu dh vkokt lukb nh& Þgeu Bdk rk ugh y j[kk g ekh( chl fnu l re ;gk iMh gkA vc re fdlh nlj d ?kj pyh tkvkAÞ

ekSlh dk uke ludj ge lc fBBddj [kM gks x,A cn njokt dh njkj e l vUnj >kddj n[kkA vkxu e ekSlh ,d [kkV ij yVh FkhA cky my> g, vkj pgjk ihyk o l[kk gvk FkkA mldh ikl gh [kMh ,d vkjr mlh MkV tk jgh FkhA

Þe pyh tkÅxh] tjk 'kjhj lHky tk,AÞ

Þr viu xko pyh tkAÞ

Þxko e ejk dku cBk g \Þ dgrh&dgrh ekSlh #vklh gks xbA

ge cgr xLlk vk;kA eu ?kj ykVdj ek l dgk rk og ckyh&ÞfcTt dh ek dgk rd ml viu ikl j[k ldrh g \ ekSlh mud ?kj e dke rk djrh ughAÞ

Þexj ek] og rk lcdk dke djrh gAÞ

Þgk cVk] exj og fdlh d ?kj ukdjh rk ugh djrhAÞ ckr ejh le> e ugh vkbA ij e pi gks x;kA

nlj fnu gekjk gkdh ep FkkA ge [kydj ykV jg FkA jkLr e iy iMrk FkkA

ge ckr djr vk jg FkA ,dk,d geu ekSlh dk iy ij cB n[kkA ikl e ,d NkVh&lh xBjh vkj ykBh j[kh FkhA ekSlh dk n[kr gh ge lc ml ?kjdj [kM gks x,A

Þr bru fnu rd dgk Fkh] ekSlh \Þ ,d u iNkA

Þ;gk D;k dj jgh g] ekSlh \Þ nlj u dgkA

Þ;gk D;k cBh g] ekSlh \Þ

Þe ;gk l tk jgh g cVk]Þ dgr g, ekSlh dh vk[k Hkj vkbA

Þr rk chekj Fkh] ekSlhA rch;r dlh g \Þ cyno u iNkA

ÞcVk] vc Bhd gks xb gA n[kr ugh] viu ijk l pydj ;gk rd vk xb gAÞ

Þr D;k tk jgh g] ekSlh \ r er tkAÞ

Þe c<h g u] cV] vc e fQj l toku gkdj vkÅxh]Þ ekSlh u eldjkr g, dgkA

Þgekj fy, D;k yk,xh] ekSlh \Þ

ÞykÅxh] ykÅxh] puk&pcuk ykÅxhA xM&'kDdj ykÅxhA yMfd;k d fy, ekrh ykÅxhAÞ ekSlh u dgkA

FkkMh nj rd ekSlh d ikl cfr;kdj yMd vkx c< x,A ij FkkMh nj tku ij eMdj n[kk rk ekSlh iy ij cBh jk jgh FkhA mldh vk[k ,lh NyNyk vkb Fkh fd vkl Fkeu e ugh vkr FkA

lgls lHkh yMd ykV iMA

Þge rEg dgh ugh tku nxA ek lh] r gekj lkFk okil egYy e pyÞ&lcu ,d Loj e dgkA



Þugh cVk] vc e> tkuk gh gÞ& ek lh gdykr g, ckyhA

ij yMd u ekuA nk&rhu tu Hkkxdj lMd ikj x,] tgk ,d ndku d lkeu [kkV fcNh FkhA o [kkV mBk yk,A m lij mUgku ek lh dk tcjnLrh cBk fn;kA lkFk e xBjh vkj ykBh Hkh j[k nhA fQj [kkV mBkdj lHkh cPp egYy dh vkj py fn,A

[kkV dk cPp lh/k uhe d iM d uhp y vk,A dUg;k Hkkxdj viu ?kj l njh vkj rfd;k mBk yk;k( ;kxjkt viu ?kj l ,d dVkjk n/kA xkiky viu ?kj l yEi mBk yk;k] ftl mld ?kjoky jkr dk lhf<;k e j[kk djr FkA cyno d firk th MkDVj FkA og Hkkxrk gvk x;kA viu firk th dk ndku l [khp yk;k& Þek lh chekj g\ vki pydj nf[k,AÞ yMd vkil e ckfj;k ck/ku yx fd ek lh d ikl jkr d igy igj e dku jgxk vkj nlj igj e dku\ mUg Mj Fkk fd ek lh dk vxj vdyk NkMk rk og Hkkx tk,xhA

Þvc e ej Hkh tkÅ rk re ykxk dk NkMdj dgh ugh tkÅxhA e rEgkj ikl gh jgxhA re tkvk viu&viu ?kjAÞ tc ek lh u r lYyh nh] rc tkdj lcdk pu vk;kA bl rjg ek lh egYy e ykV vkbA cPpk u ml tku gh ugh fn;kA fQj rk og Lo; Hkh dgu yxh& Þvc e lMd dh iVjh ij lk tk;k d:xh] ij viu cPpk dk NkMdj dgh ugh tkÅxhAÞ

cPpk d mRlkg dk n[kdj cPpk d ?kjokyk dk Hkh ek lh dh fprk gku yxhA 'kh?k gh ek lh d jgu d fy, txg fey xbA gekj Ldy e gh gMekLVj th u ml dke ij j[k fy;kA ogh ,d dkBjh e jgu d fy, txg n nhA

bl ckr dk cgr cjl chr pd gA ek lh vc Hkh ogh gA og vc lpep c<k xb g] yfdu rn#Lr gA ikiy eg l g lrh g rk cMh l;kjh yxrh gA vc og Ldy dh l;kÅ e cBh] cPpk dk ikuh fiykrh gA tc tkM d fnu vkr g rk l;kÅ l gVdj Ldy d vkxu dh /ki e cB tkrh gA vk/kh NVVh d oDr cPp ml ?kj jgr gA mld niVV d Nkjk e

igy dh rjg puk&pcuk] exQyh] nky&Qfy;k c/k jgr gA ekl h cPpk dk dgkfu;k lukrh&lnjckb dh dgkuh] dkB d ?kkM dh dgkuh] rkrk&rkrh dh dgkuhA ml lcdh [kcj jgrh gA dHkh&dHkh ykBh Vdrh gb egYy dk pDdj dkVrh gA lHkh ?kjk e >kd&>kddj ?kjokyk dh d'ky&{ke iNrh gA fQj lk> <y viuh dkBjh e ykV vkrh gA

## vH;kl

### ikBl s

1- cPpk dk ekl h u fl rkjk tMk vkleku dl fn[kk;k \

2- uUg cPp ekl h dk nkeu dc NkM nr Fk \

3- ekl h d u jgu ij egYyk dl k yx jgk Fkk vkj D;k \

4- ekl h vpkud xk;c D;k gk xb \

5- ekl h viu ckj e loky iNu ij D;k&D;k tokc nrh Fkh \

6- ekl h iy ij cBdj D;k jk jgh Fkh \

7- yMdk u ekl h d fy, D;k&D;k fd;k \

### ikBl svkxs

1- y[kd dh ek viu cPp l dgrh g fd Þml xjhfcuh l ydj D;k [kkr gk \ og FkkMk lk puk&pcuk viu fy, j[krh gkxhß bu ifä;k e y[kd dh ek dk dku lk Hkko ekl h d fy, fNik g\ vkil e fopkj dj fyf[k,A

2- e c<h g u cV] vc fQj l toku gkdj e vkÅxh! ekl h u ,l k D;k dgk gkxk \

3- fcTt dh ek u ekl h d lkFk ft l rjg dk 0;ogkj fd;k] ctxk d lkFk vkiu bl rjg dk 0;ogkj gkr n[kk gkxkA bl rjg dh ?kVukvk dk n[kdj vki D;k egl l djr g \ ppk dj fyf[k,A

4- cPpk d yxko l ekl h u ;g D;k dgk Þvc e ej Hkh tkÅ rk re ykxk dk NkMdj dgh ugh tkÅxhß ekl h dk ;g okD; cPpk d çfr ml d fdu Hkkok dk çdV djrk g \ viuh le> dk fyf[k,A

## Hkk"kk l s

1- bu okD;k dk n[k&

- ek l h çfrfnu cPpk dk dgkfu;k lqukrh FkhA
- m l HkjiV Hkk tu fey ikrk FkkA
- mijkDr okD;k e vk, &^ifrfnu* vkj ^HkjiV* nkuk 'kCn l kekfl d in g tk v0;;hHkko lekl d mnkgj.k gA b l lekl e igyk in ç/kku gkrk g vkj b l l cuk leLr in v0;; gkrk g vFkkr m l dk :i dHkh ugh cnyrkA b l d l kFk foHkfä fpà Hkh ugh yxrk gA t l gkFkk&gkFk] c'kd&'kd d fcuk] fuMj &Mj d fcuk] fuL l ng& l ng d fcukA

ikB e vk, vU; v0;;hHkko lek l d in <<dj fy[kA

2- e ;gk l tk jgh g cVk dgr g, ek l h dh vk[k Hkj vkbA ^vk[k Hkj vkuk* ,d egkojk g] ft l dk vFk g vk[kk e vk l vkuk ^foNkg dh ihMk >ydukA* b l h rjg vk[kk l l cf/kr cgr l kj egkoj çpfyr gA mUg [kkt dj vFk l fgr fyf[k,A

3- • ;gk D;k cBh gk ek l h \

- rch;r d l h g \
- r D;k tk jgh g ek l h \

mi;ä rhuk okD; ç'uokpd ¼ \ ½ gA ikB e cgr l kj LFkkuk ij ç'u okpd okD;k dk ç;kx gvk gA mUg [kkt dj fyf[k, vkj Lo; l ç'u okpd 'kCnk ¼D;k] D;k] d l ] dc] dgk½ dk ç;kx djr g, b l çdkj d okD;k dk fuek.k dhft ,A

## ; kX; rk foLrkj

1- b l dgkuh dk l kj d{kk e lukb,A
2- ^ek l h^ t l k ;k m l l feyrk&tyrk dkb ik= gj egYy e vo'; gkrk gA m l d ckj e n l okD; d{kk e crkb,A
3- ^Hkh"e lkguh^ dh vU; dgkfu;k if<, vkj d{kk e lukb,A
4- fo'oEHkj ukFk 'kek ^dkf'kd^ dh dgkuh ^rkb^ Hkh if<, vkj m l d{kk e lukb,A

5ESV15

# पाठ 5

# सरद रितु आ गे

&i- }kfjdk ilkn frokjh ^foi*

/kjrh ekrk y l??kj cuk, cj fjr le;≤ e cnyr jfgFk] vÅ dHk ikuh r dHk BM djr jfgFk] tek pmekl g gej ftuxh d vk/kkj vk;A gfj;j&gfj;j /kjrh y n[kd lc tho d eu xnxn gk tkFk vm lcd thou e [k'kh Hkj tkFkA pmekl d ikN ljn fjr g viu lx vuijuk y yd vkFk] pmekl d >>V g de gk; cj ykxFkA

ljn fjr e gej [kr&[kkj vm xko g lnj ykxFkA pkjkdkrh rfj;k ujok e dey Qy g Nrjk x go;A fpjb&pjxu eu [k'kh e pkjk[kV pgy&igy dj ykxFkA dfo g ; dfork e ljn fjr d l?kjb d o.ku dj go;A

pmekl d ikuh ijkxA
tkuk&ekuk vc vdkl gj]
pkmj lgh NjkxA

txtx y vc pnk mFk]
cknj Hkbx Qfj;jA
fijFkh] ekrk pkjk[kV y]
fn[kFk gfj;j&gfj;jA
fjxfcx y vc vuijuk gj
[kru&[kr e NkxAA

ufn;k vm rfj;k d ikuh]
derh gk; ykfxlA
jnnk d pmekl d fp[kyk
>>Vgk gj Hkkfxl A
cu iV Hkj ikuh ih d
fijFkh vkt v?kk xAA

yNeh yk ygVkj [kkfrj]
ty nork vxokblA
rc txtx y ijbu ikuk&
d nluk nlokblA
fjxfcx y Qj dey Qy
gj]rfj;k Hkj NrjkxAA

pkjk[kV e pgy&igy]
vc djFk fpjb&pjxuA
Hkkjk ?kyk ij g cbgk]
djFk xuxu&xuxuA
vefjr cjlk gkgh lxh]
l?kj ?kMh vc vkxAA

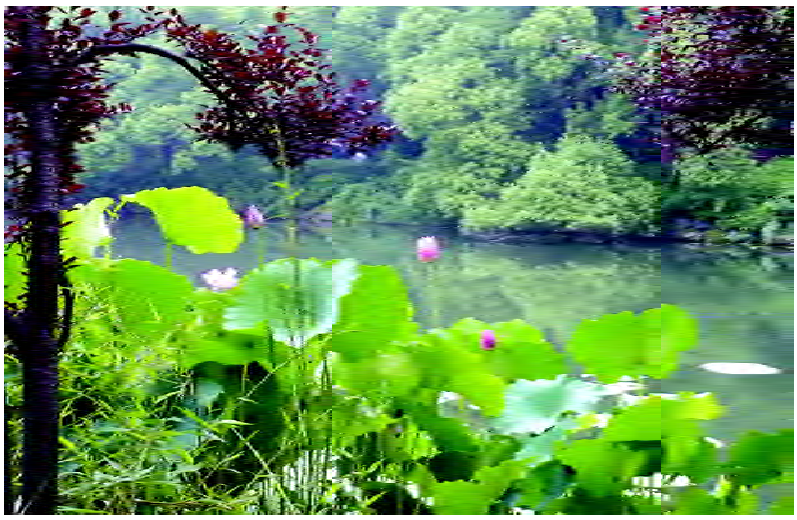

## NRrh lx<h 'kCn eu d fgUnh vFk

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| Pkmekl | ¾ | o"kk _r d pkj ekg]Ckjlkr | >>Vgk | ¾ | ij'kku dju okyk |
| | | | v?kkx | ¾ | rlr gk x;k |
| lkjkx | ¾ | nj gk x;k | ygVkj [kkfrj | ¾ | okil yku d fy, |
| pkmj | ¾ | pkoy | ijbu | ¾ | dey |
| lgh | ¾ | tl] leku | nluk | ¾ | fcLrj |
| Njkuk | ¾ | pkoy dk ely l dVdj lkQ djuk | Nrjkx | ¾ | Qy x;k |
| | | | Pkgy&igy | ¾ | b/kj &m/kj mMdj dyjo djuk]pgy&igy |
| txtx y mFk | ¾ | idk'koku mxrk g | | | |
| Hkbx | ¾ | gk x;k | fpjb&pjxu | ¾ | i{kh |
| Pkkjk[kV | ¾ | pkjk vkj | cbgk | ¾ | ikxy |
| fjxfcx y | ¾ | f>yfeykrk gvk | l?kj | ¾ | lnj |
| vuijuk | ¾ | vUui.kk]/kjrh | ?kMh | ¾ | le; |

# vH;kl

## iBl s

1- ^vdkl gj pkmj lgh Njkx* d dk Hkko g \
2- ufn;k vm rfj;k d ikuh dkcj derh gk; ykfxl \
3- yNeh y ygVkj [kkfrj ty nork g dk&dk mfne dfjl \
4- dfo g ver cjlk dkyk dg go;] vm ; cjlk dc gkFk \
5- ljn fjr ek gej pkjk [kV dk&dk cnyko gkFk \
6- pmekl gej ftuxh d l[k lef) d vk/kkj dkcj eku xg vm pmekl e dk&dk gkFk\
7- dfo l??kj ?kMh dku le; y dg go; vm ok le; dk&dk cnyko gkx\

## iBl svkxs

1- ljn fjr d vk; y fpjb&fpjxu vm Hkkjk eu viu [k'kh y dbl ijxV djr go;\ viu Hkk"kk e fy[koA
2- ^cu iV Hkj ikuh ih d fijFkh vkt v?kk x* ; okD; y dfo dkcj dg go;\
3- rgj lkp l dku l fjr g lcy l??kj gkFk] l??kj dkcj yxFk \ viu d{kk e fopkj djd fy[koA
4- pmekl d efguk e rgj ?kj d vkl&ikl ek dk&dk cnyko gkFkA vm reu y vkdj l dk&dk ij'kkuh vm dk vklkuh yxFkA viu d{kk e fopkj djd fy[koA

## Hkk"kk l s

1- ; 'kCn eu d fgnh [kMh ckyh d 'kCn :i fy[ko&
pkmj] txtx] fijFkh] pkjk [kV] fjxfcx] vuijuk] rfj;k] ijbu] nluk] cbgk] pgy&igyA
2- [kkYg fy[kk; 'kCn eu d mYVk vFk okyk 'kCn fy[ko&
vdkl] cjlk] Qfj;j] l?kj] cbgk] >>Vgk] derh
3- ; 'kCn eu y vFk Li"V dj cj viu okD; e ç;kx djo&
xuxu&xuxu] gfj;j&gfj;j] ?kMh] vefjr] fpjb&pjxu] rfj;k] fjxfcx] pkmj] v?kkxA

## ;kX;rk foLrkj

1- ; dfork d v/kkj y ljn fjr d lnjrk d ,d Bu 10 okD; d fucU/k fy[koA
2- ljn _r d lc/k e fgnh vm NÙkhlx<h Hkk"kk e ikp Bu dfork [kkto vm viu Ldy d ckylHkk e lukooA

# पाठ 6

# सदाचार का तावीज़

& Jh gfj'kdj ijlkb

5FUE7Q

**Hk"Vkpkj vkt d le; vkj lekt dk cgpfpr fo"k; g vkj ;g Hk"Vkpkj ijlkb th d jpukdky e Hkh viu Qyr&Qyr :i e jgk gkxkA rHkh rk viu rh[k 0;X; e Hk"Vkpkj d fofHkUu :i&rjhdk dk 0;X;dkj u dFkkRed dyoj e dN gdhdr vkj dN dYiuk d tfj; 0;oLFkkxr [kk[kyiu vkj njckjh lL—fr d lkFk l?ku :i e mHkkjk gA**

,d jkT; e gYyk epk fd Hk"Vkpkj cgr Qy x;k gA

jkTkk u ,d fnu njckfj;k l dgk] **ç tk cgr gYyk epk jgh g fd lc txg Hk"Vkpkj Qyk gvk gA ge rk vkt rd dgh ugh fn[kkA re ykxk dk dgh fn[kk gk rk crkvkA**

njckfj;k u dgk] **tc g tj dk ugh fn[kk rk ge dl fn[k ldrk g **

jktk u dgk] **ugh] ,lk ugh gA dHkh&dHkh tk e> ugh fn[krk] og rEg fn[krk gkxkA tl e> cj liu dHkh ugh fn[kr] ij rEg rk fn[kr gkx!**

njckfj;k u dgk] **th] fn[kr gA ij o liuk dh ckr g**

jktk u dgk] **fQj Hkh re ykx lkj jkT; e <<dj n[kk fd dgh Hk"Vkpkj rk ugh gA vxj dgh fey tk, rk gekj n[ku d fy, ueuk yr vkukA ge Hkh n[k fd dlk gkrk gA **

,d njckjh u dgk] **g tj! og ge ugh fn[kxkA luk g] og cgr ckjhd gkrk gA gekjh vk[k vkidh fojkVrk n[ku dh bruh vknh gk xb g fd ge ckjhd pht ugh fn[krhA ge Hk"Vkpkj fn[kk Hkh rk mle ge vkidh gh Nfo fn[kxh D;kfd gekjh vk[kk e rk vkidh gh ljr clh gA ij viu jkT; e ,d tkfr jgrh g] ftl *fo'k"kK* dgr gA bl tkfr d ikl dN ,lk vtu gkrk g fd ml vk[kk e vktdj o ckjhd pht Hkh n[k yr gA ejk fuonu g fd bu fo'k"kKk dk gh g tj Hk"Vkpkj <<u dk dke lkiA **

jktk u *fo'k"k* tkfr d ikp vkneh cyk, vkj mul dgk] **luk g] gekj jkT; e Hk"Vkpkj gA ij og dgk g] ;g irk ugh pyrkA re ykx mldk irk yxkvkA vxj fey tk, rk idMdj gekj ikl y vkukA vxj cgr gk rk ueu d fy, FkkMk&lk y vkukA**

fo'k"kKk u mlh fnu l Nkuchu 'k: dj nhA

nk eghu d ckn o fQj l njckj e gkftj g,A

jktk u iNk] **fo'kkKk! rEgkjh tkp ijh gk xb**

**th ljdkjA**

**D;k Hk"Vkpkj feyk**

**th] cgr&lk feykA**

jktk u gkFk c<k;k] ^^ykvk] e> crkvk] n[k dlk gkrk g**

fo'kkKk u dgk] **gtj! og gkFk dh idM e ugh vkrkA og LFky ugh] l{e gA ij og lo= 0;klr gA ml n[kk ugh tk ldrk] vuHko fd;k tk ldrk gA**

jktk lkp e iM x,A cky] **fo'kkKk] re dgr gk og l{e g vkj lo0;kih gA ; x.k rk b'oj d gA rk D;k Hk"Vkpkj b'oj g**

fo'kkKk u dgk] **gk egkjkt! vc Hk"Vkpkj b'oj gk x;k gA**

,d njckjh u iNk] **ij og g dgk \ dl vuHko gkrk g**

fo'kkKk u tokc fn;k]**og lo= gA og bl Hkou e gA og egkjkt d flgklu e gA**

**flgklu e g** dgdj jktk lkgc mNydj nj [kM gk x,A

fo'kkKk u dgk] **gk ljdkj! flgklu e gA fiNy ekg bl flgklu ij jx dju d ftl fcy dk Hkxrku fd;k x;k g] og fcy >Bk gA og okLro l nxu nke dk g] vk/kk ilk chpoky [kk x,A vkid ij 'kklu e Hk"Vkpkj g vkj og e[;r% ?kl d :i e gA**

fo'kkKk dh ckr ludj jktk fpfrr g, vkj njckfj;k d dku [kM g,A

jktk u dgk] **;g rk cMh fpUrk dh ckr gA ge Hk"Vkpkj fcydy feVkuk pkgr gA fo'kkKk! re crk ldr gk fd og dl feV ldrk g**

fo'kkKk u dgk] **gk egkjkt! geu mldh Hkh ;ktuk r;kj dh gA Hk"Vkpkj feVku d fy, egkjkt dk 0;oLFkk e cgr ifjoru dju gkxA ,d rk Hk"Vkpkj d ekd feVku gkxA tl Bdk g rk Bdnkj gA vkj Bdnkj g rk vf/kdkfj;k dk ?kl gA Bdk feV tk; rk mldh ?kl tk,A blh rjg vkj cgr&lh pht gA fdu dkj.kk l vkneh ?kl yrk g] ;g Hkh fopkj.kh; g**

jktk u dgk] **vPNk] re viuh ijh ;ktuk j[k tkvkA ge vkj gekjk njckj ml ij fopkj djxkA** fo'kkK py x,A

jktk vkj njckfj;k u Hk"Vkpkj feVku dh ;ktuk dk i<kA ml ij fopkj fd;kA fopkj djr&djr fnu chru yx vkj jktk dk LokLF; fcxMu yxkA ,d fnu ,d njckjh u dgk] **egkjkt! fprk d dkj.k vkidk LokLF; fcxMrk tk jgk gA mu fo'kkKk u vkidk >>V e Mky fn;kA**

jktk u dgk] **gk] e> jkr dk uhn ugh vkrhA**

nljk njckjh ckyk] **,lh fjikV dk vkx d goky dj nuk pkfg,] ftll egkjkt dh uhn e [kyy iMA**

jktk u dgk] **ij dj D;k \ re ykxk u Hkh Hk"Vkpkj feVku dh ;ktuk dk v/;;u fd;k gA rEgkjk D;k er g\ D;k ml dke e ykuk pkfg,\

njckfj;k u dgk] **egkjkt! ;g ;ktuk D;k g] ,d elhcr gA mld vulkj fdru myV&Qj dju iMx ! fdruh ij'kkuh gkxh! lkjh 0;oLFkk myV&iyV gk tk,xhA tk pyk vk jgk g] ml cnyu l ub&ub dfBukb;k ink gk ldrh gA ge rk dkb ,lh rjdhc pkfg,] ftll fcuk dN myV&Qj fd, Hk"Vkpkj feV tk,A**

jktk lkgc cky] **e Hkh ;gh pkgrk gA ij ;g gk dl\ re ykx gh dkb mik; [kktkA**

,d fnu njckfj;k u jktk d lkeu ,d lk/k dk i'k fd;k vkj dgk] **egkjkt] ,d dUnjk e riL;k djr g, bu egku lk/kd dk ge y vk, gA bUgku lnkpkj dk rkoht cuk;k gA og eU=k l fl) g vkj mld ck/ku l vkneh ,dne lnkpkjh gk tkrk gA**

lk/k u viu >ky e l ,d rkoht fudkydj jktk dk fn;kA jktk u ml n[kkA cky] ^^g lk/k! bl rkoht d fo"k; e e> foLrkj l crkvkA bll vkneh lnkpkjh dl gk tkrk g**

lk/k u le>k;k]**egkjkt! Hk"Vkpkj vkj lnkpkj eu"; dh vkRek e gkrk g] ckgj l ugh gkrkA fo/kkrk tc eu"; dk cukrk g rc fdlh dh vkRek e beku dh dy fQV dj nrk g vkj fdlh dh vkRek e cbekuh dhA bl dy e l beku ;k cbekuh d Loj fudyr g] ftUg ^vkRek dh idkj* dgr gA vkRek dh idkj d vulkj gh vkneh dke djrk gA ç'u ;g g fd ftudh vkRek l cbekuh d Loj fudyr g] mUg nckdj bekunkjh d Loj dl fudky tk,\ e db o"kk l blh d fpUru e yxk gA vHkh eu ;g lnkpkj dk rkoht cuk;k gA ftl

vkneh dh Hktk ij ;g c/kk gkxk] og lnkpkjh gk tk,xkA eu dRr ij Hkh ç;kx fd;k gA ;g rkoht xy e ck/k nu l dRrk Hkh jkVh ugh pjkrkA ckr ;g g fd rkoht e l Hkh lnkpkj d Loj fudyr gA tc fdlh dh vkRek cbekuh d Loj fudkyu yxrh g] rc ;g rkoht dh 'kfDr ml vkRek dk xyk ?kkV nrh g vkj vkneh dk rkoht d beku d Loj lukb iMr gA og bu Lojk dk vkRek dh idkj le>dj lnkpkj dh vkj çfjr gkrk gA ;gh rkoht dk x.k g] egkjkt !**

njckj e gypy ep xbA njckjh mB&mBdj rkoht dk n[ku yxA

jktk u [k'k gkdj dgk] **e> ugh ekye Fkk fd ej jkT; e ,l peRdkjh lk/k Hkh gA egkReu! ge vkid cgr vkHkkjh gA vkiu gekjk ldV gj fy;kA ge lo0;kih Hk"Vkpkj l cgr ij'kku FkA exj ge yk[kk ugh] djkMk rkoht pkfg,A ge jkT; dh vkj l rkfctk dk ,d dkj[kkuk [kky nr gA vki mld tujy eutj cu tk, vkj viuh n[k&j[k e cf<;k rkoht cuok,A**

,d e=h u dgk] **egkjkt! jkT; D;k >>V e iMA ejk rk fuonu g fd lk/k ckck dk Bdk n fn;k tk,A o viuh eMyh l rkoht cuokdj jkT; dk llykb dj nxA**

jktk dk ;g l>ko ilUn vk;kA lk/k dk rkoht cuku dk Bdk n fn;k x;kAmlh le; mUg ikp djkM #i; dkj[kku d fy, i'kxh fey x,A

jkT; d v[kckjk e [kcj Nih] **lnkpkj d rkoht dh [kkt! rkoht cuku dk dkj[kkuk [kyk!**

yk[kk rkoht cu x,A ljdkj d gDe l gj ljdkjh depkjh dh Hktk ij ,d&,d rkoht ck/k fn;k x;kA

Hk"Vkpkj dh leL;k dk ,lk ljy gy fudy vku l jktk vkj njckjh lc [k'k FkA ,d fnu jktk dh mRldrk tkxhA lkpk] **n[k rk fd ;g rkoht dl dke djrk gA** og o'k cnydj ,d dk;ky; x,A ml fnu nk rkjh[k FkhA ,d fnu igy gh ru[okg feyh FkhA

og ,d depkjh d ikl x, vkj dkb dke crkdj ml ikp #i; dk ukV nu yxA depkjh u mUg MkVk]** Hkkx tkvk ;gk l] ?kl yuk iki gA**

jktk cgr [k'k g,A rkoht u depkjh dk bekunkj cuk fn;k FkkA dN fnu ckn o fQj o'k cnydj mlh depkjh d ikl x,A ml fnu bdrhl rkjh[k Fkh& eghu dk vkf[kjh fnuA

jktk u fQj ml ikp dk ukV fn[kk;k vkj mlu ydj tc e j[k fy;kA jktk u mldk gkFk idM fy;kA cky]** e rEgkjk jktk gA D;k re vkt lnkpkj dk rkoht ugh ck/kdj vk,**

**ck/kk g] ljdkj! ;g nf[k,A**

mlu vkLrhu p<kdj rkoht fn[kk fn;kA

jktk vletl e iM x,A fQj ,lk dl gk x;k \

mUgku rkoht ij dku yxkdj lukA rkoht e l Loj fudy jg Fk] **vj] vkt bdrhl gA vkt rk y ykA**

## vH;kl

### ikBl s

1- njckfj;k dk Hk"Vkpkj D;k fn[kkb ugh iM jgk Fkk \
2- fo'k"kKk u Hk"Vkpkj d ckj e jktk dk D;k crk;k \
3- Hk"Vkpkj lekIr dju d fy, fo'k"kKk u jktk dk D;k l>ko fn,A
4- Hk"Vkpkj feVku dh ;ktuk i<u d ckn jktk dh rch;r D;k [kjkc jgu yxh \
5- lk/k u jktk dk Hk"Vkpkj d ckj e D;k crk;k \
6- jktk u rkcht d çHkko dk ij[ku d fy, D;k fd;k \
7- jktk u Hk"Vkpkj dh ryuk b'oj l D;k dh \

### ikBl svkxs

1- ikB e mYy[k fd;k x;k g fd ÞHk"Vkpkj lo= g] lo0;kih gAß vki bl ckr l fdruk lger g\ rd d lkFk viuh le> dk fyf[k,A
2- D;k vkidk yxrk g fd rkcht tl lk/kuk l Hk"Vkpkj [kRe fd;k tk ldrk g\ vxj gk rk dl vkj ugh rk D;k \

3- gekj n'k vFkok jkT; e Hk"Vkpkj Qyu d D;k dkj.k vkidk çrhr gkr g \ lkfFk;k l ckrphr dj viuh le> dk fyf[k,A
4- *Hk"Vkpkj dk ueuk* l vki D;k le>r g \ viu viu vkl&ikl fdu :ik e Hk"Vkpkj d ueu ;k Lo:i dk n[kk gA mä ?kVuk ;k fo"k; ij viu fopkj fyf[k,A

## Hkk"kk l s

1- fuEufyf[kr egkojk dk vFk Li"V dju d fy, ikB d mu v'kk dk [kkft, tgk budk ç;kx gvk g vkj fQj lnHk dk le>r g, vFk fyf[k, &
   - Nkuchu djuk] goky djuk] [kyy iMuk] myV&Qj] vlet l e iMukA
2- fuEukfdr okD;k dk /;ku l if<,&
   - e dy njckj e tkÅxkA
   - dy] lk/k jktk l feykA
   - fo/kkrk fdlh dh vkRek dh beku e dy fQV dj nrk gA

5SHIPX

mi;DRk okD; e j[kkfdr 'kCn ^dy* d rhu fHkUu vFk gA mlh çdkj fuEukfdr leku mPpkj.k oky 'kCnk d vFkk dk okD; e ç;kx djr g, Li"V dhft, &

in] vke] vd] lkuk] dud] [kj

## ; kX;rk foLrkj

1- Hk"Vkpkj dk lekIr dju d vki lHkh d ikl dku&dku l uk;kc rjhd gA vki l e ckr dj viu l>ko dk foLrkj l fyf[k,A
2- 0;X; jpuk D;k gkrh g \ ;g lkfgR; dh vU; fo/kkvk l d l fHkUu vkj etnkj gkrh g\ bl fo"k; ij f'k{kd l ckrphr dj fdlh vU; 0;X; fo/kk dh jpuk dk [kkt dj if<,A

5SRERK

# पाठ 7

# रात का मेहमान

&ldfyr

5T1AT8

**vktkn Hkkjr d liu dk lp dju d fy, Hkkjr d vudk ;okvk u viu çk.kk dh ckth yxk;hA viuk loLo jk"V dh cfyonh ij gke dj fn;kA ,l gh vej Økfrdkjh pæ'k[kj vktkn jg] ftudh gj lkl e n'k vkj n'kokfl;k d çfr çe vkj mRlx dh Hkkouk dV&dV dj Hkjh FkhA çLrr dgkuh e vktkn d 0;fäRo d nk igy fn[kr g] tgk ,d vkj o fcfV'k ljdkj dk pdek nr g, mll ykgk yr g rFkk mlh 'kklu e mud ukd d uhp Økfrdkjh xfrfof/k;k dk vtke nr g ogh nljh vkj ^dYiuk^ tlh çfrHkk'kkyh Nk=k d l?k"k vkj foiUurk dk le>r g, ukVk l Hkjk chQdl ml Fkek dj v/kj e xe gk tkr gA**

lu 1920 b- d 'kkfUr vkUnkyu d ckn Hkkjrh; Økfrdkfj;k u 9 vxLr] 1925 dh jkr dk igyk /kekdk fd;k] y[kuÅ d fudV dkdkjh eA mUgku rRdkyhu 8 Mkmu Vu l tkrk gvk ljdkjh [ktkuk yV fy;kA bl ?kVuk l fcfV'k ljdkj dki mBhA ØkfUrdkfj;k dk idMu d fy, xlrpjk dk vkn'k fn, x,A fxj¶rkfj;k gbA fry dk rkM cuk;k x;kA cgrk dk Qkl h d Qn ulhc g, rk db;k dk vktUe dkyk ikuhA o"kk dk Bkl ØkfUrdkjh lxBu feuVk e fNUu&fHkUu gk x;kA ,d d ckn nljk Økfrdkjh] fcfV'k xlrpj foHkkx dh utjk dk f'kdkj gkrk gh x;kA fdUr mud lukifr pn'k[kj vktkn] Qjkjh dh gkyr e Hkh fcfV'k lRrk l MVdj ykgk y jg FkA

mUgh fnuk dh ckr gA Qjojh lu 1930 dk iFke llrkgA tkMk viu vfre tk'k e FkkA ckfj'k rt FkhA jkr nl ct y[kuÅ pkjckx LV'ku ij ;kf=;k l vf/kd rk ifyloky gh Fk] yfdu pkj&Ng onh/kkjh gh fn[kkb n jg FkA ckdh lc lkn fyckl e FkA Bhd lok nl ct ngjknu ,Dlil lyVQke ucj ,d ij vkdj #dhA e[kfcj u lpuk nh Fkh fd ^vktkn^ blh xkMh l cukjl tk,xA mUg chp e gh /kj nckpu d bjkn l ifylokyk u xkMh dk ,d&,d fMCck Nku ekjk] yfdu pn'k[kj *vktkn* dk irk u pykA

xkMh NVu l FkkMh nj igy ,d xlrpj nkMrk gvk ifyl vQlj d ikl vk;k vkj gkQr g, ckyk fd ^vktkn^ rk ,d lkgc cgknj d o'k e ckgj fudy x,A bliDVj d pkdu ij mlu xV l yk;k iFke J.kh dk ,d fVdV Hkh mud vkx c<k fn;k tk ngjknu l cukjl rd dk Fkk & ifyl dk pdek nu d bjkn l ^vktkn^ chp e mrj iM FkA fVdV d ihN fy[kk Fkk & Þe> thfor idMuk vlHko gAÞ & vktknA

vc rk vQlj dk dkVk rk [ku ughA Qkju lcdk bdVBk djd ^vktkn^ dk ihNk dju dh BkuhA

gkFk e vVph fy, *vktkn* [kjkek&[kjkek pydj ykV'k jkM ij vk,A rHkh mUgku ihN eMdj n[kk] ifyl d cgr l toku nkMr g,] mlh vkj vk jg FkA ckleMh pkjkg l o rjr yky d, dh vkj eMA pyu dh j¶rkj vkj rt dj nhA fQj gohoV jkM ij vkr&vkr ,d ldjh xyh e eMA rhu&pkj edku NkMdj lglk mud gkFk dh Fkifd;k nkfguh vkj d njokt ij iMu yxhA

{k.kHkj e ,d cf<;k u dMh [kkyr g, iNk] Þdku \Þ

Þcgr Hkhx x;k gA ckfj'k Fkeu rd 'kj.k pkgrk gAÞ

fVefVekr g, nh; dh jk'kuh *vktkn* d pgj ij iMhA Þvnj vk tkvk] cVkÞ] dgdj cf<;k u njoktk [kky fn;kA edku e nkf[ky gkr gh *vktkn* u >V dMh cn dj nhA fQj vkxu ikj djd nkuk vnj vk,A r[r ij cBu dk b'kkjk djd cf<;k u nh;k ogh nhoV ij j[k fn;k vkj dej l /kkrh fudkyhA /kkrh tukuh FkhA n[kr gh mUg glh vk xbA

ÞfcfV;k dh gA ?kj e dkb en rk g ughÞ cf<;k u dgkA

*vktkn* pi jgA doy rkfy;k gh bLreky e yk,A

ÞD;k uke g rEgkjk\Þ cf<;k u cM Lug l iNkA

Þ thou e dHkh >B rk ckyk ugh] vkj lp ckyu dh bl le; bPNk ugh gÞ] vktkn ckyA

ÞD;k \ lp ckyu e D;k Mj g \ tk Hkh gk] lp dgkAÞ

Þpn'k[kj vktknA** *vktkn* u dgkA

^^tk Qjkj g]A ogh *vktkn*] ft ldh ftnk ;k enk fxj¶rkjh d fy, ljdkj u ing gtkj #i;k dk buke ?kkf"kr fd;k gÞ cf<;k pkdhA

Þ th] oghAÞ

ÞrEgkjk vijk/k \Þ

Þn'kHkfDrA e fdlh Hkkjrh; dk jkVh] diMk vkj edku d fy, nj&nj HkVdr ugh n[k ldrkA vxth 'kklu vc lgu ugh gkrkA Hkkjr ek d ijk e iMh cfM;k dk rkMu dk ldYi fy;k g euA cl] ;gh vijk/k g ejkAÞ ^vktkn^ vko'k e dgr x,A

þ/kU; g rEgkjk ldYi ! /kU; g og ek] ftldh dk[k u ,lk yky tUekA rEgkj n'ku ikdj e /kU; gbAþ

^vktkn^ u cf<;k dk ml fVefVekr g, nh; dh jk'kuh e xkj l n[kkA mldh vk; ipkl l Åij gkxhA mld rtLoh e[k vkj fu'Ny u=k l yxk fd og fdlh dyhu ifjokj dh i<h&fy[kh fu/ku efgyk gA

rHkh vpkud cf<;k dk [kklh dk nkjk mBkA Åij dej e l fudydj dkb rth l thu dh vkj yidkA ^vktkn^ ogh dku e fNi x,A og cf<;k dh bdykrh cVh dYiuk FkhA Åij dej e cBh i< jgh FkhA ek dk mBk nkjk ludj rjr Hkkxh&Hkkxh uhp vkb vkj mudh ihB lgyku yxhA fQj dVkjh e nk ?kV ikuh ihu dk fn;kA LoLFk gkdj cf<;k Hkkpddh&lh b/kj&m/kj n[ku yxhA yMdh lge xbA iNk&þD;k g ek \ fdl n[k jgh gk\þ

þog dgk x;k] tk vHkh e>l ckr dj jgk Fkk \þ

dYiuk u ^vktkn^ dh vkj n[kk vkj ek l iNk] þ; dku g] ek \þ

þjkr dk egekuA cMk ;kX; vkj le>nkj 0;fDr gAþ

þ;kX; vkj le>nkj g] rHkh rk lkj fnu l Hk[kk gþ *vktkn* u lgt Hkko l dgkA

þvj cVh] e rk Hky gh xbA bUg dN f[kykvk&fiykvk]þ cf<;k u dgkA

,d lkQ&lFkjh dkl dh Fkkyh e ijkB vkj ngh&cjk ydj dYiuk vkb vkj ml ogh frikb ij j[k fn;kA gkFk /kkdj ^vktkn^ [kku cB] rk ,d&,d ijkB d nk&nk dkj cukdj [kku yxA dYiuk dk glh vk xbA

þHk[k e ,lk gh gkrk gA re dHkh Hk[kh jgh gk \þ ^vktkn^ u iNkA

þgekj fy, Hk[k jguk dkb ub ckr ugh gA ol vk/k iV rk vDlj gh jgr gAþ

þfQj Hkh jkr ckjg&ckjg ct rd i<ukAþ

þijh{kk fudV gAþ

þfdl d{kk e i<rh gk \þ

þ,e- ,- f}rh; o"k eAþ

þfo"k; D;k g rEgkjk \þ

þlLdrAþ

þ'kkck'k ! lLdr i<rh gk rHkh rk vk/k iV jgrh gkAþ

[kkuk [kku d ckn *vktkn* u nk ykV BMk ty fi;kA dYiuk Åij i<u pyh xbA cf<;k u crk;k fd dYiuk chl #i, ekfld dh V;'ku djrh gA mlh e fdlh rjg xtj&clj gk tkrh gA mldh 'kknh Hkh djuh gA yMdk rk g utj e] yfdu il dh leL;k eg ck; [kMh gA

okrkoj.k e dN mnklh&lh Nk xbA rHkh th-ih-vk- dh ?kMh u Vu&Vu djd jkr d nk ctk,A *vktkn* u tkuk pkgkA cf<;k u dHkh&dHkh feyr jgu d fy, dgkA

vktkn u fQj vku dk opu fn;k vkj dYiuk dk cyku d fy, dgkA og vHkh rd i< jgh FkhA ek dh vkokt ludj og rjr uhp vkb vkj ckyh] Þck.kHkVV dh dkncjh i< jgh FkhA cMh dfBu jpuk gAÞ

Þlkj e dkb dke dfBu ughA eu yxkdj i<k vkj iFke J.kh ykvkA ;gh ejk vk'khokn gAÞ *vktkn* u dgkA

Þvki lcd vk'khokn l iFke rk lnk vkb gA bl ckj Hkh vk ldrh gAÞ

ÞvPNk] rk ; yk viu iFke vku dk bukeÞ& dgdj *vktkn* u chQdl dYiuk d gkFk e Fkek fn;k vkj o cf<;k dk i.kkedj rjr ogk l py fn,A

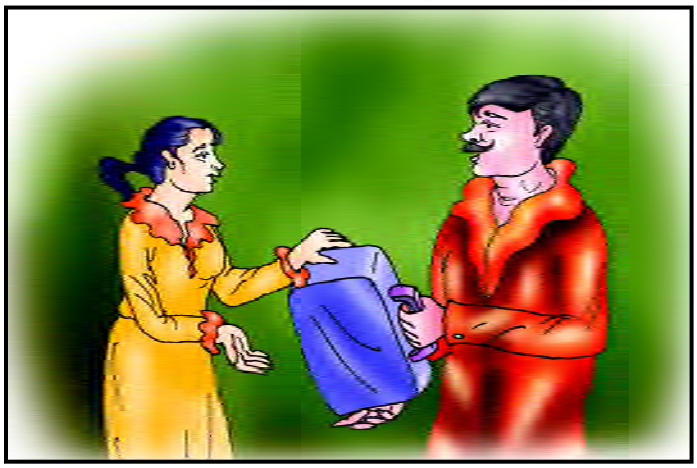

dYiuk u chQdl [kkykA mle Hkj Fk ldMk #i; d ukV] 'kk;n dYiuk d fookg d fy,A

#i; ydj o)k njokt dh vkj >iVhA *vktkn* tk pd FkA ckfj'k u vkj Hkh Hk;dj :i /kkj.k dj fy;k FkkA

v/kj e rkdrh o)k u tku D;k lkp jgh Fkh \

**fVli.kh&** Økfrohj pUn'k[kj ^vktkn^ dk tUe e/;çn'k d >kcvk fty d HkkHkjk uked xko e gvk FkkA mud firkth ,d cgr lk/kkj.k&lk dke djr FkA pUn'k[kj dh çkjfEHkd f'k{kk HkkHkjk e gh gbA vkx dh f'k{kk d fy, o okjk.klh ¼cukjl½ x,A ogk o Lor=rk vknkyu e Hkkx yu yxA ,d ckj fdlh lR;kxg e o idM fy, x,A eftLVV u mul iNk] ** rEgkjk D;k uke g \ **

pUn'k[kj cky] **vktknA**

**rEgkj firkth dk D;k uke g\ **

**Lor=A**

**rEgkjk fuokl dgk g**

**ty[kkukA*

U;k;k/kh'k bu ç'uk d mŸkj ludj fcxM x;kA mlu mUg iUng cr ekju dh ltk nhA

mUg ing cr yxk, x,A gj cr ij mUgku vkokt cyn dh ^Hkkjr ekrk dh t;*A o rHkh l Økfrdkfj;k d lxBu e 'kkfey gk x,A vr e bykgkckn d vYÝM ikd e ifyl l mudh eBHkM gbA mudh fiLrky e ,d xkyh cph FkhA og mUgku viuh duiVh e ekjdj viuk thou lekIr dj fy;kA vYÝM ikd e mudh lekf/k cuh gA og ikd vc ^vktkn ikd^ gk x;k gA

## vH;kl

### ikBl s

1- pUæ'k[kj vktkn d ckj e vki D;k tkur g \

2- Økfrdkfj;k u 09 vxLr 1925 dh jkr D;k fd;k \

3- ifyl dk pdek nu d fy, vktkn u D;k fd;k \

4- ctx L=h d iN tku ij vktkn u viuk D;k vijk/k crk;k vkj vkidh utj e D;k og vijk/k Fkk \

5- eftLVV }kjk iNu ij pUæ'k[kj vktkn u viuk D;k ifjp; fn;k \

6- vktkn dk vijk/k tkuu d ckn o) L=h d eu e vktkn d çfr D;k Hkko mRiUu g, \

### ikBl svkks

1- vxj og o) L=h pæ'k[kj vktkn d ckj e ifyl dk lpuk n nrh rk D;k gkrk\ fyf[k,A

2- ;fn pæ'k[kj vktkn dh txg vki gkr rk #i;k l Hkj chQdl dk D;k djr \

3- ^'kkck'k ! lL—r i<rh gk rHkh rk vk/k iV jgrh gk* vktkn }kjk ,lk dg tku d ihN D;k dkj.k vkidk yxr g \

4- vktkn ,d&,d ijkB d nk&nk dkj cukdj [kk jg FkA vkidk tc tkjk dh Hk[k yxrh g] rk vki D;k&D;k djr g \

### Hkkkl s

1- • Þfcfv;k dh gA ?kj e dkb en rk g ughß o) L=h u dgkA

• ifyl dk pdek nu d bjkn l ^vktkn* chp e gh mrj iM FkA

mi;Dr nkuk okD;k e bdgj vkj ngj m)j.k fpà ¼^ * ,o Þ ß½ dk ç;kx gvk gA ctx L=h }kjk dgh xb ckr dk T;k dk R;k çLrr djr g, ngj m)j.k fpà dk ç;kx gvk g ogh vktkn miuke d fy, bdgjk m)j.k fpà ç;ä gvk gA

vFkkr fdlh d }kjk dg x, dFku ;k fdlh egki#"k dh ckr ¼ vklr okD; ½ dk ;Fkkor çLrr dju ij ngj m)j.k fpà dk ç;kx gkrk g ogh fdlh lKk] uke vFkok miuke d fy, bdgj m)j.k fpà dk ç;kx gkrk gA ikB e mi;ä nkuk çdkj d ç;ä m)j.k fpàk dk igpku dj j[kkfdr dhft,A

2- ikB e ç;ä g, mn Hkk"kk d fuEufyf[kr 'kCnk d fy, fgnh d leku vFk oky 'kCnk dk <<dj ;k iN dj fyf[k,&

lth] vkokt] 'kkfey] njokt] utj] Qjkj] fyckl] [ku] tk'k] j¶rkjA

3- vukipkfjd i=kpkj mud lkFk fd;k tkrk g] ftul gekjk 0;fäxr] ikfjokfjd vFkok Hkkouked lc/k gkrk gA blI 0;fäxr i=kpkj Hkh dgk tkrk gA blfy, bu i=k e 0;fäxr l[k] n%[k] vk'kk vi{kk] fujk'kk dk HkkokRed vdu gkrk gA ; i= viu ifjokj d ykxk] fe=k] vkj fudV lcf/k;k dk fy[k tkr gA bud rhu çe[k Hkkx gkr g &

'kh"k Hkkx & ble viuk irk] fnukd] lck/ku okD; vkr gA

e/; Hkkx & bl Hkkx e ln'k vFkok dF; jgrk gA

vUR; Hkkx & ble Lofun'k d vrxr viuk uke] gLrk{kj vkj irk jgrk g rFkk vko';drkulkj i= iku oky dk uke irk ckb vkj fy[kr gA

vki viu NkV Hkkb vFkok cgu dk ,d i= fyf[k, ftle Økfrdkfj;k dh Hkfedk dk l{ki e o.ku gkA

## ;kX;rk foLrkj

1- Lor=rk vkUnkyu e cfynku nu oky 'kghnk d thou çlxk ij d{kk&d{k e ppk dhft,A

2- vktdy n'k e tgk ,d vkj uDlyokn g ogh nljh vkj vkrdokn o vyxkookn dh ?kVuk, Hkh n[ku&luu dk feyrh gA bu uDlfy;k] vkrdokfn;k o vyxkookfn;k vkj jk"V d fy, vkgfr nu oky Økfrdkjh d lxBu e D;k Qd gA ppk dj çe[k fopkjk dk fyf[k,A

3- vktkn u ukVk l Hkkjk tk chQd l dYiuk dk fn;k] og lxBu d dk;k d mi;kx d fy, ,df=r fd;k x;k /ku FkkA ml /ku dk vktkn u 0;fä fo'k"k d fgr d fy, fn;k FkkA mudk ;g dk; D;k mfpr Fkk\ viu fopkj rd lfgr fyf[k,A

5TSXY6

# पाठ 8

# भिखारिन

& x#no johUn ukFk Vxkj

5U2TZT

çLrr dgkuh ,d i=oRlyk fn0;kx fHk[kkfju d fo'okl d Ny tku vkj l?k"k dh lonu'khy jpuk gA x#no johUæukFk u ekuo pfj= d db ijrk dk bl dgkuh e lonu'khyrk d lkFk j[kk gA ,d fHk[kkfju viu thou dh leLr ith }kjk viu ikfyr i= dk jkxeä dju d fy, [kp djuk pkgrh g] yfdu lekt dk /kuoku vkj /ke de e çfl) lB mld Hkh[k l lfpr /ku dk ykVku e Ny djrk gA ^lrku dh igpku* dgkuh dk ,d fu.kk;d ekM nrh g vkj ikBdk dk ekuo pfj= dk le>u vkj igpkuu dk ck/k Hkh nrh gA ,d lB fHk[kkfju d ikok ij D;k fxj iMrk g \ og D;k ;g dgu dk foo'k g fd ^eerk dh ykt j[k yk] vkf[kj re Hkh rk mldh ek gkA* dgkuh dh ekfedrk dk ikBd bu ifä;k e f'kír l egll dj ldr g fd&^mld u=k l vJ cg jg Fk] fdUr og fHk[kkfju gkr g, Hkh lB l egku Fkh bl le; lB ;kpd Fkk vkj og nkrk FkhA*

v/kh ifrfnu efnj d njokt ij tkdj [kMh gkrh] n'ku djuoky ckgj fudyr rk viuk gkFk Qyk nrh vkj uerk l ckyrh&Þckc th] v/kh ij n;k gk tk;AÞ

og tkurh Fkh fd efnj e vkuoky lân; vkj n;ky gvk djr gA mldk ;g vueku vlR; u FkkA vku&tku oky nk&pkj il mld gkFk ij j[k gh nr FkA v/kh mudk nvk, nrh vkj mudh lân;rk dk ljkgrhA fL=;k Hkh mld iYy e FkkMk&cgr vukt Mky tk;k djrh FkhA

lcg l 'kke rd og blh idkj gkFk Qyk, [kMh jgrhA mld i'pkr eu&gh&eu Hkxoku dk i.kke djrh vkj viuh ykBh d lgkj >kiMh dh jkg idMrhA mldh >kiMh uxj l ckgj FkhA jkLr e Hkh og ;kpuk djrh

tkrh] fdUr jkgxhjk e vf/kd l[;k 'or oL= okyk dh gkrh] tk il nu dh vi{kk f>Mfd;k fn;k djr gA rc Hkh v/kh fujk'k u gkrh vkj mldh ;kpuk cjkcj tkjh jgrhA >kiMh rd igpr&igpr ml nk&pkj il vkj fey gh tkrA >kiMh d lehi igpr gh ,d nl o"k dk yMdk mNyrk&dnrk vkrk vkj mll fyiV tkrkA v/kh VVkydj mld efLr"d dk pe yrhA

cPpk dku g\ fdldk g\ dgk l vk;k\ bl ckr l dkb ifjfpr ugh FkkA ikp o"k g, ikl&iMkl okyk u ml vdyk n[kk FkkA bUgh fnuk ,d fnu l/;k le;] ykxk u mldh xkn e ,d cPPkk n[kk] og jk jgk FkkA v/kh mldk e[k pe&pedj ml pi dju dk i;Ru dj jgh FkhA ;g dkb vlk/kkj.k ?kVuk u Fkh] vr% fdlh u Hkh u iNk fd cPpk fdldk gA mlh fnu l og cPpk v/kh d ikl Fkk vkj ilUu FkkA mldk og viu l vPNk f[kykrh vkj igukrhA

v/kh u viuh >kiMh e ,d gkMh xkM j[kh FkhA fnuHkj tk dN ekxdj ykrh] mle Mky nrh vkj ml fdlh oLr l <d nrh] rkfd nlj 0;fä;k dh nf"V ml ij u iMA [kku d fy, vUu dkQh fey tkrk FkkA mll dke pykrhA igy cPp dk iV Hkjdj f[kykrh] fQj Lo; [kkrhA jkr dk cPp dk viu o{k l yxkdj ogh iMh jgrhA ikr%dky gkr gh mldk f[kyk&fiykdj fQj efnj d }kj ij tk [kMh gkrhA

dk'kh e lB cukjlh nkl cgr ifl) 0;fä FkA cPpk&cPpk mudh dkBh l ifjfpr FkkA o cgr cM noHkä vkj /kekRek FkA /ke ij mudh cMh J)k FkhA fnu d ckjg ct rd o Luku&/;ku e lyXu jgr FkA mudh dkBh ij gj le; HkhM yxh jgrh FkhA dt d bPNd rk vkr gh Fk] ijUr ,l 0;fä;k dk Hkh rkrk c/kk jgrk tk viuh ith lB th d ikl /kjkgj :i e j[ku vkr FkA ldMk fHk[kkjh viuh tek ith bUgh lB th d ikl tek dj tkr FkA vU/kh dk Hkh ;g ckr Kkr Fkh] fdr irk ugh fd vc rd og viuh dekb ;gk tek djku e D;k fgpfdpkrh jghA

mld ikl dkQh #i; gk x, Fk] gkMh yxHkx ijh Hkj xb FkhA mldk 'kdk Fkh fd dkb mldk pjk u yA ,d fnu l/;k le; v/kh u og gkMh m[kkMh vkj viu QV g, vkpy e Nikdj lB th dh dkBh ij tk igphA

lB th cgh[kkr d i"B myV jg FkA mUgku iNk] ÞD;k g] cf<;k \Þ

v/kh u gkMh mud vkx ljdk nh vkj Mjr&Mjr dgk&ÞlB th] bl viu ikl tek dj yhft,] e v/kh] vkfgt dgk j[krh fQ:xh \Þ

lB th u gkMh dh vkj n[kdj dgk&Þble D;k g\Þ v/kh u mÙkj fn;k& ÞHkh[k ekxdj viu cPp d fy, nk&pkj il bdVB fd, g( viu ikl j[kr Mjrh gA di;k bUg vki viuh dkBh e j[k yAÞ lB th u euhe dh vkj ldr djr g, dgk&ÞcgH e tek dj

ykAÞ fQj cf<;k l iNk&Þrjk uke D;k g \Þ v/kh u viuk uke crk;k] euhe th u udnh fxudj] mld uke l tek dj yhA v/kh lB th dk vk'khokn nrh gb viuh >kiMh e pyh xbA

nk o"k cgr l[kiod chrA bld i'pkr ,d fnu yMd dk Toj u vk nck;kA v/kh u nok&nk: dh] o|&gdhek l mipkj djk;k] ijr lEi.k i;Ru 0;Fk fl) g,A yMd dh n'kk fnu&ifrfnu cjh gkrh xbA v/kh dk ân; VV x;k( lkgl u tokc n fn;k( og fujk'k gk xbA ijr fQj /;ku vk;k fd lHkor% MkDVj d bykt l Qk;nk gk tk,A bl fopkj d vkr gh og fxjrh&iMrh lB th dh dkBh ij tk igphA lB th mifLFkr FkA

v/kh u dgk&ÞlB th] ejh tek ith e l nl&ikp #i; e> fey tk, rk cMh dik gkA ejk cPpk ej jgk g] MkDVj dk fn[kkÅxhAÞ

lB th u dBkj Loj e dgk&Þdlh tek ith \ dl #i; \ ej ikl fdlh d #i; tek ugh gAÞ v/kh u jkr g, mÙkj fn;k&Þnk o"k g,] e vkid ikl /kjkgj :i e j[kdj xb FkhA n nhft,] cMh n;k gkxhAÞ

lB th u euhe dh vkj jgL;e;h nf"V l n[kr g, dgk&Þeuhe th] tjk n[kuk rk] bld uke dh dkb ith tek g D;k \ rjk uke D;k g jh\Þ

v/kh dh tku e tku vkb] vk'kk c/khA igyk mÙkj ludj mlu lkpk fd ;g lB cbeku g fdr vc lkpu yxh fd lHkor% bl /;ku u jgk gkxkA ,lk /kekRek 0;fä Hkh Hkyk dgh >B cky ldrk g ! mlu viuk uke crk fn;kA euhe u lB th dk ldr le> fy;k Fkk] cgh d i"B myV&iyVdj n[kkA fQj dgk&Þugh rk] bl uke ij ,d ikb Hkh tek ugh gAÞ

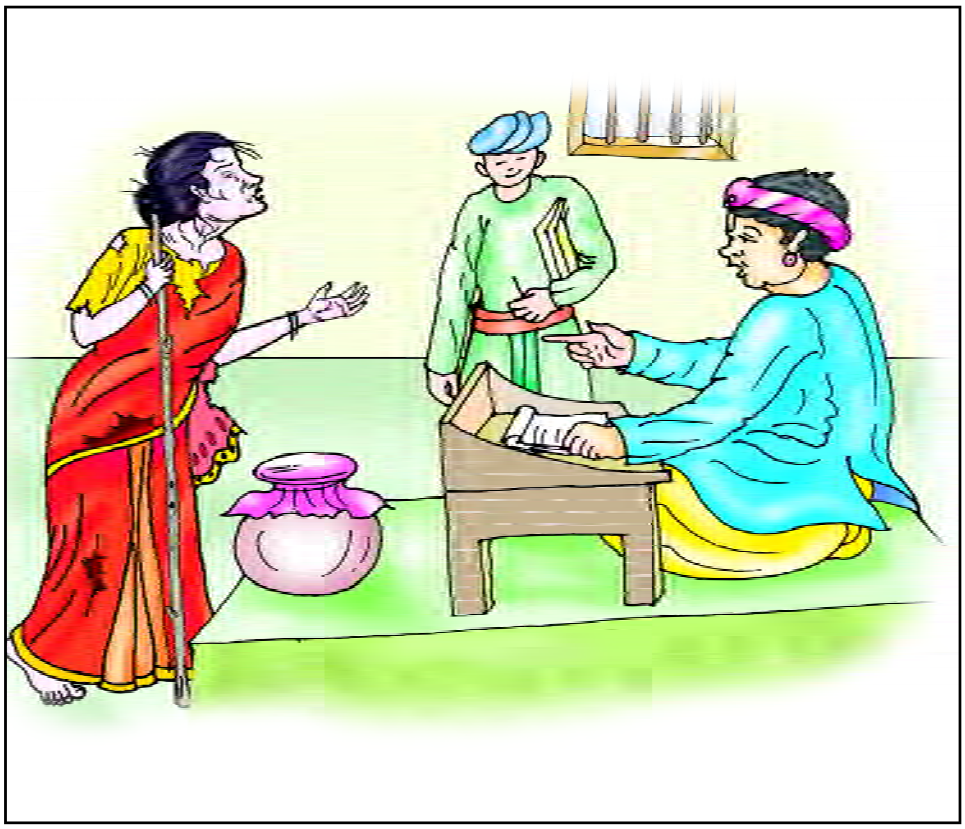

v/kh ogh teh cBh jghA mlu jk& jkdj dgk&ÞlB th ! ijekRek d uke ij] èke d uke ij] dN n nhft,A ejk cPpk th tk,xkA e thou Hkj vkid x.k xkÅxhAÞ

ijUr iRFkj e tkd u yxhA lB th u Ø) gkdj mÙkj fn;k&Þ tkrh g ;k ukdj dk cykÅAÞ v/kh ykBh Vddj [kMh gk xb vkj lB th dh vkj e[k djd ckyh& ÞvPNk! Hkxoku rEg cgr nAÞ vkj viuh >kiMh dh vkj py nhA

;g vk'kh"k u Fkh cfYd ,d nf[k;k dk Jki FkkA cPp dh n'kk fcxMrh xb] nok&nk: gb gh ugh] Qk;nk D;k dj gkrk\ ,d fnu mldh n'kk cMh fprktud gk xb] ik.kk d yky iM x,] mld thou l v/kh Hkh fujk'k gk xbA lB th ij jg&jgdj ml Øk/k vkrk FkkA bruk /kuh 0;fä g] nk&pkj #i; n gh nrk rk D;k pyk tkrk vkj fQj e ml l dN nku ugh ekx jgh Fkh] viu gh #i; ekxu xb FkhA lB th l ml ?k.kk gk xbA

cB&cB mldk dN /;ku vk;kA mlu cPp dk viuh xkn e mBk fy;k vkj Bkdj [kkrh] iMrh lB th d ikl igph vkj mud }kj ij /kjuk ndj cB xbA cPp dk 'kjhj Toj l HkHkd jgk Fkk vkj v/kh dk dytk HkhA

,d ukdj fdlh dke l ckgj vk;kA v/kh dk cBh n[kdj mlu lB th dk lpuk nhA lB th u vkKk nh fd ml Hkxk nkA

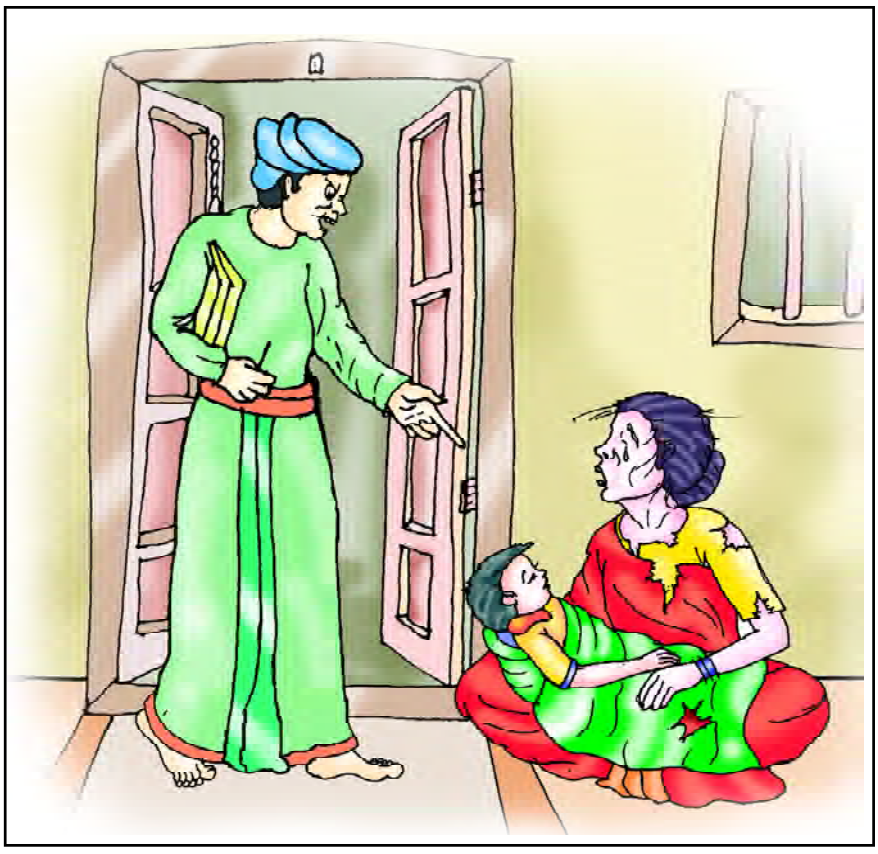

ukdj u v/kh dk py tku dk dgk] fdr og ml LFkku l u fgyhA ekju dk Hk; fn[kk;k] ij og Vl& l&el u gbA ukdj u fQj vnj tkdj dgk fd og ugh VyrhA

lB th Lo; ckgj i/kkjA n[kr gh igpku x,A cPp dk n[kdj mUg cgr vk'p; gvk fd mldh 'kDy&ljr] mud ekgu l cgr feyrh&tyrh gA lkr o"k g, tc ekgu fdlh ey e [kk x;k FkkA mldh cgr [kkt dh ij mldk dkb irk u feykA mUg Lej.k gk vk;k fd ekgu dh tk?k ij yky jx dk fpà FkkA bl fopkj d vkr gh mUgku vèkh dh xkn d cPp dh tk?k n[khA fpà vo'; Fkk] ijr igy l dN cMkA mudk fo'okl gk x;k fd cPpk mUgh dk ekgu gA mUgku rjr mldk Nhudj viu

dyt l fpiVk fy;kA 'kjhj Toj l ri jgk FkkA ukdj dk MkDVj yu dk Hk tk vkj Lo; edku d vnj py fn,A

v/kh [kMh gk xb vkj fpYyku yxh&þej cPp dk u y tkvk( ej #i; rk gte dj x,]vc D;k ejk cPpk Hkh e>l Nhukx \þ

lB th cgr fpfrr g, vkj cky&þcPpk ejk g( ;gh ,d cPpk g( lkr o"k io dgh [kk x;k FkkA vc feyk g] vc bldk ugh tku nxk vkj yk[k ;Ru djd Hkh bld ik.k cpkÅxkAþ

v/kh u tkj dk Bgkdk yxk;k&þrEgkjk cPpk g] blfy, yk[k ;Ru djd Hkh ml cpkvkxA ejk cPpk gkrk rk ml ej tku nr] D;k \ ;g Hkh dkb U;k; g \ bru fnuk rd [ku&ilhuk ,d djd mldk ikyk gA e mldk viu gkFk l ugh tku nxhAþ

lB th dh vthc n'kk FkhA dN djr&/kjr ugh curk FkkA dN nj ogh eku [kM jg] fQj edku d vnj py x,A v/kh dN le; rd [kMh jkrh jgh] fQj og Hkh viuh >kiMh dh vkj py nhA

nlj fnu ikrdky iHk dh dik gb ;k nok u viuk tkn dk lk iHkko fn[kk;k fd ekgu dk Toj mrj x;kA gk'k vku ij mlu vk[k [kkyh] rk lo iFke 'kCn mldh tcku l fudyk&^ek**A pkjk vkj vifjfpr 'kDy n[kdj mlu viu u= fQj cn dj fy,A ml le; l mldk Toj fQj vf/kd gkuk vkjEHk gk x;kA ek&ek dh jV yxh gb Fkh] MkDVjk u tokc n fn;k] lB th d gkFk&iko Qy x,] pkjk vkj v/kjk fn[kkb iMu yxkA

þD;k d:] ,d gh cPpk g\ bru fnuk ckn feyk Hkh rk eR; mldk viu pxy e nck jgh g( bl dl cpkÅ \þ

lglk mudk v/kh dk /;ku vk;kA iRuh dk ckgj Hk tk fd n[kk dgh og vc rd }kj ij u cBh gkA ijr og ;gk dgk \ lB th u ?kkMkxkMh r;kj djkb vkj cLrh l ckgj mldh >kiMh ij igpA >kiMh fcuk }kj d Fkh] vnj x,A n[kk fd v/kh ,d QV&ijku VkV ij iMh g vkj mld u=k l vJ/kkjk cg jgh gA lB th u /kh&l mldk fgyk;kA mldk 'kjhj Hkh vfXu dh Hkkfr ri jgk FkkA

lB th u dgk&þcf<;k ! rjk cPpk ej jgk g( MkDVj fujk'k gk x, g] jg&jgdj og r> idkjrk gA vc r gh mld ik.k cpk ldrh gA py vkj ej----------ugh] ugh viu cPp dh tku cpk yAþ v/kh u mÙkj fn;k&þejrk g rk eju nk] e Hkh ej jgh gA ge nkuk Lox&ykd e fQj ek&cV dh rjg fey tk,xA bl ykd e l[k ugh gA ogk ejk cPpk l[k

e jgxkA e ogk mldh lpk# :i l lok&lJ"kk d:xhAÞ lB th jk fn,A vkt rd mUgku fdlh d lkeu flj u >dk;k Fkk] fdUr bl le; v/kh d ikok ij fxj iM vkj jk&jkdj cky&Þeerk dh ykt j[k yk] vkf[kj re Hkh mldh ek gkA pyk] rEgkj pyu l og cp tk;xkAÞ

eerk 'kCn u v/kh dk fody dj fn;kA mlu rjr dgk&ÞvPNk pykAÞ

lB th lgkjk ndj ml ckgj yk, vkj ?kkMkxkMh ij fcBk fn;kA xkMh ?kj dh vkj nkMu yxhA ml le; lB vkj v/kh fHk[kkfju nkuk dh ,d gh n'kk FkhA nkuk dh ;gh bPNk Fkh fd 'kh?k&l&'kh?k viu cPp d ikl igp tk,A

dkBh vk xb( lB th u lgkjk ndj v/kh dk mrkjk vkj vnj y tkdj ekgu dh pkjikb d lehi mldk [kMk dj fn;kA mlu VVkydj ekgu d ekFk ij gkFk QjkA ekgu igpku x;k fd ;g mldh ek dk gkFk gA mlu rjr u= [kky fn, vkj ml viu lehi [kM g, n[kdj dgk&Þek] re vk xbAÞ

v/kh u Lug l Hkj g, Loj e mÙkj fn;k&Þgk cVk] rEg NkMdj dgk tk ldrh gAÞ v/kh fHk[kkfju ekgu d fljgku cB xb vkj mlu mldk flj viuh xkn e j[k fy;kA ekgu dk cgr l[k vuHko gvk vkj og mlh dh xkn e lk x;kA

nlj fnu l ekgu dh n'kk vPNh gku yxh vkj nl&ing fnuk e og fcYdy LoLFk gk x;kA tk dke gdhek d tk'kkn] o|k dh ifM;k vkj MkDVj dh nokb;k u dj ldh Fkh] og v/kh dh Luge;h lok u ijk dj fn;kA

ekgu d ijh rjg LoLFk gk tku ij v/kh u fonk ekxhA lB th u cgr dN dgk& luk fd og mUgh d ikl jg tk,] ijr og lger u gbA foo'k gkdj fonk djuk iMkA tc og pyu yxh rk lB th u #i;k dh ,d Fkyh mld gkFkk e n nhA v/kh u iNk] Þble D;k g\Þ

lB th u dgk&Þble rEgkjh /kjkgj g] rEgkj #i;A ejk og vijk/k----------Þ

v/kh u ckr dkVdj dgk&Þ;g #i; rk eu rEgkj ekgu d fy, gh bdVB fd, Fk] mlh dk n nukAÞ

v/kh u og Fkyh ogh NkM nh vkj ykBh Vdrh gb py nhA ckgj fudydj fQj mlu ml ?kj dh vkj u= mBk,A mld u=k l vJ cg jg Fk] fdr og fHk[kkfju gkr g, Hkh lB l egku FkhA bl le; lB ;kpd Fkk vkj og nkrk FkhA

# vH;kl

## ikB ls

1- fHk[kkfju çfrfnu efnj d njokts ij tkdj D;k [kM+h gks tkrh Fkh\

2- >kiM+h d leh igpr gh og fn0;kx fHk[kkfju fdl viu ân; l yxk yrh Fkh vkj D;k \

3- fHk[kkfju lB th d ikl viuh gkM+h tek dju dk ydj ij'kku D;k Fkh \

4- lB th dh /kekRek Nfo fHk[kkfju d eu l dc VV xbZ \

5- lB th u ekgu dk d l igpkuk \

6- þrEgkjk cPpk gj blfy, yk[k ;Ru djd Hkh mls cpkvkxA ejk cPpk gkrk rk mls ej tku nr] D;kßß\ ,l k fHk[kkfju u D;k dgk \

7- lB th dh eerk ekgu d çfr D;k meM vkbZ \

## ikB ls vkxs

1- ge /kkfed LFkyk ij tkr g ogk efnjk d ckgj Hkh[k ekxu okyk dh ,d drkj n[ku dk feyrh gA vki fe=k l ckr dhft, fd ykx Hkh[k D;k ekxr g \

2- ikB e fy[kk g fd lB vkj fHk[kkfju nkuk dh ,d gh n'kk FkhA vki fopkj dj fyf[k, fd nkuk dh ;g n'kk D;k Fkh\

3- dgkuh e lB d 0;fäRo dk dku lk igy vkidk çHkkfor djrk g\ fyf[k,A

4- ,d foiUu lh L=h }kjk Hkh[k ekx dj tek fd, x, /ku dk lB }kjk /kjkgj d #i e j[kuk vkj okil nu l bdkj djuk fdl çdkj d ekuoh; eY; dk lpd g \ lkfFk;k l ckr dj fyf[k,A

5- dgkuh d nkuk çe[k pfj=k e l vkidh nf"V e egRoi.k dku g \ ,d cV d :i e ';ke fdl vf/kd pkgrk g vkj D;k \

## Hkk"kk ls

1- ikB e bl rjg l fy[k x, 'kCnk dk nf[k,&

vku&tku] nk&pkj] FkkM+k&cgr] eu&gh&eu] mNyrk&dnrk] ikl&iM+ksl] pe&pedj 'kCnk d e/; ç;ä fpà ¼&½ dk ;ktd

fpà dgr gA ;ktd fpà dk ç;kx lkekfId ink ;k f}Ro vkj ;Xe 'kCnk d e/; fd;k tkrk gA blh rjg ryukRed ^lk*]*lh*]*l* d igy ;ktd fpà dk ç;kx gkrk gA ikB e vk, vU; ;ktd fpà oky 'kCnk dk [kkt dj fyf[k,A

2- ikB e ;g lUnHk vk;k g fd ÞcPpk&cPpkß mudh dkBh l ifjfpr FkkA bl ç;kx dk vFk g gj ,d cPpk ;k çR;d cPpkA blh çdkj vkneh] iM] iÙkk] eu 'kCn dk bl :i e Lor= :i l okD; e ç;kx dhft, fd budk fufgr vFk Li"V gk tk,A

3- lR;&vlR;] 'or&';ke] >kiMh& egy tl 'kCnk dk ç;kx ikB e gvk g tk ijLij foykse vFk dk vfHkO;ä djr gA fuEufyf[kr 'kCnk d foykse vFk dk lfpr dju oky 'kCnk dk << dj fyf[k, &l[k] çfl )] ifjfpr] i'pkr] dBkj] fcxkMuk] fujk'kk] cbeku] vk'kh"k] cgr] v/kjk] vifjfprA

4- fuEufyf[kr 'kCnk dk NÙkh lx<h Hkk"kk e çpfyr :i fyf[k,&

vk'khokn] lB] cPpk] lrku] cVk] njokt k] n;ky] efnj] >kiMh] çfl )] gkMhA

## ;kX; rk foLr kj

1- lkfp, fd lB th d LFkku ij vki gkr@gkrh rk D;k djr@djrh\

2- bl dgkuh dk ,dkdh e :ikUrfjr djd d{kk e mldk vfHku; dhft,A

3- ^n"V l n"V eu"; dk Hkh ân;&ifjoru lHko gA^ d{kk e bl fo"k; d i{k&foi{k ij viu fopkj idV dhft,A

4- ^dHkh&dHkh ,d gh dFku ;k ?kVuk lkjh thou/kkjk dk #[k eksM nrh gA dN vU; ?kVukvk ;k i lxk }kjk bl ckr dh if"V dhft,A

5- ;g dk'kh dh ?kVuk gA dk'kh dk vkj fdl&fdl uke l tkuk tkrk g \

# पाठ 9

# त्यागमूर्ति ठाकुर प्यारेलाल सिंह

&y[kd eMy

**gej lekt&n'k y tc dkuk cnyko d vko';drk gkFk r dkuk egki#"k d tue gkFkA vblu gej NÙkh lx< d etnj vÅ fdlku d n[k ihjk y gj cj viu ftuxh y [kokj dj;k i- lnj yky 'kek] ohj ukjk;.k flg] M,- [kcpn c?ky] i- jfo'kdj 'kDy tblu egki#"k eu gkbuA R;kxefr Bkdj l;kjyky flg jfgu tu bgk d fdlku vm etnj d [k'kh d dkj.k viu ftUnxh y nko ij yxk fnuA**

db tx y vk eu y ljrk dj tkFk tu g lekt vm n'k [kkfrj viu lc dN fuNkoj dj nFkA vk eu viu ftuxh d iy&fNu y lekt d fujeku e yxk nFkA vk eu lekt y dN ub yo;] flfjQ n cj tkuFkA vblu R;kxh i#"k njyHk gkFkA Bkdj l;kjyky flg oblu njyHk i#"k e ,d >u fjfguA

NRrh lx< d lx&lx tEek n'k d dY;ku [kkfrj vk eu tu cfynku dfju vkdj lrh vk eu y ftr&ft;r e R;kxefr dg tk; ykfxlA

NRrh lx< jkt d fujeku [kkfrj t>b;k ifgyh urk eu e Bkdj l;kjyky flg d uko cM lEeku d lkFk fy; tkFkA Bkdj lkgc y NRrh lx< d ;x i#'k e ?kyk fxu tkFkA vk eu fdlku]e tnj]cfugkj eu y ldy d mdj vf/kdkj d j{kk cj vxjth ljdkj d lx yMkb yfMu vm db cj ty xbuA

Bkdj l;kjyky flg d tue 21 fnlcj 1891 e jktuknxko d nbgku xko d Bkdj nhun;ky flg d ?kj e gk; fjfglA bdj ekrk th d uko Jherh ujenk noh fjfglA

Bkdj lkgc tc 16 lky d fjfgu r mdj fcgko jk;ij d Bkdj Hkxoku flg d cVh xkerh noh d lx dj n fxlA jk;ij d ljdkjh gkbLdy ¼vc 'kkldh; cgmnn'kh; mPprj ek/;fed 'kkyk½ y efVd d ijh{kk ikl dfju rdj ikN ukxij d fgLyki dkyt y bVjehfM;V dfjuA bgh chp e firk th d vpkud ngko lu gk tk; d dkj.k mdj i<b e ck/kk vk xA bgh dkj.k vk eu ?kj ygVx Qj vkx lk< d mdj bPNk cu fjfglA

Bkdj l;kjyky flg [kcp xuoku fjfgu]vkeu ch-,- d ijh{kk ikl djd bykgkckn fo'ofo|ky; y 1916 e odkyr d ijh{kk ?kyk ikl dfju A i<b d lx&lx [kydn e mdj eu fulfnu yx jg;A tu f[kykMh Hkkouk mdj [ky&thou e iufil vk g lkotfud thou e ?kyk cu jfglA tbl [ky d enku e th&tku y yx jg;]okb lup jktuhfr e ?kyk te d MV jg; vm vktknh d ikN turk d fgr d j{kk cj fnu jkr yx jg;A

vxjth 'kklu dky e n'k d Lon'kh vknkyu d ygj py jfglA Bkdj lkgc jktuknxko e Lon'kh vknkyu e 'kkfey gk xbuA vm jktuknxko d lx&lx rhj&r[kkj d xko e ?kyk jk"Vh; pruk d fcLrkj d dke 'k: dj fnuA

^on ekrje* jk"Vh; ,drk vm pruk d xhr cux fjfglA Bkdj lkgc i<b;k ybdkeu d Vkyh cuk d ^on ekrje* d ukjk yxko;A

dkuu d i<kb ijk dj d ikN 1916 e vk eu odkyr 'k: dj fnuA odkyr y vk eu lekt lok d jnnk cukbuA xjhc vm detkj eu[k eu y fu;ko nok; cj [kcp dke

dj;A jktuknxko d ch-,u-lh-fey d etnj eu y gd nok; cj Bkdj l;kjyky g 1920 e lck etnj y ,dtV djd gMrky djk fnuA fey etnj eu d ekx ijk gk; d ikN vknkyu [kre gkblA ; g n'k e lgh <x y pyk; x lxfBr etnj eu d ifgyh lc y yck gMrky jfgl] tu g 36 fnu y pfylA

1920 e dkxl g vxjth 'kklu d fojk/k e vlg;kx vknkyu 'k: dj fnlA ; e Bkdj l;kjyky flg ?kyk dn xA xk/kh th d dguk e vk eu 4 lky y ljyx odkyr ub dfjuA ; le; e Bkdj lkgc g jktuknxko d rhj&rdkj e tu&tkxju d [kc dke dfju] vm jktuknxko e jk"Vh; fo|ky; [kkfyuA[kknh d egRre d ipkj dj cj Bkdj lkgc [kn pj[kk pyko; vm nlj eu y ?kyk fl[kko;A

jk;ij g vktknh d yMb d cM tu t?kk cux fjfglA bgk Bkdj lkgc d i-ek/kojko li]i-jken;ky frokjh vm ckc ekoyh ilkn JhokLro tbl db >u n'kHkDr lkfgR;dkj eu y ey&feyki gkblA

xk/kh th d vxob e tc 1930 e vxjt eu d fojk/k e lR;kxg 'k: gkbl r Bkdj lkgc ru&eu&/ku y vke tMxA NRrhlx< e ; eu vknkyu d ie[k urk jfguA /kerjh d cuoklh eu y mdj gd nok; [kkfrj vm vxjth ljdkj y yxku ub n d efge ?kyk 'k: dfju]; g vxjth ljdkj y lh/kk yydkjuk fjfglA ,dj lrh Bkdj lkgc y ,d lky d ltk gkblA

26 tuojh]1932 d fnu jk;ij d xk/kh pkd e Bkdj l;kjyky flg g cgr dMd Hkk"kk e Hkk"k.k fnu] rdj lrh vk eu y idM y fxl vm n lky d ltk luk; fxlA mdj ljh

lEifRr y ljdkj g ddh dj fylA vk eu y vm tknk ltk n [kkfrj mdj odkyr d lun ?kyk tir dj y fxlA

lu 1933 y 1937 rd Bkdj l;kjyky flg egkdk'ky ikr dkxl deVh d lfpo jfguA bgh le; e vk eu db Bu ;ktuk cukbuA vNr eu d m)kj cj dke dfjuA fgUn&e lyeku Hkkbpkjk [kkfrj ?kyk dke dfjuA jk;ij e vk eu ekfeu cudj eu y ,dtV djd muyk cu etnjh nok; d dke dfjuA xhrk vm djku nuk d Bkdj lkgc fo}ku jfguA viu ; fx;ku d mi;kx vk eu lekt e rkyey c<k; cj djr jg;A

in'k dkxl d egke=h jgr le; Bkdj lkgc ifgyh cj 1936 e e/;in'k fo/kku lHkk d lnL; pu fxuA NŸkh lx< vm l;Dr e/;in'k d lc y tknk tu urk eu e bdj uko fxu tk;A vk eu rhu cj jk;ij uxjikfydk d v/;{k vm n cj fo/kk;d pu fxuA

vk le; d lh-ih-cjkj e tc dkxl d vrfje ljdkj cful r Mk-[kj d e=heMy e Bkdj lkgc f'k{kk e=h cfuuA NŸkh lx< ,tid'ku lkIk;Vh d LFkkiuk bdj vxob e dj fxl tu g NŸkh lx< dkyt 'k: dfjlA vk g NŸkh lx< d ifgyh egkfo|ky; jfglA vkt ; g in'k d ie[k egkfo|ky; go;A

NŸkh lx< e lgdkfjrk vknkyu d fodkl dj e Bkdj l;kjyky flg g Hkkjh lg;kx nbuA 6 tykb 1945 e vk eu NRrh lx< cudj lgdkjh l?k d uho jf[kuA xjhc]etnj]fdlku vm vkfnokIh eu d vk eu efDrnr cux jfguA Bkdj lkgc d R;kxh]riLoh vm tuurk d ,d Bu xtc :i jfglA Hkfeghu][kfrgj etnj y HkLokeh cuk; d iju d lx vkpk; foukck Hkko d Hk&nku Økfr d Bkdj lkgc flikgh cuxA vk eu tu xko e tko; Ågk ekyxtkj vm cM fdlku eu viu tehu d fgLlk nku dj no;A bgh Hk&nku d 2200 ehy d yck ;k=k e tcyij d rhj e Bkdj l;kjyky flg 'kghn gkxA

Bkdj lkgc vtknh cj thou Hkj yMkb yfMu vm vtknh fey d ikN jktdkt lEgky y NkM d lekt d fujeku e yx xA

mdj thou vm mdj dkedkt db ih<h y jnnk n[kkor jbghA

## NRrhlx<h 'kCn eu d fgUnh vFk

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| Lkjrk | ¾ | ;kn | ldy d | ¾ | bdVBk djd |
| ygV x | ¾ | okil vk x, | rhj&rdkj | ¾ | vkl&ikl |
| fu;ko | ¾ | U;k; | ljyx | ¾ | yxkrkj |
| dMd | ¾ | dMh]dBkj | vxokb | ¾ | urRo |
| ekyxtkj | ¾ | cMk fdlku]xkfV;k | rhj | ¾ | ikl |
| mdj | ¾ | mudk | jbgh | ¾ | jgx |
| lun | ¾ | iek.k i= | | | |

# vH;kl

## ikBl s

1- Bkdj l;kj yky flg g odkyr y lekt lok d jnnk dbl cukbl \

2- NÙkh lx< jkt d fujeku [kkfrj t>b;k urk Bkdj l;kj yky y dkcj dg xg \

3- Bkdj l;kjyky g i<kb e ck/kk vk; d ckn Hkh vkx d i<kb dbl dfjl \

4- Bkdj l;kjyky Lon'kh Hkkouk y dgk&dgk rd c<kbl vm vkdj turk e dk&dk ijHkko ifjl\

5- Hk&nku vknkyu d dk eryc gkFk] vm l;kjyky d Hk&nku vkUnkyu e dk ;kxnku jfgl \ fy[koA

6- f'k{kk d {k= e Bkdj lkgc d dk ;kxnku jfgl\

## ikBl svkls

1- f[kykMh Hkkouk d dk vFk gkFk vm okdj viu thou e dbl ç;kx dj tk ldFk\ d{kk e leg e ppk dj d fy[koA

2- Bkdj l;kjyky tblu NÙkh lx< d dku&dku urk jfgu\ okdj vktknh e dk&dk ;kxnku jfgl\ f'k{kd vm lkFkh l tkudkjh çkIr djoA

3- Bkdj lkgc tu lok d vCcM dke dfjuA tu lok d dk eryc gkFk\ r eu y tu lok d ekdk feygh r dk&dk djg\ lxokjh eu lu ckr dj fy[koA

4- NÙkh lx< e vlg;kx vkUnkyu e Hkkx yob;k vm vknkyudkjh eu d uke y [kkt d fy[koA

## Hkkkl s

1- ikB e ^t>b;k* 'kCn ij f/k;ku noo] ; ^'kCn* t>uk fØ;k e b;k çR;; d tkM y cful ^t>b;k*A

r eu ikp fØ;k 'kCn e ^b;k* çR;; yxkd uok 'kCn cuoko vm viu okD; e ç;kx djoA

2- ikB e rhj&r[kkj lCn vk; gkoA rhj lCn g lkFkd lCn vk;A ,dj vFk g ^utnhd* ;k ikl@Qj r[kkj lCn d dkuk vFk ub fudyA nuk lCn d l?kjk ç;kx dj y lCn&;Xe cu tkFkA vm ,dj vFk fudyFk vkl&iklA vblu <x d ;Xe lCn g pk;&ok;A* lCn&;Xe d ikp lCn lkp d fy[ko vm vkyk viu okD; e ç;kx djoA

67RHPL

3- [kkYg fy[kk; lCn eu d mYVk vFk okyk lCn fy[ko&

ljrk] dMd] fujeku] njyHk] Lon'kh] fu;ko] ifgyh] rhj&r[kkjA

## ; kX; rk foLrkj

1- NÙkhlx< d vm Lor=rk lukuh eu ¼i- ek/ko jko lç] i- jke n;ky frokjh½ d thouh [kkt d i<oA

2- Lor=rk lukuh eu d thou y geu yk dk çj.kk feyFk \ lxokjh eu lu ckr dj fy[koA

681DR9

# पाठ 10

# सितारों से आगे

& y[kdeMy

,d lkekU; lh ncyh&iryh djuky ¼gfj;k.kk½ dh fcfV;k] viuh çfrc)rk vkj lkgl l bruk dN djrh jgh tk Hkkjr dh gh ugh fo'o dh cfV;k e viuh igpku dk;e dj ldhA ekrk&firk dh pkFkh lrku dYiuk pkoyk cpiu l u{k= ykd dk ?kVk fugkjk djrh FkhA og ,d vUrfj{k&;k=h d :i e Lil lVy ^dkyfEc;k^ e cBdj vrfj{k d x< jgL; [kkyu dh ;k=k ij FkhA tku tkf[ke e Mkyu okyh bl ;k=k e ;g lp g og viuk tku xok cBh ij ,d thor bfrgkl vo'; jp MkyhA cpiu d bl oä0; dk mlu viuk cfynku ndj lkfcr fd;k fd ^tk dke yMd dj ldr g og e Hkh dj ldrh gA*

1 Qjojh 2003] fo'o d ykx viu&viu Vyhfotu lV ij vk[k xMk, g, FkA vefjdk e ¶ykfjMk d di duojy vrfj{k dn d ckgj n'kdk dh HkhM FkhA lcdh vk[k vkdk'k dh vkj yxh FkhA volj Fkk dkyfc;k 'kVy d iFoh ij ykVu dkA Hkkjr d ykx Hkh vkrjrk l Vh- oh- ij cB bl n'; dk n[k jg FkA mudh vkrjrk dk dkj.k ;g Hkh Fkk fd bl vrfj{k vfHk;ku e Hkkjr dh cVh] bdrkyhl o"kh;k dYiuk pkoyk Hkh 'kkfey FkhA mld ifjokj d ykx rk ¶ykfjMk e gh viuh cVh d ykVu dh irh{kk dj jg FkA ;gk Hkkjr e mld uxj djuky e mlh d fo|ky;&Vxkj cky fudru& d yxHkx rhu lk Nk=&Nk=k, viu fo|ky; dh io Nk=k] dYiuk pkoyk d vrfj{k l ld'ky okil ykVu dk mRlo d :i e euku d fy, ,d= g, FkA

idfr d jgL;k dk [kktu e tku dk tkf[ke jgrk gh gA ,ojLV fot; dju e ntuk iorkjkfg;k u viuh tku xokb gA mÙkjh /ko vkj nf{k.kh /ko dh [kkt e Hkh vud lirk u viu cfynku fd, gA ;gh fLFkfr vrfj{k vfHk;ku dh Hkh gA tc rd vfHk;ku ijh rjg lQy u gk tk,] rc rd vrfj{k ;kf=;k] vrfj{k dn d lpkydk] n'kdk d ân; e

/kd/kdh yxh jgrh gA ml fnu Hkh di duojy e ikrh 9 ct n'kdk dh lkl Åij dh Åij jg xbA iFoh d ok;eMy e io'k d lkFk gh dkyfc;k 'kVy dk lid vrfj{k dn l VV x;kA lglk dN feuVk d ckn VDlkl d Åij ,d tkjnkj /kekdk lukb fn;kA áLVu deku dn e ?kcjkgV Qy xbA dkyfc;k Lil 'kVy e lokj lHkh lkrk vrfj{k ;kf=;k d 'kjhj d fpFkM&fpFkM gkdj vefjdk dh Hkfe ij ;gk&ogk fc[kj x,A Hkkjr u ml fnu viu TkkToY;eku u{k=] dYiuk pkoyk] dk [kk fn;kA lep n'k e] fo'k"k : i l djuky e] 'kkd dh ygj nkM xbA Vxkj cky fudru e vk;kftr gkuokyk mRlo] 'kkd&lHkk e ifjofrr gk x;kA bl gknl l ,d vjc l vf/kd n'kokfl;k d pgj ej>k x,A djuky dh ;g foy{k.k cVh lQyrkiod ,d ;k=k ijh dj pdh Fkh] yfdu nljh ;k=k e ogh ncyh&iryh yMdh viuh e/kj eLdku vkj n< ldYi d lkFk viu liuk dk lkdkj u dj ikbA dYiuk d thou dh ;g dgkuh djuky l ikjEHk gb vkj vrfj{k e lekIr gbA vkvk] bl dgkuh dk ikjHk n[kA

cukjlh nkl pkoyk Hkkjr foHkktu d ckn ikfdLrku l Hkkjr vkdj djuky e cl FkA lu 1961 e ;gh dYiuk dk tUe gvk FkkA cukjlhnkl pkoyk dh ;g pkFkh lrku FkhA ekrk&firk viuh nykjh cVh dk ekV dgr FkA f'k{kk d {k= e ekV dk ifjokj dkQh vkx FkkA ekV dh Ldyh f'k{kk djuky d Vxkj cky fudru e gh gbA xeh d fnuk e jkr dk [ky vkleku e rkjkx.kk dh vkj fugkjrh gb dYiuk u{k=&ykd e igp tkrh FkhA 'kk;n ;gh l ml vrfj{k&;k=k dh l>h FkhA

tkx#d firk u viuh l;kjh cVh ekV dh #fp dk Hkki fy;k Fkk vkj tc og vkBoh d{kk e Fkh] rHkh ml igyh mMku djkb FkhA ,Vl dh ijh{kk mÙkh.k djd dYiuk u bthfu;fjx dh i<kb 'k: dhA bthfu;fjx e mlu vrfj{k fo"k; fy;kA pMhx< d ioh itkc bthfu;fjx egkfo|ky; e ml le; rd ,;jkukfVd foHkkx e de Nk=&Nk=k, gh nkf[kyk yr FkA Nk=kvk dk ifr'kr rk vkj Hkh de jgrk FkkA dkyt e i<r le; dYiuk nÙkfpÙk gkdj viuk dkl rk r;kj djrh gh Fkh] lkFk gh dkyt d lHkh fØ;kdykik e Hkh Hkkx yrh FkhA og vDlj dgrh Fkh & **tk dke yMd dj ldr g] og e Hkh dj ldrh gA^^

dYiuk dk tc ,;jkukfVDl dh fMxh fey xb] rc mlu viuh vkx dh i<kb vefjdk e dju dk eu cuk;kA ml ogk io'k Hkh fey x;kA ogh mldk ifjp; thu fi;j l gvkA fnlEcj 1983 e o nkuk fookgl= e c/k x,A

fookg d mijkr Hkh dYiuk u vrfj{k e mMu dk viuk /;; vVy j[kkA ,d fnu ml VfyQku ij ukl k l lekpkj feyk&^ge [k'kh gkxh ;fn vki ;gk vkdj ,d vrfj{k ;k=h d :i e vrfj{k dk;'kkyk e Hkkx yA^ dYiuk d fy, rk ;g euekxh ejkn ijh gkuk FkkA ukl k }kjk vrfj{k&;k=k d fy, pu tku dk xkjo fcjy gh ykxk d HkkX; e gkrk gA

6 ekp 1995 l dYiuk dk ,do"kh; if'k{k.k dk;Øe ikjHk gvkA rjg&rjg dh if'k{k.k i.kkfy;k d }kjk bu vrfj{k ;kf=;k dk r;kj dju e db eghu yx tkr gA dYiuk dk bl vof/k e tk mÙkjnkf;Roi.k dk; lki tkr Fk] og mUg ijh fu"Bk l djrh FkhA

19 flrEcj 1997 dk ,l Vh ,l 87 d vfHk;ku ny d lnL;k dk ijh{k.k gvkA bue dN ijku vuHkoh lnL; Fk rk dN u, Hkh FkA dYiuk dk ;g igyk vfHk;ku FkkA mMku l igy vrfj{k ;k=h viu&viu ifjtuk l feyA bld ckn lc ,d&,d djd vrfj{k&;ku e lokj g,A vrfj{k&;ku 17500 ehy ifr ?kV dh xfr l mMkA dYiuk d fy, bruh Åpkb l fo'o dh >yd n[k ikuk ,d noh dik d leku FkkA ;g ;ku l=g fnuk rd vrfj{k e ?kerk jgk vkj vrfj{k ;k=h viu i;kx djr jgA vrr% 'kØokj ikr% 6 ct vrfj{k&;ku duMh vrfj{k dn ij mrjkA n'kd nh?kk e cB vrfj{k&;kf=;k d ifjokj d ykxk u ;ku d ld'ky okil ykV vku ij b'oj dk /kU;okn fn;kA

bl mMku e mixg vkj dl;Vj i.kkyh e dN xMcMh vk xb FkhA bl xMcMh dk nk"k dYiuk ij yxk;k x;kA tkp ny d lkeu dYiuk u fuHkkd gkdj viuh ckr dghA dYiuk d rd l lger gkdj tkp ny u ml i.k :i l nk"keDr dj fn;kA vr% ml bld ckn nlj vfHk;ku d fy, Hkh puk x;kA nlj vfHk;ku dh frfFk 16 tuojh 2003 fuf'pr dh xbA bl vfHk;ku dk e[; mnn'; Hkkfrd fØ;k dk v/;;u djuk Fkk ft l l cnyr ekle ,o tyok; dk Kku lyHk gk ldA

viu fu/kkfjr le; ij ;g vfHk;ku pykA bl vfHk;ku e dYiuk viu lkFk lxhr dh db lhMh y xb FkhA bl vfHk;ku e vud /kek d vrfj{k ;k=h Hkkx y jg Fk vkj ogk lo/ke leHkko dk ekgky cu x;k FkkA dYiuk le;≤ ij lhMh d xku ludj rjkrk tk gk tkrh FkhA Lil 'kVy viu fu/kkfjr dk;Øe] fu/kkfjr le; e ijk djd okil iFoh dh vkj vk jgk FkkA rHkh 1 Qjojh 2003 dk og dkyk fnu vk;k tc Lil 'kVy rFkk mle lokj lkr vrfj{k&;kf=;k d 'kjhj d {kr&fo{kr vx vefjdk dh /kjrh ij b/kj&m/kj fc[kj x,A lEi.k fo'o e bl n?kVuk l 'kkd dh ygj Qy xbA

dYiuk dk tUe vkj thou lkekU; t lk gh Fkk fdUr mldh miyfC/k;k vlkekU; FkhA og lnk ub tkudkjh] u, vuHko] u, peRdkj djuk pkgrh FkhA lkj fo'o d cPpk d fy, mldk ;gh ln'k Fkk& ^viu fo'okl d /kjkry l vkx c<dj pyk] rHkh vlHko dk lHko cuk;k tk ldrk gA^ dYiuk d blh ln'k dk thor j[ku d fy, mld ifjokj u ^ekV; QkmM'ku^ dh LFkkiuk dh g] ft ldk mnn'; g ifrHkkoku uo;odk vkj uo;ofr;k dk] ftUg /kukHkko d dkj.k mPp f'k{kk l ofpr gkuk iMrk g] fo'ofo|ky; dh f'k{kk ikIr dju e lgk;rk djukA

## vH;kl

### ikBl s

1- fo'o d ykx Vyhfotu ij vk[k D;k xMk, g, Fk \

2- Vxkj cky fudru djuky d cPp fdldk vkj D;k brtkj dj jg Fk\

3- fo'o e 'kkd dh ygj D;k nkM xb \

4- dYiuk [ky vkleku dk D;k fugkjrh Fkh \

5- dYiuk dk vVy /;; D;k Fkk \

6- ^^tk dke yMd dj ldr g og e Hkh dj ldrh g**] dYiuk pkoyk ;g D;k dgrh Fkh\

7- ekVî QkmM'ku dk mí'; D;k g \

### ikBl svkxs

1- dYiuk pkoyk dk Hkkjr dh cVh D;k dgk x;k g\ bl fo"k; ij vki viu f'k{kdk d lkFk ppk dj mudh fo'k"krkvk dk fyf[k,A

2- cpiu e vkdk'k dk fugkjr&fugkjr 'kk;n dYiuk u viu y{; dk r; dj fy;k FkkA vki Hkh viu y{;k d ckj e fy[k dj d{kk e lukb,A

3- dYiuk dk ekuuk Fkk fd tk dke yMd dj ldr g og e Hkh dj ldrh gA vki d{kk e ppk dj fyf[k, fd thou dk ,lk dku lk {k= g tgk yMfd;k dk; ugh dj ldrhA

4- ,;jkukfVDl bthfu;fjx] bthfu;fjx dk dku lk {k= g vkj ble fdl fo"k; dh i<kb gkrh g \ f'k{kd vkj lkfFk;k l ckrphr dj fyf[k,A

## Hkk"kk l s

1- fuEufyf[kr lekukFkZd 'kCnksa dk bl çdkj okD;ksa esa ç;ksx dhft,] ftlls mudk vFkZ Li"V gks tk,&

**lkgl@lglk] ifj.kke@ifj.kke.k] fnu@nhu] vi{kk@mi{kk] 'or@Lon] vu@v.kA**

2- ikB esa fuEukafdr egkojksa dk ç;ksx gqvk gSA okD;ksa esa Lor= #i ls mudk bl rjg iz;ksx dhft, fd mudk vFkZ Li"V gks tk,&

**vk[ks xMkuk] vk[ks vkdk'k dh vkj yxkuk] cfynku nuk] lkl Åij dh Åij jg tkuk] 'kkd dh ygj nkMuk] eu ekxh ejkn iwjh gksukA**

3- ikB esa vkrjrk] lQyrk] çe[krk]vlekurk tSls 'kCnksa dk ç;ksx gqvk gS ftuesa ey 'kCn d lkFk ^rk^ çR;; dk ç;ksx gqvk gSA vki ^rk* çR;; dk tksMrs gq, nl 'kCnksa dk fuekZ.k dhft, A

## ;ksX;rk foLrkj

1- L=h 'kfä d :i esa Hkkjr dk uke fofHkUu {ks=ksa esa jks'ku djus okyh ukfj;ksa dh lwph cuk,, vkSj d{kk esa mu ij ppkZ dhft,A

2- Hkkjr dh çFke efgyk ,ojsLV fotsrk cNsUæh iky dh thouh [kkst dj if<,A

●●●

पाठ 11

# कोई नहीं पराया

– श्री गोपाल दास 'नीरज'

69BSZH

प्रस्तुत कविता मनुष्य–मनुष्य के बीच के बंटवारे, विभेद, जाति, लिंग, धर्म, रंग, वर्ण जनित विभिन्न तरह की संकीर्णताओं पर मन में सवाल खड़ा करता है। कवि प्रस्तुत कविता के जरिए धर्म और जाति से जुड़ी तमाम नफ़रत की दीवारों को गिराने का आह्वान करते हैं। कवि एकता का संदेश देते हुए कहते हैं कि उसका आराध्य मनुष्य मात्र है और हर इंसान का घर उसके लिए देवालय है। कवि स्पष्ट कहते हैं कि इस संसार में कोई पराया नहीं है सब ईश्वर की संतान हैं।

ईश्वर को लोग अपनी समझ और सन्दर्भ से अल्लाह, गॉड, राम, रहीम कहते हैं। जिस तरह से फूल और बाग की शोभा पहले है, डाल की शोभा बाद में है, वैसे ही विश्व की शोभा पहले है और मनुष्य,जाति, प्रान्त अथवा राष्ट्र की शोभा बाद में है। इस तरह से कवि "वसुधैव कुटुम्बकम" के सहज संदेश को कविता के जरिए सम्प्रेषित करते हैं।

कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है।
मैं ना बँधा हूँ, देश–काल की जंग लगी जंजीर में,
मैं ना खड़ा हूँ जात–पाँत की ऊँची–नीची भीड़ में,
मेरा धर्म ना कुछ स्याही–शब्दों का सिर्फ गुलाम है,
मैं बस कहता हूँ कि प्यार है तो घट–घट में राम है,
मुझसे तुम ना कहो मंदिर–मस्जिद पर सर मैं टेक दूँ,
मेरा तो आराध्य आदमी, देवालय हर द्वार है।
कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है।।

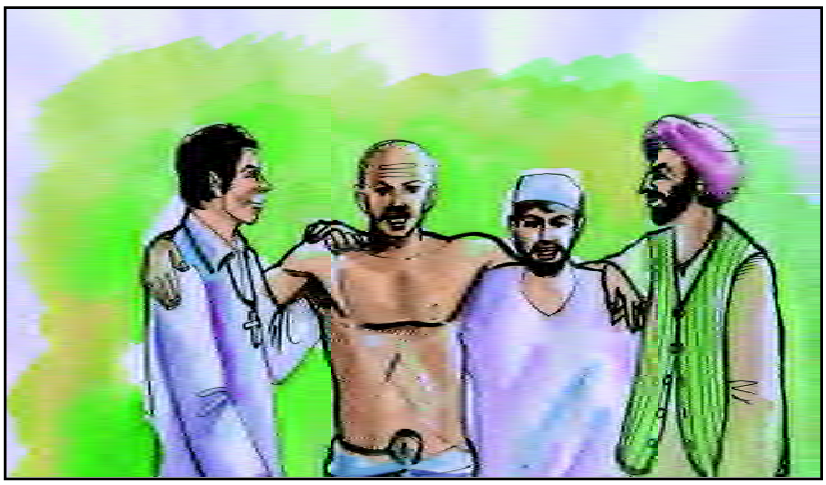

कहीं रहे कैसे भी मुझको प्यारा यह इंसान है,
मुझको अपनी मानवता पर बहुत–बहुत अभिमान है,
अरे नहीं देवत्व, मुझे तो भाता है मनुजत्व ही,
और छोड़कर प्यार नहीं स्वीकार, सकल अमरत्व भी,
मुझे सुनाओ तुम न स्वर्ग–सुख की सुकुमार कहानियाँ,
मेरी धरती सौ–सौ स्वर्गों से ज्यादा सुकुमार है।
कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है।।
मैं सिखलाता हूँ कि जिओ और जीने दो संसार को,
जितना ज्यादा बाँट सको तुम बाँटो अपने प्यार को,
हँसो इस तरह, हँसे तुम्हारे साथ दलित यह धूल भी,
चलो इस तरह कुचल न जाए पग से कोई फूल भी,
सुख न तुम्हारा सुख, केवल जग का भी इसमें भाग है,
फूल डाल का पीछे, पहले उपवन का शृंगार है।
कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है।।

## अभ्यास

### पाठ से

1. कवि को मानवता पर क्यों अभिमान है ?
2. जात–पाँत के बंधनों ने मानवता को क्या हानि पहुँचाई है ?
3. स्वर्ग–सुख की सुकुमार कहानियों को कवि क्यों नहीं सुनना चाहता है ?
4. कवि संसार को क्या सिखाना चाहता है ?
5. जंग लगी जंजीर किसे और क्यों कहा गया है ?
6. धर्म को कवि ने कुछ स्याह शब्दों का गुलाम क्यों कहा है ?

## पाठ से आगे

1. कवि देवत्व और अमरत्व के स्थान पर मनुजत्व को स्वीकारने की बात क्यों करता है ?
2. कविताएँ सभी जाति और धर्म में प्यार और सद्भाव का संदेश देती हैं, परन्तु हमारे समाज में ऐसा देखने को क्यों नहीं मिलता? साथियों से बात कर अपनी समझ को लिखिए।
3. कवि के मनोभावों को सार्थक करते हुए अगर हर व्यक्ति संसार को अपना घर मानने लगे तो हम जिस समाज में रहते हैं उस समाज की दशा/स्थिति कैसी होगी? चर्चा कर लिखिए।
4. कवि बनावटी दुनिया को छोड़कर वास्तविक जीवन में मिल–जुलकर रहने पर जोर दे रहा है। यहाँ बनावटी दुनिया और वास्तविक जीवन से आप क्या समझते हैं लिखिए।
5. आप विचार कर लिखिए कि मनुष्य–मनुष्य के बीच नफ़रत की दीवारों को कौन खड़ा करता है, और इस संदर्भ में हमारी क्या भूमिका होनी चाहिए?

## भाषा से

1. पाठ में आए हुए निम्नलिखित शब्दों को ध्यान से देखिए –

   मैं, जंग, बाँट, जंजीर, हँसना, बँधा, ऊँची, मंदिर, संसार, इंसान, कहानियाँ

   ये शब्द अनुस्वार और चन्द्रबिन्दु के प्रयोग के कारण अनुनासिक कहे जाते हैं। अनुनासिक स्वर की ध्वनि मुख के साथ–साथ नासिका द्वार से निकलती है अतः अनुनासिक को प्रकट करने के लिए शिरोरेखा के ऊपर बिंदु या चंद्र बिंदु का प्रयोग करते हैं। (शब्द या वर्ण के ऊपर लगाई जाने वाली रेखा को शिरोरेखा कहते हैं)।

   बिंदु या चंद्रबिंदु को हिंदी में क्रमशः अनुस्वार और चंद्रबिन्दु कहा जाता है।

   अनुस्वार और अनुनासिक में अंतर–

- अनुनासिक स्वर है जबकि अनुस्वार मूलतः व्यंजन।
- अनुनासिक को परिवर्तित नहीं किया जा सकता जबकि अनुस्वार को वर्ण में बदला जा सकता है।

- वे शब्द जिनकी मात्राएँ शिरोरेखा से ऊपर न लगीं हों. जैसे अ , आ , उ ऊ के ऊपर अनुनासिक के लिए चंद्रबिन्दु का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के रूप में हँस, चाँद, पूँछ।
- शिरोरेखा से ऊपर लगी मात्राओं वाले शब्दों में अनुनासिक के स्थान पर अनुस्वार अर्थात बिंदु का प्रयोग ही होता है. जैसे – गोंद , कोंपल , जबकि अनुस्वार हर तरह की मात्राओं वाले शब्दों पर लगाया जा सकता है.

  हम यहाँ जानने का प्रयास करते हैं कि जब अनुस्वार को व्यंजन मानते हैं तो इसे वर्ण में किन नियमों के अंतर्गत परिवर्तित किया जाता है.। जैसे कंबल, झंडा, धंधा को कम्बल, झण्डा, धन्धा के रूप में उस वर्ग के पंचम अक्षर के साथ लिखा जा सकता है, अर्थात् धंधा शब्द का अनुस्वार हटाना है तो अनुस्वार के बाद वाले वर्ण के पंचम अक्षर का प्रयोग करते हैं।

  जैसे– कंबल शब्द के अनुस्वार को वर्ण में बदलना है तो अनुस्वार के बाद 'ब' वर्ण के पंचम अक्षर 'म' का प्रयोग कर अनुस्वार को वर्ण में बदला जा सकता है। जैसे– कम्बल।

2. "कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है" यहाँ पर संसार शब्द के पर्याय के रूप में जग, विश्व, जगत, लोक, दुनियाँ, भव, आदि हैं। और हर शब्द की महत्ता वाक्य, विषय और काल के अनुसार विशिष्ट होती है। जैसे–
   - **दुनियाँ** में तरह–तरह के लोग होते हैं।
   - ताजमहल **विश्व** की प्रसिद्ध इमारत है।

     इसी प्रकार से जल, पक्षी, सूर्य, सोना, धरती, शब्द के दो–दो पर्यायवाची खोजकर सटीक वाक्यों में उनका प्रयोग कीजिए।

## *योग्यता विस्तार*

1. धार्मिक सद्भाव से संबंधित स्लोगन साथियों के साथ मिलकर लिखिए।
2. देश–प्रेम, मानवीय मूल्य से ओत–प्रोत कविताएँ खोजकर पढ़िए, चर्चा कीजिए।

6A4G5F

# पाठ 12

# प्रेरणा स्रोत :- मेरी माँ

– संकलित

6ADC73

**'मिसाइलमैन' के नाम से चर्चित पीपल्स प्रेसिडेंट डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम एक ऐसे चमत्कारिक व्यक्तित्व रहे हैं जिन्होंने अपने कार्य और व्यवहार से देश ही नहीं, दुनियाँ के करोड़ों नवयुवाओं को प्रभावित किया है। ऐसे व्यक्तित्व की प्रेरणा स्रोत, उनकी ममतामयी माँ आशियम्मा रहीं, जिन्होंने अभाव से भरे दिनों में कलाम को अपने हिस्से का सबकुछ बचा कर उसे संजोते हुए अतिरिक्त स्नेह, लाड़ प्यार देती रहीं। यही वह स्नेह का मूल भाव था, जो बाद में कलाम के व्यक्तित्व का स्रोत बन कर राष्ट्र के प्रत्येक बच्चों पर न्यौछावर होता रहा और उन्हें एक श्रेष्ठ भारतीय नागरिक बनाने की दिशा में आधार भूमि बन सका।**

आज के इस युग में ऐसे लोग कम ही हैं जिन्होंने अपने काम और व्यवहार से करोड़ों युवाओं और सम्पूर्ण देशवासियों को प्रभावित किया हो, उनके दिल में एक खास जगह बनाई हो, 'मिसाइलमैन' नाम से चर्चित, चमत्कारिक प्रतिभा के धनी डॉक्टर ए.पी.जे. अब्दुल कलाम उन चुनिंदा हस्तियों में से एक हैं। इनका व्यक्तित्व इतना सरल और सहज रहा कि हर कोई उन्हें देखकर हैरान हो जाता उन्होंने अपने काम के सिवाय कभी भी अपने पद को अहम नहीं समझा अपनी सीधी सादी बातों और जीवन मूल्यों के कारण डॉ.कलाम ने दुनिया के चर्चित लोगों में एक अलग ही जगह बनाई इसलिए वह आज 'पीपल्स प्रेसिडेंट' के नाम से भी जाने जाते हैं। वे देश के ऐसे तीसरे राष्ट्रपति हैं, जिन्हें राष्ट्रपति बनने से पूर्व देश के सर्वोच्च सम्मान 'भारतरत्न' से सम्मानित किया गया। ऐसे दो अन्य पूर्व राष्ट्रपति हैं : सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन और डॉ. जाकिर हुसैन।

ऐसे महान व्यक्तित्व की प्रेरणा–स्रोत डॉ. कलाम की माँ आशियम्मा थीं। मन को छूने वाली अनेक घटनाओं में डॉ. कलाम ने अपनी माँ का बार–बार उल्लेख किया है। बचपन के अभाव भरे दिनों में, एक संयुक्त परिवार के सदस्य के रूप में उन्हें माँ का अधिक लाड़–प्यार, स्नेह और प्रोत्साहन मिला। उन्होंने बताया है कि हमारे घरों में बिजली नहीं थी तब मिट्टीतेल की चिमनी जलाया करते थे या घर में लालटेन से रोशनी होती थी, जिनका समय रात्रि 7 से 9 बजे तक नियत था। पर नन्हें कलाम माँ के अतिरिक्त स्नेह के कारण रात्रि 11 बजे तक दीपक का उपयोग करते थे क्योंकि माँ को कलाम की प्रतिभा पर भरोसा था इसलिए वह कलाम की पढ़ाई के लिए एक स्पेशल लैंप देती थीं जो रात तक पढ़ाई करने में कलाम की मदद करता था। रोशनी को दूसरों तक फैलाने की चाह कलाम के नन्हें मन में यहीं से उठने लगी थी जो समय के साथ विश्वव्यापी बनी।

एक अन्य घटना डॉ. कलाम को जीवनभर याद रही वह यह थी–कलाम की लगन और मेहनत के कारण उनकी माँ खाने–पीने के मामले में उनका विशेष ध्यान रखती थीं। दक्षिण में चावल की पैदावार अधिक होने के कारण वहाँ चावल अधिक खाया जाता है। लेकिन कलाम को रोटियों से विशेष लगाव था इसलिए उनकी माँ उन्हें प्रतिदिन खाने में दो रोटियाँ अवश्य दिया करती थीं। एक बार उनके घर में खाने में गिनी चुनीं रोटियाँ ही थीं। यह देखकर माँ ने अपने हिस्से की रोटी कलाम को दे दी। उनके बड़े भाई ने कलाम को धीरे से यह बात बता दी। इससे कलाम अभिभूत हो उठे और दौड़ कर माँ से लिपट गए।

माँ के विश्वास व प्रोत्साहन का ही परिणाम था कि डॉ. कलाम अपने जीवन को बहुत अनुशासन में जीना पसंद करते थे। वे शाकाहार और ब्रह्मचर्य का पालन करने वालों में से थे। कहा जाता है कि वे कुरान और भगवद्गीता दोनों का अध्ययन करते थे और उनकी गूढ़ बातों पर अमल किया करते थे। उनके संदेश व छात्रों से बातचीत में उनके जीवन के इन भावों और माँ की प्रेरणा का बार–बार उल्लेख मिलता है, जो भारत के तमाम बच्चों और बच्चियों तथा युवाओं को कुछ नया सोचने और नया करने को प्रोत्साहित और प्रेरित करते रहे हैं।

जब डॉ. कलाम आगे की पढ़ाई के लिए बाहर गए तो उन्हें घर छोड़ना पड़ा, उस समय माँ आशियम्मा का कलेजा भर आया, वे रो पड़ीं और अपने आपको शांत नहीं कर पाईं। तब नन्हें कलाम ने माँ के पास बैठकर उन्हें समझाया–'माँ मैं तुमसे दूर कहाँ जा रहा हूँ। मैं अपनी माँ के बिना भला रह सकता हूँ! नन्हें कलाम के मुँह से ऐसी समझदारी की बात सुनकर माँ ने अपने आँसू पोंछ लिए। वे मुस्कुराईं और फिर हँसी–खुशी उन्हें विदा करने के लिए, कुछ हिदायतें देती हुईं, कुछ कदम कलाम के साथ चलीं। इसके बाद कलाम के पिता और परिवार के अन्य लोग, मित्र स्टेशन पर उन्हें छोड़ने आए थे। रेलगाड़ी में बैठकर स्कूल की ओर यात्रा करते हुए कलाम के मन में माँ की ममता थी, यादें थीं, माँ की हिदायतें, झिड़कियाँ, और शरारत करने पर की गईं सख्तियाँ थीं। कलाम का मन माँ की ममता से सराबोर था।

कोई भी बच्चा जब पहली बार घर छोड़कर बाहर अकेला रहने के लिए जाता है तो उसे सबसे ज्यादा घर से दूरी और माँ की कमी खलती है। माँ से बच्चे के मन का तार जुड़ा होता है, नन्हें बालक कलाम  का माँ के प्रति यही भाव उनके बड़े होने के साथ–साथ और भी गहरा होता गया। यही भाव उनकी "माँ" कविता में दिखता है–

# माँ

"समंदर की लहरें,

सुनहरी रेत,

श्रद्धानत तीर्थयात्री,

रामेश्वरम् द्वीप की वह छोटी–पूरी दुनिया।

सब में तू निहित है,

सब तुझमें समाहित।

तेरी बाँहों में पला मैं,

मेरी कायनात रही तू,

जब छिड़ा विश्वयुद्ध, छोटा–सा मैं,

जीवन बना था चुनौती, जिन्दगी अमानत,

मीलों चलते थे हम,

पहुँचते किरणों से पहले"

यह कविता उन्होंने तब लिखी जब उनकी माँ इस दुनियाँ में नहीं रहीं और यह सच जाहिर करती है कि वे कलाम के महान कामों के पीछे प्रेरणा रहीं। कलाम के बचपन को माँ ने कुछ इस तरह सँवारा और प्रोत्साहित किया कि बालमन के सभी सहज भाव डॉ. कलाम की प्रौढ़ अवस्था में छलकते रहते थे। नई चीज़ सीखने के लिए वे हमेशा तत्पर रहते थे। उनके अंदर सीखने की भूख थी और पढ़ाई पर घंटों ध्यान देना उनमें से एक था।

एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने जीवन के सबसे बड़े अफसोस का जिक्र किया था उन्होंने कहा था कि वह अपने माता–पिता को उनके जीवनकाल में 24 घंटे बिजली उपलब्ध नहीं करा सके; उन्होंने कहा था कि मेरे पिता (जैनुलाब्दीन) 103 साल तक जीवित रहे और माँ (आशियाम्मा) 93 साल तक जीवित रहीं। उन्होंने भारतीय छात्रों को अपना संदेश देते हुए कहा था –

"सपने वो नहीं होते जो रात को सोते समय नींद में आएँ, सपने वो होते हैं जो रातों में सोने नहीं देते।"

"इंतजार करने वालों को सिर्फ उतना ही मिलता है, जितना कोशिश करने वाले छोड़ देते हैं।"

प्रस्तुत लेख डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम द्वारा लिखित पुस्तक ''विंग्स ऑफ फायर'' के हिंदी रूपान्तरण से संकलित है।

# अभ्यास

## पाठ से

1. डॉ. कलाम को किन–किन नामों से जाना जाता है?
2. डॉ. कलाम को सर्वाधिक प्रेरणा किससे मिली ?
3. बालक कलाम को पढ़ने के लिए माँ कैसे प्रोत्साहित करती थीं?
4. डॉ. कलाम को कौन सी घटना जीवन भर याद रही ?
5. पढ़ाई के लिए घर से दूर जाते हुए कलाम ने माँ को क्या समझाया ?
6. भारतीय छात्रों को डॉ. कलाम ने क्या संदेश दिया ?
7. डॉ. कलाम के जीवन का सबसे बड़ा अफसोस क्या था ?

## पाठ से आगे

1. डॉ. कलाम की प्रेरणा–स्रोत उनकी माँ थीं। हम सब के जीवन में माँ की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण/गौरवपूर्ण है? साथियों से विचार कर लिखिए।
2. डॉ. कलाम के जीवन की सफलता उनके कठोर परिश्रम और लगन का परिणाम रही। क्या आप भी सफलता के लिए कठोर परिश्रम करते हैं ? यदि हाँ तो उदाहरण सहित अपने अनुभव को लिखिए।
3. आप घर से किसी कार्य वश या किसी संबंधी के यहाँ (बाहर) जाते हैं तो आपको किसकी याद ज्यादा आती है और क्यों ? साथियों से बातचीत कर लिखिए।

4. कल्पना कीजिए आपको आगे की पढ़ाई के लिए दूर कहीं जाना पड़ा तो आपको कैसा लगेगा और आपको क्या–क्या परेशानी होगी ?
5. जीवन की किसी ऐसी घटना का उल्लेख कीजिए जब आपको माँ की बहुत याद आई हो अथवा माँ को आपने महसूस किया हो।

## भाषा से

1. पाठ में आए निम्नलिखित विदेशी शब्दों को हिंदी भाषा के शब्दों में बदलिए–

**अमानत, अहसास, कायनात, जिक्र, ज्यादा, सख्ती, अफसोस, सराबोर।**

2. निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए–

   मुझे फल ही चाहिए।

   मुझे फल भी चाहिए।

   वाक्य में 'ही' के स्थान पर 'भी' लगा देने से वाक्य का अर्थ बदल जाता है। इसी प्रकार के पाँच वाक्य बनाइए।

3. पाठ में महान काम, सहज भाव, महान व्यक्तित्व, चर्चित लोग, चुनिंदा हस्तियों– जैसे विशेषण युक्त शब्दों का प्रयोग हुआ है। पाठ में आए ऐसे ही अन्य दस विशेषण युक्त शब्दों को ढूँढ़ कर लिखिए।

## योग्यता विस्तार

1. डॉ. कलाम ने राष्ट्र के युवाओं को नई सोच और नए कार्य को करने की प्रेरणा दी। यदि आपको अपने विद्यालय में नया कुछ करने का मौका दिया जाए तो आप क्या कुछ नया करना चाहेंगे? योजना बनाइए।

2. डॉ. कलाम की वैज्ञानिक उपलब्धियों के बारे में शिक्षक से पता कर उससे संबंधित चित्र के साथ कक्षा–कक्ष में प्रदर्शन कीजिए।

3. नेल्सन मंडेला, आंग सांग सू की और मलाला युसुफजाई के बारे में शिक्षक से चर्चा कर 10–10 पंक्तियाँ लिखिए।

●●●

# पाठ 13

# सुभाषचंद्र बोस का पत्र

– संकलित

'नेता जी' के नाम से प्रसिद्ध भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के ओजस्वी सेनानी सुभाषचंद्र बोस ने यह पत्र 'केसरी' पत्रिका के संपादक श्री एन. सी केलकर के नाम बर्मा के मांडले जेल से लिखा। बोस को जब बरहमपुर (बंगाल) जेल से मांडले जेल स्थानांतरित किया गया तो उस जेल में पहुँचने के बाद उनकी स्मृति में यह बात कौंधी कि महान क्रांतिकारी और कांग्रेस (गरम दल) के नेता 'लोकमान्य' बाल गंगा धर तिलक ने अपने कारावास के अधिकांश भाग बेहद हतोत्साहित कर देने वाले इसी परिवेश में व्यतीत किए थे। कारावास के छह वर्ष लोकमान्य ने अत्यंत शारीरिक और मानसिक यंत्रणा में बिताए फिर भी उस त्रासद स्थिति में 'गीता भाष्य' जैसी ग्रन्थ की रचना की। मांडले जेल–जीवन के बारे में बोस के शब्द हैं "मैंने भगवान को धन्यवाद दिया कि मांडले में अपनी मातृभूमि और स्वदेश से बलात् अनुपस्थिति के बावजूद मुझे पवित्र स्मृतियाँ राहत और प्रेरणा देंगीं। अन्य जेलों की तरह यह भी एक ऐसा तीर्थस्थल है, जहाँ भारत के एक माहन सपूत लगातार छह वर्ष तक रहे।"

प्रिय श्री केलकर,

मैं पिछले कुछ महीनों से आपको पत्र लिखने की सोच रहा था जिसका कारण केवल यह रहा है कि आप तक ऐसी जानकारी पहुँचा दूँ जिसमें आपको दिलचस्पी होगी। मैं नहीं जानता कि आपको मालूम है या नहीं कि मैं यहाँ गत जनवरी से कारावास में हूँ। जब बरहमपुर जेल (बंगाल) से मुझे माँडले जेल के लिए स्थानांतरण का आदेश मिला था, तब मुझे यह स्मरण नहीं आया था कि लोकमान्य तिलक ने अपने कारावास काल का अधिकांश भाग माँडले जेल में ही गुजारा था। इस चहारदीवारी में, यहाँ के बहुत ही हतोत्साहित कर देनेवाले परिवेश में, स्वर्गीय लोकमान्य ने अपने सुप्रसिद्ध 'गीता भाष्य' ग्रंथ का प्रणयन किया था जिसने मेरी नम्र राय में उन्हें 'शंकर' और 'रामानुज' जैसे प्रकांड भाष्यकारों की श्रेणी में स्थापित कर दिया है।

जेल के जिस वार्ड में लोकमान्य रहते थे वह आज तक सुरक्षित है, यद्यपि उसमें फेरबदल किया गया है और उसे बड़ा बनाया गया है। हमारे अपने जेल के वार्ड की तरह, वह लकड़ी के तख्तों से बना है, जिसमें गर्मी में लू और धूप से, वर्षा में पानी से, शीत ऋतु में सर्दी से तथा सभी ऋतुओं में धूलभरी हवाओं

से बचाव नहीं हो पाता। मेरे यहाँ पहुँचने के कुछ ही क्षण बाद, मुझे उस वार्ड का परिचय दिया गया। मुझे यह बात अच्छी नहीं लग रही थी कि मुझे भारत से निष्कासित कर दिया गया था लेकिन मैंने भगवान को धन्यवाद दिया कि माँडले में अपनी मातृभूमि और स्वदेश से बलात् अनुपस्थिति के बावजूद मुझे पवित्र स्मृतियाँ राहत और प्रेरणा देंगी। अन्य जेलों की तरह यह भी एक ऐसा तीर्थस्थल है, जहाँ भारत का एक महानतम सपूत लगातार छह वर्ष तक रहा था।

हम जानते हैं कि लोकमान्य ने कारावास में छह वर्ष बिताए। लेकिन मुझे विश्वास है कि बहुत कम लोगों को यह पता होगा कि उस अवधि में उन्हें किस हद तक शारीरिक और मानसिक यंत्रणाओं से गुजरना पड़ा था। वे यहाँ एकदम अकेले रहे और उन्हें कोई बौद्धिक स्तर का साथी नहीं मिला। मुझे विश्वास है कि उन्हें किसी अन्य बंदी से मिलने–जुलने नहीं दिया जाता था।

उनको सांत्वना देनेवाली एकमात्र वस्तु किताबें थीं और वे एक कमरे में एकदम एकाकी रहते थे। यहाँ रहते हुए उन्हें दो या तीन भेंटों से अधिक का मौका नहीं दिया गया और ये भेंटें भी पुलिस और जेल अधिकारियों की उपस्थिति में हुई होंगी, जिससे वे कभी भी खुलकर और हार्दिकता से बात नहीं कर पाए होंगे।

उन तक कोई भी अखबार नहीं पहुँचने दिया जाता था। उनकी जैसी प्रतिष्ठा और स्थितिवाले नेता को बाहरी दुनिया के घटनाचक्रों से एकदम अलग कर देना, एक तरह की यंत्रणा ही है और इस यंत्रणा को जिसने भुगता है, वही जान सकता है। इसके अलावा उनके कारावास की अधिकांश अवधि में देश का राजनैतिक जीवन मंद गति से खिसक रहा था और इस विचार ने उन्हें कोई संतोष नहीं दिया होगा कि जिस उद्देश्य को उन्होंने अपनाया था, वह उनकी अनुपस्थिति में किस गति से आगे बढ़ रहा है।

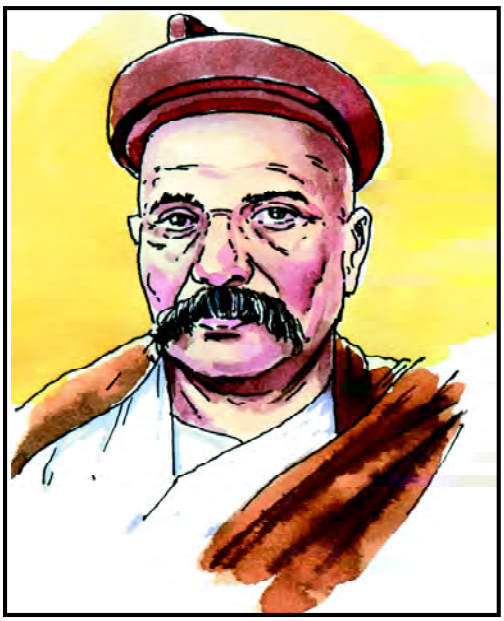

उनकी शारीरिक यंत्रणा के बारे में जितना ही कम कहा जाए, बेहतर होगा। वे दंड–संहिता के अंतर्गत बंदी थे और इस प्रकार आज के राजबंदियों की अपेक्षा कुछ मायनों में उनकी दिनचर्या कहीं अधिक कठोर रही होगी। इसके अलावा उन्हें मधुमेह की बीमारी थी। जब लोकमान्य यहाँ थे, माँडले का मौसम तब भी प्रायः ऐसा रहा होगा जैसा वह आजकल है और अगर आज नौजवानों को शिकायत है कि वहाँ की जलवायु शिथिल कर देनेवाली और मंदाग्नि तथा गठिया को जन्म देनेवाली है और धीरे–धीरे, वह व्यक्ति की जीवन–शक्ति को सोख लेती है, तो लोकमान्य ने, जो वयोवृद्ध थे, कितना कष्ट झेला होगा?

लेकिन इस कारागार की चहारदीवारियों में उन्होंने क्या यातनाएँ सहीं, इसके विषय में लोगों को बहुत कम जानकारी है। कितने लोगों को पता होता है, उन अनेक छोटी–छोटी बातों का, जो किसी बंदी के जीवन में सुइयों की सी चुभन बन जाती हैं और जीवन को दूभर बना देती हैं।

वे गीता की भावना में मग्न रहते थे और शायद इसलिए दुख और यंत्रणाओं से ऊपर रहते थे। यही कारण है कि उन्होंने उन यंत्रणाओं के बारे में किसी से कभी एक शब्द भी नहीं कहा।

समय–समय पर मैं इस सोच में डूबता रहा हूँ कि कैसे लोकमान्य को अपने बहुमूल्य जीवन के छह लंबे वर्ष इन परिस्थितियों में बिताने के लिए विवश होना पड़ा था। हर बार मैंने अपने आपसे पूछा, ''अगर नौजवानों को इतना कष्ट महसूस होता है तो महान लोकमान्य को अपने समय में कितनी पीड़ा सहनी पड़ी होगी, जिसके विषय में उनके देशवासियों को कुछ भी पता नहीं रहा होगा।'' यह विश्व भगवान् की कृति है, लेकिन जेलें मानव के कृतित्व की निशानी हैं। उनकी अपनी एक अलग ही दुनिया है और सभ्य समाज ने जिन विचारों और संस्कारों को प्रतिबद्ध होकर स्वीकार किया है, वे जेलों में लागू नहीं होते। अपनी आत्मा के ह्रास के बिना, बंदी जीवन के प्रति अपने आपको अनुकूल बना पाना आसान नहीं है। इसके लिए हमें पिछली आदतें छोड़नी होती हैं और फिर भी स्वास्थ्य और स्फूर्ति बनाए रखनी होती है। केवल लोकमान्य जैसा दार्शनिक ही उस यंत्रणा और दासता के बीच मानसिक संतुलन बनाए रख सकता था और 'गीता भाष्य' जैसे विशाल एवं युग–निर्माणकारी ग्रंथ का प्रणयन कर सकता था।

मैं जितना ही इस विषय पर चिंतन करता हूँ उतना ही ज्यादा मैं उनके प्रति आदर और श्रद्धा में डूब जाता हूँ। आशा करता हूँ कि मेरे देशवासी लोकमान्य की महत्ता को आँकते हुए इन सभी तथ्यों को भी दृष्टिपथ में रखेंगे। जो महापुरुष मधुमेह से पीड़ित होने के बावजूद इतने सुदीर्घ कारावास को झेलता गया और जिसने उन अंधकारमय दिनों में अपनी मातृभूमि के लिए ऐसी अमूल्य भेंट तैयार की, उसे विश्व के महापुरुषों की श्रेणी में प्रथम पंक्ति में स्थान मिलना चाहिए।

लेकिन लोकमान्य ने प्रकृति के जिन अटल नियमों से अपने बंदी जीवन के दौरान टक्कर ली थी, उनको अपना बदला लेना ही था। अगर मैं कहूँ तो मेरा विश्वास है कि लोकमान्य ने जब माँडले को अंतिम नमस्कार किया था तो उनके जीवन के दिन गिने–चुने ही रह गए थे। निस्संदेह यह एक गंभीर दुख का विषय है कि हम अपने महानतम पुरुषों को इस प्रकार खोते रहे, लेकिन मैं यह भी सोचता हूँ कि क्या वह दुर्भाग्य किसी–न–किसी प्रकार टाला नहीं जा सकता था।

आदरपूर्वक।

आपका स्नेहभाजन,

सुभाषचंद्र बोस

## टिप्पणी

एन.सी.केलकर – तत्कालीन विदर्भ के काँग्रेस के वरिष्ठ नेता। बाद में 'स्वराज्य दल' में सम्मिलित हो गए थे। लोकमान्य तिलक के निधन के पश्चात् 'केसरी' पत्रिका का सम्पादन श्री केलकर ने ही सँभाला था।

शंकर व रामानुज – शंकराचार्य और रामानुज भारत के प्रसिद्ध दार्शनिक थे। इन्होंने अपने–अपने ग्रंथों में ब्रह्म, जगत्, जीव आदि दार्शनिक तत्वों पर अपने–अपने विचार प्रकट किए हैं और वेदों का भाष्य लिखा है।

# अभ्यास

## पाठ से

1. नेता जी ने केलकर को पत्र क्यों लिखा ?
2. लोकमान्य ने अपने जीवन का छह वर्ष कहाँ और क्यों गुजारा ?
3. सुभाषचंद्र बोस ने भगवान को धन्यवाद क्यों दिया ?
4. सुभाषचंद्र बोस ने जेलों को तीर्थस्थल क्यों कहा है ?
5. लोकमान्य को कारावास में सांत्वना देनेवाली वस्तु क्या थी ?
6. लोकमान्य दुःख और यंत्रणाओं से ऊपर रहते थे, कैसे ?
7. सुभाषचन्द्र बोस ने किस पुस्तक की रचना की और उसका विषय क्या है ?
8. नेता जी के अनुसार आजकल के नौजवान को माँडले के जलवायु से क्या शिकायत है ?

## पाठ से आगे

1. पाठ में लिखा है कि उनको सांत्वना देनेवाली एकमात्र वस्तु किताबें थीं और वे एक कमरे में एकाकी रहते थे। एकाकीपन में पुस्तक कैसे सांत्वना देती हैं और एकाकीपन को कैसे दूर करते हैं। आपस में बातचीत कर पुस्तक के उपयोग पर अपनी समझ लिखिए।

2. कारावास अथवा जेल जीवन हमारे घर के जीवन अथवा आम जन जीवन से कैसे अलग है? साथियों से चर्चा कर लिखिए।
3. कल्पना कर लिखिए कि जब नौजवानों को उस जलवायु से इतनी शिकायत थी तो मधुमेह से ग्रस्त वृद्ध लोकमान्य को कितना कष्ट झेलना पड़ा होगा।
4. लोकमान्य को अपने बहुमूल्य जीवन के छह वर्ष उन कठिन परिस्थितियों में क्यों बिताने पड़े? साथियों और शिक्षकों से चर्चा कर लिखिए।
5. नेता जी का मानना है कि सुदीर्घ कारावास के अंधकारमय दिनों में भी लोकमान्य ने अपनी मातृभूमि के लिए अमूल्य भेंट तैयार की इसलिए उन्हें विश्व के महापुरुषों की श्रेणी में प्रथम स्थान मिलना चाहिए। प्रथम श्रेणी का यहाँ क्या अर्थ है? साथियों से बातचीत कर लिखिए।

## भाषा से

1. देशवासी अर्थात देश में रहनेवाले, कारावास–कारा में वास, राजनीति– राजा की नीति पाठ में इस प्रकार के बहुत सारे सामासिक पदों का प्रयोग हुआ है। उनका विग्रह कर समास का नाम लिखिए।

6HT4U8

राजबंदी, तीर्थस्थल, बहुमूल्य, लोकमान्य, महापुरुष, स्थानान्तरण, चहारदीवारी, एकाग्रचित, घटनाचक्र

2. निम्नलिखित अवतरण में कुछ विराम चिह्न छूट गए हैं उनका यथास्थान प्रयोग कीजिए–

लेकिन कारागार की चहारदीवारियों में उन्होंने क्या यातनाएँ सहीं इसके विषय में लोगों को बहुत कम जानकारी है। कितने लोगों को पता है उन अनेक छोटी–छोटी बातों का जो किसी बंदी के जीवन में सुइयों की–सी चुभन बन जाती है और जीवन को दूभर बना देती है। वे गीता की भावना में मग्न रहते थे। और शायद इसलिए दुःख और यंत्रणाओं से ऊपर रहते थे। यही कारण है कि उन्होंने यंत्रणाओं के बारे में किसी से एक शब्द भी नहीं कहा।

3. पाठ में दिए गए इस वाक्य को ध्यान से पढ़िए–

'वहाँ भारत का एक महानतम सपूत लगातार छह वर्षों तक रहा' यहाँ पर 'महानतम' शब्द गुणवाचक विशेषण का तुलनाबोधक रूप है। मूल शब्द महान है उत्तर अवस्था महानतर उत्तमावस्था महानतम है, जैसे अधिक–अधिकतर–अधिकतम , सुंदर–सुंदरतर–सुंदरतम

इसी प्रकार के पाँच विशेषण के शब्दों में तर, तम जोड़कर उनके रूप लिखिए।

## योग्यता विस्तार

1. गीता भाष्य क्या है ? इसके संबंध में अपने शिक्षकों से पूछकर इसके ऊपर अपनी समझ को लिखिए और कक्षा में सुनाइए।
2. जेल जीवन के अनुभव और कठिनाइयों के बारे में अनेक महापुरुषों जैसे गाँधी, नेहरु, जयप्रकाश ने पत्र लिखे हैं। उन्हें खोजकर पढ़िए और कक्षा में सुनाइए।

6N2ZVV

●●●

पाठ 14

# भारत बन जाही नंदनवन

–कोदूराम 'दलित'

अपन देश ल नंदनवन जइसन सुघ्घर बनाय म उहाँ के लोगन मन के ज्ञान अऊ मेहनत ह आधार होथे। असली ताकत मेहनत करइया किसान अऊ मजदूर होथे। जब तक आलस ल नई छोड़ही तब तक उहाँ रहइया मन आगू नई बढ़ सकय। जनता के दुःख–पीरा हरे मा खुद के मेहनत अऊ विश्वास होथे। किसान अऊ मजदूर चाहय त खंडहर ह तको रंगमहल के समान बन जाही।

कविता म कवि ह देश के जवान मन ले, मजदूर अऊ किसान मन ले आलस छोड़ के मेहनत के बात कहे हे।

हे नव भारत के तरुण वीर,
हे भीम, भागीरथ, महावीर ।

झन भुला अपन पुरुसारथ बल,
खँड़हर मा रच अब रंगमहल ।

ये राज तोरे, सरकार तोर,
ये दिल्ली के दरबार तोर ।

हे स्वतंत्र भारत के नरेस,
जन–जन के जल्दी हर कलेस ।

माँगे स्वदेश श्रमदान तोर,
संपदा, ज्ञान–विधान तोर ।

जब तोर पसीना पा जाही,
ये पुरुस–भूमि हरिया जाही।

पाही जब तोर बटोरे धन,
भारत बन जाही नंदनवन।

पाही बन तोर विसुद्ध ज्ञान,
भारत बनही जग मा महान।

तज दे आलस, कर श्रम कठोर,
पिछवा जाबे अब झन अगोर ।

| छत्तीसगढ़ी शब्द मन के हिन्दी अर्थ | | | अन्य शब्दार्थ | | |
|---|---|---|---|---|---|
| झन | = | मत,नहीं | नवभारत | = | नया भारत |
| पुरुसारथ | = | पुरुषार्थ, पराक्रम | तरुण | = | युवा,जवान |
| कलेस | = | कष्ट | रंगमहल | = | आमोद–प्रमोद के लिए बनाया गया महल |
| पिछवा जाबे | = | पिछड़ जाओगे | | | |
| अगोरमा | = | प्रतीक्षा करना | स्वदेश | = | अपना देश |
| नरेस | = | नरेश या राजा | नंदनवन | = | स्वर्ग में देवराज इंद्र की वाटिका |

## अभ्यास

### पाठ से

1. कवि ह भीम, भगीरथ, अउ महावीर कोन ल केहे हे ?
2. कवि देश के नवजवान मन ले का माँगत हे ?
3. ''खंडहर मा रच अब रंग महल'' के भाव ल समझावव।
4. कवि ह नवजवान मन ले कड़ा मिहनत करे बर काबर कहत हे ?
5. भारत नंदनवन कब बन जाहि ?
6. खाल्हे लिखाय कविता के पंक्ति मन के अर्थ लिखव–

   क. झन भुला अपन पुरुसारथ बल
   खंडहर मा रच अब रंगमहल।

   ख. हे स्वतंत्र भारत के नरेस
   जन–जन के जल्दी हर कलेस

### पाठ से आगे

1. तुमन ल अपन जीवन म कभू भीम. भगीरथ, महावीर के पात्र के किरदार निभाय के मौका मिलही त तीनों में से काकर किरदार निभाना पसंद करहु अउ काबर ? सोचके लिखव।
2. जउन घर के मुखिया आलसी होथे वो घर परिवार के लोगन म ओकर का–का परभाव पड़थे। अपन घर के मन ला पूछ के लिखव।

3. तुमन ल कभू जीवन म एक दिन बर अपन राज्य के मुख्यमंत्री बना दिए जाही त अपन राज्य के विकास वर का–का काम करहू ? अपन साथी मन संग चर्चा करके विकास बर करे काम के सूची बनावव।

6NKRZ6

4. देश के नौजवान मन ले कवि बहुत उम्मीद करत हे। नौजवान मन का–का कर सकत हे ? अपन साथी मन संग चर्चा करके विकास काम के सूची बनावव।

## भाषा से

1. ये शब्द मन के हिंदी रूप लिखव –

   **पुरुसारथ, अगोर, कलेस, झन, पिछवा, पुरुस–भूमि, विसुद्ध।**

6NUN1T

2. कविता म नरेस–कलेस, ज्ञान–महान, जइसन तुक–ले तुक मिले शब्द आय है। अइसन शब्द मन ल समानोच्चरित शब्द कहिथे।

   खाल्हे लिखाय शब्द मन के दो–दो समानोच्चरित शब्द लिखव–

   **स्वदेश, वीर, तोर, विशुद्ध, महल**

3. खाल्हे लिखाय शब्द मन के उल्टा अर्थ वाला शब्द लिखव –

   **गुन, आगू, कठोर, खंडहर, नरेस, विशुद्ध।**

## योग्यता विस्तार

1. भारत ल अउ का–का नाम ले जाने जाथे वोकर सूची बनावव।

6P4J3G

2. पहिली के भारत अउ वर्तमान भारत म कोन–कोन से अंतर मालूम होथे शिक्षक के सहायता से चर्चा करके लिखव।

●●●

# पाठ 15

# शतरंज में मात

—डॉ. श्री प्रसाद

लोक अनुश्रुतियों और इतिहास के पन्नों में बीरबल, गोनू झा, मुल्ला दो प्याजा, गोपाल भांड आदि अनेक ऐसे व्यक्तित्व का उल्लेख मिलता है जो अपनी बुद्धि चातुर्य और वाक्—पटुता या हाजिर जवाबी के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। उन्हीं में एक प्रसिद्ध चरित्र तेनाली राम का है, जो विजय नगर राज के राजा कृष्णदेव राय के दरबारी थे। इनके जीवन—योगदान के प्रायः दो स्वरूप देखने को मिलते हैं। एक तो न्याय व्यवस्था में, कि गुनाहगार को ही सजा मिले और निर्दोष के साथ न्याय हो सके और दूसरे दरबार में उनसे जलन रखने वाले अथवा उनके खिलाफ षड्यंत्र रचने वाले लोगों का पर्दाफाश किया जा सके जिससे राजा को वास्तविकता का एहसास कराया जा सके। कुछ ऐसा ही दृश्य प्रस्तुत एकांकी पढ़ते हुए हम देख और महसूस कर सकते हैं।

**पात्र —**

| | |
|---|---|
| राजा कृष्णदेव राय | तेनालीराम |
| नाई | दरबारी |
| सेवक | दर्शकगण |

## पहला दृश्य

(राजा का दरबार। दरबारी अपने—अपने आसन पर बैठे हैं। राजा और तेनालीराम के आसन अभी खाली हैं।)

पहला दरबारी — देखा, अभी तक नहीं आए तेनालीराम।

दूसरा दरबारी — भला क्यों आएँगे? जब स्वयं महाराज उनकी मुट्ठी में हैं तो वे हम जैसों को क्यों पूछेंगे?

तीसरा दरबारी — महाराज ने भी खूब सिर चढ़ाया है तेनाली को!

चौथा दरबारी — (राजा की नकल करता है) ''हाँ तेनाली! वाह तेनाली! क्या पते की बात कही तेनाली ने...।'' तेनाली, तेनाली, तेनाली! कान पक गए हैं प्रशंसा सुनते—सुनते।

पहला दरबारी — महाराज के सिर से तेनाली का भूत उतारना होगा।

दूसरा दरबारी — कितनी बार प्रयत्न किया। तेनाली की चतुराई के आगे हमारी एक नही चली!

चौथा दरबारी — कुछ युक्ति निकाली जाए!

पहला दरबारी – (चुटकी बजाते हुए) निकाल लिया मैंने उपाय! सुनो! (सब उसे घेर लेते हैं। आपस में खुसुर–फुसुर होती है। सब खुश नज़र आते हैं। तभी नगाड़े बजने लगते हैं।)

एक सेवक – सावधान! महाराजाधिराज कृष्णदेव राय पधार रहे हैं।

(दरबारीगण अपने–अपने आसन की ओर भागते हैं। चेहरों पर गंभीरता का भाव लाकर राजा का स्वागत करते हैं।)

राजा – (बैठते ही) तेनालीराम कहाँ हैं?

पहला दरबारी – (अन्य दरबारियों को देखते हुए) लो आते ही आ गई याद! (राजा से) अभी नहीं आए। लगता है शतरंज का खेल जमा है कहीं।

एक दरबारी – कहीं शतरंज खेल रहे होंगे।

राजा – शतरंज। तेनालीराम क्या शतरंज के शौकीन हैं?

दूसरा दरबारी – हाँ महाराज, वे तो गजब के खिलाड़ी हैं।

तीसरा दरबारी – पर महाराज की बराबरी नहीं कर सकते।

चौथा दरबारी – महाराज, आज्ञा हो तो मुकाबला आयोजित किया जाए। एक ओर आप, दूसरी ओर तेनालीराम। तेनाली जी नहला, तो आप भी तो दहला हैं।

राजा – (खुश होकर) क्या उत्तम सुझाव है! बराबर का खिलाड़ी मिले, तभी खेल का आनंद आता है। यह तेनाली भी बड़ा दुष्ट निकला। मुझे बताया क्यों नहीं?

पहला दरबारी – वह आपकी हार नहीं देखना चाहता, महाराज! इसलिए छिपाए रखा। पर वास्तव में बड़ा घाघ है तेनाली। एक–से–एक खिलाड़ियों को मात दे चुका है।

राजा – घाघ है तो हम भी कम नहीं। हो जाएँ दो–दो हाथ!

सेवक – श्री तेनालीराम जी आ रहे हैं!

(तेनालीराम का प्रवेश)

तेनाली – (झुककर) प्रणाम! महाराजाधिराज की जय हो!

(राजा मुँह फेरते हैं; तेनाली चौंकता है।)

तेनाली – इस तुच्छ सेवक का प्रणाम स्वीकार करें, महाराज।

राजा – (क्रोधित होकर) तेनाली, तुमने बताया नहीं कि तुम शतरंज में माहिर हो।

तेनाली – (चकित होकर) शतरंज और मैं! शतरंज के विषय में मैं कुछ नहीं जानता महाराज।

राजा – (क्रोधित होने की मुद्रा में)मुझे सब पता है तेनाली! बात अब छिप नहीं सकती। (दरबारियों से) क्यों?

पहला दरबारी – हाँ, महाराज, बड़े–बड़ों को मात दी है तेनाली ने।

तीसरा दरबारी – ज़रा बच के खेलिएगा, महाराज।

सब दरबारी – (मुँह छिपाकर हँसते हुए) क्या आनंद आ रहा है!

तेनाली – (घबराकर) पर... पर... मुझे वास्तव में शतरंज का ज्ञान नहीं, महाराज... इस अनाड़ी के संग खेलकर आप पछताएँगे।

राजा – कोई बहाना नहीं चलेगा। (सेवक से) जाओ, व्यवस्था करो।

तेनाली – मैं नहीं खेलता शतरंज! (सिर ठोकता है।)

पहला दरबारी – तेनालीजी, क्यों अस्वीकार करते हैं?

दूसरा दरबारी – जब महाराज ने स्वयं न्यौता दिया है!

तीसरा दरबरी – तेनालीजी, दाँव ज़रा सोचकर चलिएगा!

(सभी हँसकर तेनाली के असमंजस का आनंद लूटते हैं। तेनाली उन्हें देखता हुआ कुछ सोचता है।)

तेनाली – (दर्शकों से) समझा! चाल चली है सबने। ठीक है! (पर्दा गिरता है।)

## दूसरा दृश्य

(दरबार भवन। बीच में चौकी, उस पर गद्दी। एक ओर तकिए से टिके राजा। सामने मुँह लटकाए तेनाली। बीच में शतरंज की चादर बिछी है। चारों ओर दरबारी और अन्य लोग बैठे हैं।)

दरबारीगण – (दर्शकों से) अब बरसेगा महाराज का क्रोध तेनाली पर!

राजा – (हुक्का हटाकर) हाँ भई तेनाली, खेल आरंभ हो।

तेनाली – (मुँह लटकाए, धीरे–से) महाराज आरंभ करें।

राजा – यह चला मैं पहली चाल। (मोहरा उठाकर रखते हैं।)

चौथा दरबारी – क्या चाल चली महाराज ने! (ताली बजाता है।)

तेनाली – (सोच में) ऐं ... क्या चलूँ?

दूसरा दरबारी – पर हमारे तेनाली भी कुछ कम नहीं।

तेनाली – (एक मोहरा उठाते हुए अपने आपसे ) चलो, इसे बढ़ाता हूँ।

राजा – (दर्शकों से) ऐं? सबसे पहले वज़ीर? अवश्य कोई गूढ़ चाल है। सोच–समझ कर चलूँ। (चाल चलते हैं।)

तेनाली – (दर्शकों से) कुछ भी चलें मुझे क्या? (राजा से) लीजिए, यह चला।

राजा – (धीरे–से) यह क्या? चतुराई है या मूर्खता?खैर मैंने यह चला।

तेनाली – अब चला यह घोड़ा।

राजा – अरे, यह तो सरासर मूर्खता है। अवश्य जानबूझकर हार रहा है।
(गरजकर) तेनाली! मन से खेलो!

पहला दरबारी – ठीक से खेल जमाओ, तभी महाराज को आनंद आएगा।

दूसरा दरबारी – महाराज को अनाड़ी नहीं, बराबरी का खिलाड़ी चाहिए।

चौथा दरबारी – आप कुशल खिलाड़ी हैं, जानकर मत हारिए।

तेनाली – (मन में) अच्छा तमाशा बन रहा है मेरा।

राजा – (समझाते हुए) ठीक से खेलो! यह मत समझो कि मैं आसानी से हार जाऊँगा।

तेनाली – मैंने सच कहा था महाराज, मुझे खेल का ज्ञान नहीं है।

राजा – (क्रोधित होकर) तो क्या ये सब असत्य बोल रहे है?

सब दरबारी – महाराज, हमने अपनी आँखों से इन्हें बाज़ी–पर–बाज़ी जीतते हुए देखा है।

राजा – सुना? यदि अब भी हारे तो कठोर–से–कठोर दंड दूँगा।
(तेनाली चाल चलता है।)

राजा – (गरजकर) फिर अनाड़ी चाल! अपना सही रंग दिखाओ, खेल जमाओ!

तेनाली – जैसी आज्ञा! लीजिए, यह चलता हूँ।

राजा – उड़ गया न तुम्हारा प्यादा! (क्रोधित होकर) फिर जानकर हारे तुम।

पहला दरबारी – महाराज अति चतुर हैं। उनका अपमान किया तो ठीक नहीं होगा, तेनाली।

दूसरा दरबारी – (भड़काते हुए) महाराज का क्रोध भयंकर है, तेनाली।

राजा – अबकी हारे तो भरी सभा में तुम्हारा सिर मुँड़वा दूँगा। (खेल बढ़ाते हुए) यह रही मेरी चाल।

तेनाली – (सिर खुजाते हुए) मैंने इससे दिया उत्तर।

राजा – मारे गए तुम। सँभल जाओ। यह हुई मेरी अगली चाल।

तेनाली – और यह है मेरा दाँव।

राजा – फँसाया न? वज़ीर क्यों चले?

तेनाली – बेगम के बचाव के लिए वज़ीर बढ़ाया।

राजा – और यह कटा तुम्हारा वज़ीर।

तेनाली – अब आए स्वयं राजा।

राजा – गया तुम्हारा राजा। फिर पिट गए।इतनी मूर्खता? मुझे विश्वास नहीं रहा तुम पर तेनाली। (उठ खड़े होते हैं, शतरंज उलट देते हैं, मोहरे उठाकर ज़ोरों से फेंकते हैं।) अच्छा खेल बनाया हमारा। (दरबारियों से) कल दरबार में नाई बुलाना। तेनाली के बाल उतरवाऊँगा; अपमान का बदला लूँगा। (तमतमाया चेहरा लिए पाँव पटकते चल देते हैं।)

पहला दरबारी – (खुशी–खुशी) बन गई न बात।

तेनाली – (मुँह छिपाए) भरी सभा में मुंडन? इससे बढ़कर है कोई अपमान? (पर्दा गिरता है।)

## तीसरा दृश्य

(दरबार भवन। बीच में ऊँचा मंच। राजा सिंहासन पर। तेनाली अपने आसन पर। एक सेवक नाई को खींचता हुआ लाता है।)

नाई – (राजा के सामने गिरकर) मैंने कुछ नही किया, महाराज! मैं निर्दोष हूँ।

राजा – उठो, उठो। तुम्हें कोई सज़ा नहीं मिल रही है।

नाई – (खुश होकर) नहीं? फिर...?

राजा – अपना उस्तरा निकालो। मुंडन करना है।

नाई – मुंडन! तब तो इनाम भी अच्छा मिलेगा। फिर मुझे क्या? राज–दरबार में केश उतारूँ या नदी किनारे, सब बराबर। (पेटी खोल तैयारी करता है। तमाशा देखने के उत्सुक दरबारी धीरे–धीरे मंच के निकट आते हैं।)

तेनाली – क्षमा करें, महाराज।

राजा – क्षमा–वमा कुछ नहीं। यह तुम्हें पहले सोचना था, जब मेरा अपमान किया। मंच पर चढ़ो। (तेनाली हॉल के बीच मंच पर चढ़ता है।)

नाई – अरे, इतने महान आदमी का मुंडन!

राजा – डरो मत, नाई! तुम आज्ञा का पालन करो।

नाई – जो आज्ञा, महाराज! (उस्तरा लेकर तेनाली के पास जाता है।)

तेनाली – महाराज, आज्ञा दें तो एक निवेदन करूँ।

दरबारीगण – (आपस में) अवश्य कोई नई चाल है।

राजा – कहो तेनाली!

तेनाली – महाराज! इन बालों पर मैंने पाँच हज़ार अशर्फ़ियाँ उधार ली हैं। जब तक कर्ज़ा न चुका दूँ, केश कटवाने का कोई हक नहीं मुझे।

सब दरबारी– देखी तेनाली की धूर्तता।

राजा– शांत! दंड तो भुगतना पड़ेगा इनको। (सोचकर, एक दरबारी से) जाओ, अभी कोष से पाँच हज़ार अशर्फ़ियाँ निकलवाकर इनके घर भिजवाओ। (नाई से) काम पूरा करो। देखना, एक बाल भी न छूटे।

(दरबारी खुश। नाई फिर उस्तरा उठाता है।)

तेनाली – (रोककर) क्षण भर सधो भैया! (आसन लगाकर मंच पर बैठ जाता है। आँखें मूँद, हाथ जोड़ मंत्रों का उच्चारण करता है।) ओऽम् नमः शिवाय, ओऽम् नमः...

राजा – (बीच में) तेनाली, यह क्या?

दरबारी – (आपस में) एक नया ढोंग। हद है चतुराई की!

तेनाली – (आँखें खोलकर शांति से समझाते हुए) कृपया, बीच में न टोकें। मैं आपकी भलाई के लिए प्रार्थना कर रहा हूँ।

राजा – पहेली मत बुझाओ। नाई, देरी क्यों? उस्तरा उठाओ।

तेनाली – मेरी बात सुनने का कष्ट करें, महाराज!

दरबारी – (अधीर होकर) महाराज, मत सुनिए। नाई, अपना काम करो।

(नाई फिर उस्तरा उठाता है। राजा रोकता है।)

तेनाली – हमारे यहाँ माता–पिता के स्वर्ग सिधारने पर ही मुंडन होता है।

राजा – तुम्हारे माता–पिता स्वर्ग सिधार चुके हैं, फिर क्या आपत्ति?

तेनाली – महाराज, अब आप ही मेरे माता–पिता हैं। आप सामने विराजमान हैं। फिर मुंडन कैसे कराऊँ? इधर मेरा मुंडन हो, उधर आप स्वर्ग सिधारें, तो?

राजा – (घबराकर) अरे, यह कैसे हो सकता है?

तेनाली – आपके स्वर्ग सिधारने से पहले मैं मुंडन कराऊँ तो ज़रूर आप पर विपत्ति आएगी। इसलिए प्रभु को याद कर रहा हूँ।

राजा – (सोचते हुए) मुंडन से पहले सच में मृत्यु आ गई तो? नहीं, नहीं! रोक दो हाथ, नाई! तेनाली, दंड वापिस लिया मैंने!

तेनाली – महाराज! आप दीर्घायु हों, आप महान् हैं।

राजा – (मुस्कराते हुए) और तुम कुछ कम नहीं। तुमसे कौन जीत सकता है? अशर्फ़ियाँ भी लीं, दंड–अपमान से भी बचे। पर मैं तुम्हारी चतुराई से एक बार फिर खुश हो गया। चलो, बाग में चलें। (सिंहासन से उतरकर तेनाली को साथ लिए बाहर निकल जाते हैं।)

पहला दरबारी – (सिर ठोकते हुए) फिर छूट गया तेनाली।

दूसरा दरबारी – (लड़खड़ाकर गिरते हुए) पाँच हज़ार अशर्फ़ियाँ भी मार लीं।

तीसरा दरबारी – (बाल नोचते हुए) हम फिर हार गए।

सब दरबारी – हाय तेनाली! तुम्हारी बुद्धि ने हमें फिर मात दी।

(पर्दा गिरता है।)

## अभ्यास

### पाठ से

1. ''भरी सभा में मुंडन? इससे बढ़कर है कोई अपमान!'' ये वाक्य किसने, किससे और क्यों कहे?

6PMB6R

2. मुंडन किसका और क्यों हो रहा था?
3. तेनालीराम ने कैसे दंड से मुक्ति पाई और साथ ही पाँच हजार अशर्फियाँ प्राप्त की?
4. दरबारी तेनालीराम से क्यों चिढ़ते थे? कारणों को लिखिए।

## भाषा से

1. 'सिर चढ़ना' – प्रस्तुत एकांकी में आपने यह मुहावरा पढ़ा। ऐसे ही सिर से संबंधित चार और मुहावरे लिखिए तथा वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
2. नीचे कुछ संज्ञाएँ दी गईं हैं। आपको इनसे विशेषण बनाने हैं।

   शिक्षा, अपमान, दोष, ढोंग, क्रोध, ज्ञान।

3. विलोमार्थी शब्दों की जोड़ी बनाइए –

| | |
|---|---|
| प्रशंसा | अव्यवस्था |
| चतुराई | सज्जन |
| खुश | पराजय |
| दुष्ट | निंदा |
| उत्तम | नाखुश |
| जय | मूर्खता |
| व्यवस्था | अधम |

## योग्यता विस्तार

1. तेनालीराम की चतुराई की कई प्रसिद्ध कथाएँ हैं। ऐसी ही कोई एक–एक कथा कक्षा में अलग–अलग विद्यार्थी सुनाए।
2. शतरंज का जन्म भारत में हुआ था। ऐसे और खेलों का पता लगाइए जिनकी जन्मभूमि भारत है।
3. सोचिए कि यदि आप तेनालीराम की जगह होते/होतीं तो क्या करते/करतीं ?
4. इस एकांकी को कहानी के रूप में कक्षा में सुनाइए।
5. इस एकांकी को अभिनय द्वारा बालसभा में प्रस्तुत कीजिए।
6. शतरंज का खेल बुद्धि का खेल है। शतरंज की बिसात का चित्र देखिए और समझिए। इसमें प्रत्येक मोहरा निश्चित स्थान पर रखा जाता है,फिर खेल प्रारंभ होता है। प्रत्येक मोहरे की चाल निर्धारित रहती है। इनकी चालों के बारे में जानकारी लीजिए ।

## शतरंज की बिसात

dkys eksgjs

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| gkFkh | ?kksM+k | Å¡V | othj | jktk | Å¡V | ?kksM+k | gkFkh |
| I;knk | I;knk | I;knk | I;knk | I;knk | I;knk | I;knk | I;knk |
| | | | | | | | |
| | | | | | | | |
| | | | | | | | |
| | | | | | | | |
| I;knk | I;knk | I;knk | I;knk | I;knk | I;knk | I;knk | I;knk |
| gkFkh | ?kksM+k | Å¡V | othj | jktk | Å¡V | ?kksM+k | gkFkh |

IQsn eksgjs

पाठ 16

# काव्य-माधुरी

–संकलित

72JBQL

भक्ति कालीन काव्य धारा में सूर, तुलसी, रसखान, धरमदास का अप्रतिम स्थान है। इन भक्त–संत कवियों की भाव अभिव्यक्ति में भाषा और शैली की अपनी विविधता अवश्य है पर सार एक ही है ईश्वर के साकार रूप अथवा निराकाररूप की भक्ति में अपने को लीन करना। सूर जहाँ ब्रजभाषा में कृष्ण की बाल लीला का गायन करते हैं वहीं तुलसी अवधी में राम के चरित्र का रेखांकन करते हैं। यही स्थिति रसखान की है जो कृष्ण की भक्ति में इतने समर्पित हैं कि हर जन्म में ब्रज में बसने को व्याकुल हैं। धरमदास जी जो बहुश्रुत कबीर के शिष्य हैं अपनी मातृभाषा में सांसारिकता से मुक्ति और सद्गुरु का संदेश सुनाते हैं, जिससे मानव जन्म की प्राप्ति को सार्थक बनाया जा सके।

मैया मोरी, मैं नहिं माखन खायो।
भोर भयो गैयन के पाछे, मधुबन मोहि पठायो।।
चार पहर बंसीबट भटक्यो, साँझ परे घर आयो।
मैं बालक बहियन कौ छोटौ, छींकौ केहि विधि पायो।।
ग्वाल–बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटायो।
तू जननी मन की अति भोरी, इनके कहे पतियायो।।
जिय तेरे कछु भेद उपजि है, जानि परायो जायो।
यह लै अपनी लकुटि कमरिया, बहुतहिं नाच नचायो।।
सूरदास, तब बिहँसि जसोदा, लै उर कंठ लगायो।।

– सूरदास

बैठी सगुन मनावत माता।
कब अइहैं मेरे लाल कुसल घर, कहहु काग फुरि बाता।।
दूध भात की दोनी दैहौं, सोने चोंच मढ़ैहौं।
जब सिय सहित बिलोकि नयन भरि, राम–लखन उर लैहौं।।
अवधि समीप जानि जननी जिय, अति आतुर अकुलानी।

गनक बुलाइ पाँय परि पूछति, प्रेम मगन मृदु बानी।।
तेहि अवसर कोउ भरत निकट ते, समाचार लै आयो।
प्रभु आगमन सुनत तुलसी मनो, मीन मरत जल पायो।।

– तुलसी

मानुष हौं तो वही रसखानि, बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जौ पशु हौं तो कहा बस मेरौ, चरौं नित नंद की धेनु मझारन।।
पाहन हौं तो वही गिरि कौ, जो धर्‌यौ कर छत्र पुरंदर कारन।
जो खग हौं तो बसेरौ करौं, नित कालिंदी कूल कदंब की डारन।।

– रसखान

हमार का करै हाँसी लोग।
मन मोर लागे है सतगुरु से, भला होय के खोट।।
जब से सतगुरु ज्ञान दए हैं, चले न केहू के जोर।
मात रिसाई, पिता रिसाई, रिसाय बटोहिया लोग।।
ज्ञान खड़ग तिरगुन कौ मारौ, पाँच पचीसो चोर।
अब तौ मोहि ऐसन बन आए, सतगुरु रचे संजोग।।
आवत साथ बहुत सुख लागै, जात बियापे रोग।
धरमदास बिनबै कर जोरों, सुनौ हो बंदी छोर।।
जाके पद त्रय लोक से न्यारा, सो साहब कस होय।।

– धरमदास

## टिप्पणी–

**जो धर्‌यो कर छत्र पुरंदर कारन** = कृष्ण ने गोकुलवासियों को इंद्र की पूजा न करके गोवर्धन पर्वत की पूजा करने के लिए प्रोत्साहित किया था। इससे इंद्र ने नाराज होकर गोकुल पर बड़े वेग से वर्षा कराई। कृष्ण ने तब गोवर्धन पर्वत के नीचे सारे गोकुलवासियों को बुलाकर उनकी रक्षा की थी।

**दूध–भात की .... मढ़ैहों** = आज भी लोगों में ऐसी मान्यता है कि घर में अगर कोई प्रिय व्यक्ति विदेश से आ रहा हो तो कौआ प्रातः ही मुँडेर पर बैठकर 'काँव–काँव' करता है। ऐसा ही दृश्य राम के वनवास से लौटने के पूर्व कौशल्या माता के सम्मुख उपस्थित हुआ था।

# अभ्यास

## पाठ से

1. माखन न खाने की सफाई कृष्ण किस प्रकार देते हैं?
2. बाल कृष्ण की किन बातों को सुनकर माता यशोदा को हँसी आ गई?
3. 'काग चोंच को सोने से मढ़वा दूँगी', कौशल्या कौए को सम्बोधित करती हुई यह क्यों कहती हैं?
4. रसखान के ब्रजभूमि से प्रेम के दो उदाहरण लिखिए।
5. 'ज्ञान खड्ग तिरगुन को मारे' से धरमदास जी का क्या आशय है?
6. धर्मदास ने 'बंदी छोर' किसे कहा है और क्यों?
7. माँ अपने बच्चों के कुशल–मंगल के लिए क्या–क्या करती है?

## पाठ से आगे

1. क्या कारण है कि रसखान पुनर्जन्म में किसी भी रूप में ब्रज में जन्म लेने के लिए विधाता से याचना करते हैं? उनकी इस याचना के बारे में विचार कर लिखिए।

2. भावार्थ लिखिए–

   (क) पाहन हौं तो वही गिरि कौ, जो धर्‌यो कर छत्र पुरंदर कारन।
   जो खग हों तो बसेरौ करौं, मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन।।

   (ख) जब से सद्‌गुरु ज्ञान दए हैं, चले न केहू के जोर।
   मात रिसाई, पिता रिसाई, रिसाय बटोहिया लोग।।

3. 'मेरा प्रिय कवि' विषय पर एक पृष्ठ का निबंध लिखिए।
4. आप भी अपने बचपन में अपनी माँ से अवश्य रूठे होंगे। तब आपने कैसे–कैसे रूप धारण किए होंगे, यादकर लिखिए।
5. सूरदास, तुलसीदास, रसखान, धरमदास की कविताओं में क्या समानता दिखाई पड़ती है लिखिए।

## भाषा से

1. 'ज्ञान' शब्द के 'न' में 'ई' प्रत्यय लगाने से शब्द बना है 'ज्ञानी'। ऐसे ही 'दान', 'मान', 'ध्यान' शब्दों में 'ई' प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाइए और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
2. इन शब्दों को छत्तीसगढ़ी बोली में लिखिए।

   दूसरा, पायो, गाय, निकट, कछु, बहियन, परायो, सिर, लगन।
3. इस पाठ में अनेक तद्भव शब्दों का प्रयोग हुआ है। निम्नलिखित तद्भव शब्दों के तत्सम रूप लिखिए।

   सोना, नाच, साँझ, दूध, पाँय, चोंच, छुद्र।

   'जानि जननी जिम' में 'ज' की आवृत्ति होने से अनुप्रास अलंकार है।
4. इस पाठ में से अनुप्रास अलंकार के कोई दो उदाहरण चुनकर लिखिए।

5. नीचे लिखी काव्य–पंक्तियों को छत्तीसगढ़ी में स्पष्ट कीजिए –

   क. यह लै अपनी लकुटि कमरिया, बहुतहिं नाच नचायो।

   ख. कब अइहैं मेरे लाल कुसल घर, कहहु काग फुरि बाता।

## योग्यता विस्तार

1. संत धरमदास हिन्दी के प्रसिद्ध कवि और समाज–सुधारक कबीरदास जी के शिष्य थे। इनके अन्य पद खोजिए और उन्हें कक्षा में सुनाइए।
2. रसखान के कुछ सवैए खोजिए और उन्हें कक्षा में सुनाइए।
3. कक्षा में अंत्याक्षरी प्रतियोगिता आयोजित कीजिए जिसमें छंदों का ही प्रयोग हो।
4. सूरदास, तुलसीदास, रसखान व धरमदास जी के जीवन वृत्त पर शिक्षक से चर्चा कीजिए।

●●●

पाठ 17

# वर्षा-बहार

– श्री मुकुटधर पांडेय

73KUX7

छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध और प्रकृति के चितेरे कवि श्री मुकुटधर पाण्डेय जी की प्रस्तुत कविता वर्षा बहार, वर्षा ऋतु के मनोरम दृश्यों और भावों को सहज रूपों में अभिव्यक्त करती है। वर्षा के कारण संपूर्ण प्राकृतिक परिवेश में जिस तरह के मोहक और आकर्षक परिवर्तन को कवि देखते और महसूस करते हैं उसे सरल भाव–लय में कविता में व्यक्त करते चलते हैं। कवि की दृष्टि मेघमय आसमान से लेकर हवा, पानी बादल, बिजली, जीव, जलचर, सौरभ, सुगीत, हंस, किसान सभी पर पडती चलती है। अंत में कवि का आतुर मन गा उठता है–"इस भाँति है अनोखी, वर्षा बहार भू पर, सारे जगत की शोभा है, निर्भर है इसके ऊपर"।

वर्षा बहार सबके, मन को लुभा रही है
नभ में छटा अनूठी, घनघोर छा रही है।
बिजली चमक रही है, बादल गरज रहे हैं
पानी बरस रहा है, झरने भी बह रहे हैं।
चलती हवा है ठंडी, हिलती हैं डालियाँ सब,
बागों में गीत सुंदर, गाती हैं मालिनें अब।
तालों में जीव जलचर, अति हैं प्रसन्न होते,
फिरते लाखो पपीहे, हैं ग्रीष्म ताप खोते।
करते हैं नृत्य वन में, देखो ये मोर सारे,
मेंढक लुभा रहे हैं, गाकर सुगीत प्यारे।
खिलता गुलाब कैसा, सौरभ उड़ा रहा है,
बागों में खूब सुख से, आमोद छा रहा है।
चलते कतार बाँधे, देखो ये हंस सुंदर,
गाते हैं गीत कैसे, लेते किसान मनहर।
इस भाँति है अनोखी, वर्षा बहार भू पर,
सारे जगत की शोभा, निर्भर है इसके ऊपर।

# अभ्यास

## पाठ से

1. वर्षा सबके मन को कैसे लुभा रही है ?
2. वर्षा ऋतु में हवा और बादल के विषय में क्या कहा गया है?
3. सौरभ के उड़ने से क्या हो रहा है ?
4. कवि किसानों के गीतों को मनहर क्यों कह रहा है ?
5. जीव–जलचर पर वर्षा का क्या प्रभाव पड़ रहा है ?
6. पपीहे द्वारा ग्रीष्म ताप खोने का अर्थ क्या है ?
7. 'सारे जगत की शोभा निर्भर इसके ऊपर' कहने से कवि का क्या आशय है ?

## पाठ से आगे

1. वर्षा का मोहक रूप आप भी देखते होंगे वर्षा के कारण हमारे आस–पास की प्रकृति में क्या परिवर्तन होता है ?
2. वर्षा ऋतु जीवन और जगत को सरस बना देती है कैसे ? आपस में चर्चा कर लिखिए।

73UQYU

3. वर्षा ऋतु की अपनी चुनौतियाँ भी हैं जैसे रास्ते में कीचड़ का होना, वस्त्रों और बस्ते का भीगना, रास्ते में जल का जमाव होना आदि। आप अपने आस–पास वर्षा के कारण किस तरह की कठिनाइयों को देखते हैं, चर्चा कर उनका लेखन कीजिए।
4. वर्षा ऋतु का किसानों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है ? सहपाठियों से बातचीत कर उसे निबन्ध के रूप में लिखिए।
5. वर्षा का प्रभाव पेड़, पौधों वनस्पतियों पर किस प्रकार पड़ता है ? इस विषय पर चर्चा कर अपने विचारों को व्यक्त कीजिए।

## भाषा से

1. इस चौखट में चार शब्दों के दो–दो पर्यायवाची शब्द दिए गए हैं। शब्द लिखकर उनके सामने पर्यायवाची शब्द लिखिए।

| |
|---|
| आकाश, पानी, बादल, मेघ, हवा, वायु, नभ, तोय, गगन, नीर, जलद, पवन। |

2. इनके विलोम शब्द लिखिए–

744M1H

ठंडी, सुख, सुन्दर, प्रसन्न।

3. 'मोद' शब्द में 'आ' उपसर्ग के योग से शब्द बना है – 'आमोद।' इसी प्रकार निम्नांकित उपसर्गों के योग से नए शब्द बनाइए–

अ, अनु, प्र, परि

4. **(क)** "तालों में जीव जलचर, अति हैं प्रसन्न होते।"
इस पंक्ति में **'जीव जलचर'** को ध्यान से पढ़िए। इसमें 'ज' शब्द की आवृत्ति दो बार हुई है। इसलिए यहाँ अनुप्रास अलंकार है। इस कविता में से अनुप्रास अलंकार के दो उदाहरण लिखिए।
**(ख)** "दामिनी दमक रही घन माहीं – खल की प्रीति यथा थिर नाहीं", इस पंक्ति में दामिनी (बिजली) की चमक को खल (दुष्ट) की प्रीति के समान अस्थिर बताया गया है। जब दो वस्तुओं में समान गुण के कारण समता बताई जाती है तब उपमा अलंकार होता है। उपमा अलंकार के लिए चार बातें आवश्यक हैं– **1.** जिसकी तुलना की जाय या जिसकी उपमा दी जाए। **2.** जिससे तुलना की जाए या जिससे उपमा दी जाए। **3.** जिन गुणों के कारण तुलना की जाय या उपमा दी जाय। **4.** जिन शब्दों से उपमा प्रगट होती है। जिसकी तुलना की जाय उसे **उपमेय** कहते हैं। जिससे तुलना की जाए उसे **उपमान** कहते हैं। समान गुणों को **साधारण धर्म** कहते हैं और जैसे– जिमि, ज्यों, सम, सा, तुल्य आदि शब्द **वाचक शब्द** कहलाते हैं।
ऊपर के उदाहरण में 'दामिनी की दमक' उपमेय है, 'खल की प्रीति' उपमान है; 'स्थिर न होना' साधारण धर्म है और 'यथा' वाचक शब्द। इसलिए यह उपमा अलंकार है।
5. अपनी पढ़ी हुई कविता से उपमा अलंकार का कोई उदाहरण चुनकर लिखिए।
6. इस कविता में प्रयुक्त तत्सम और तद्भव शब्दों की सूची बनाइए।

## *योग्यता विस्तार*

1. वर्षा ऋतु से संबंधित बहुत सारी कविताएँ आपने पूर्व की कक्षाओं में पढ़ी होंगी उन्हें लिखकर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।
2. वर्षा ऋतु में हमारे जीवन में क्या चुनौतियाँ आती हैं इसका आपस में मिलकर चित्रांकन कर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।
3. यहाँ कविता की प्रथम पंक्ति दी गई है। इसके आधार पर अन्य तीन पंक्तियों की रचना कीजिए।
बादल बरसें, नाचें मोर
_____ _____ _____
4. तुलसीदास जी ने रामचरितमानस के किष्किंधाकांड में वर्षा ऋतु का वर्णन किया है। उसकी कुछ पंक्तियाँ पढ़िए।
घन घमंड नभ गरजत घोरा – प्रियाहीन डरपत मन मोरा।
दामिनि दमक रही घन माहीं – खल की प्रीति यथा थिर नाहीं।
बरसहिं जलद भूमि नियराए – यथा नवहिं बुध विद्या पाए।
अर्क जवास पात बिनु भयऊ – जिमि सुराज खल उद्यम गयऊ।
बूँद अघात सहहिं गिरि कैसे – खल के बचन संत सह जैसे।

●●●

पाठ 18

# मितानी

–लोककथा

हमर देश के संस्कृति म मितानी के अब्बड़ महत्तम हे। राम–सुग्रीव अउ कृष्ण–सुदामा के मितानी के बारे म तुमन जानत होहू। वइसे तो मिलइया–जुलइया मनखे मन के बीच म मितानी होइ जाथे,पर छत्तीसगढ़ म मितानी के एक नवा रीत हवय। ओ आय मितानी बदे के परंपरा। मितानी के नता ह कई पीढ़ी के नता आय। मितान बदइया के लइका अउ नाती–नतुरा मन घलो ये नता ल बड़ मान देथें। मितान के विपत्ति म सहायता करना सबले बड़का धर्म आय। आवव, अइसने एक ठन लोककथा पढ़न,जेमा केछवा और मँजूर के मितानी के बारे म बताय गय हे।

तरिया के निरमल पानी म खोखमा के सुग्घर–सुग्घर फूल – फूले रहँय। फूल म तितली अउ भौंरा मन लुर–लुर के गीत गावत रहँय। तरिया के तीर बर,पीपर,आमा,अमली के घन पेड़ रहँय। ओ तरिया म एक ठन केछवा रहय। ओही तरिया पार के पीपर पेड़ म एक ठन मँजूर घलो रहय। एहर तीर–तखार के खेत–खार म जा के चारा चरय अउ पीपर पेड़ म बसेरा करय। जब करिया–करिया बादर उमडे–घुमड़े त मँजूर हर अपन पाँख ल छितराके झूम–झूमके नाचय। एती हवा ले पीपर पान झूम–झूमके गीत गावय अउ ताली बजावय। केछवा हर तरिया ले निकल के मँजूर के नाचा ल देख के मगन हो जाय।

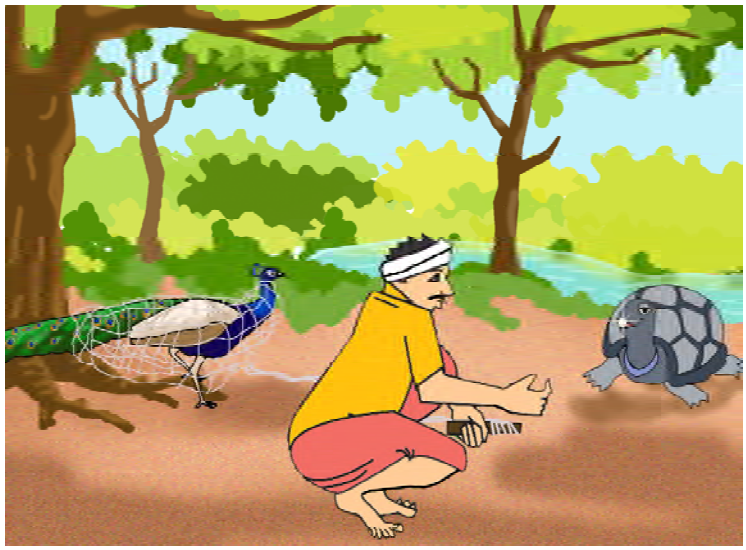



केछवा हर मँजूर ल कथे–'वा भाई मँजूर, तँय तो बढ़िया नाचथस अउ तोर पाँख हर बहुत सुग्घर सजे हे। लगथे अगास के चंदा–चँदैनी हर पाँख म उतरे हें।' सुन के मँजूर हर मनेमन मुचमुचाइस। मँजूर हर रोज पीपर के रूख ले उतर के तरिया के पार म नाचय। केछवा हर ओला मन भर के देखय। मँजूर हर तरिया के पानी पी के पीपर पेड़ म बइठ के अराम करय अइसन तरह ले मँजूर अउ केछवा म दूनों के पोठ मितानी होगे।

एक दिन मँजूर हर मगन होके नाचत रहिस त केछवा हर किहिस–''मितान ! लकठा म आके नाचव न! काबर के तुँहर नचाई हर मोला नीक लागथे। मन के अघात ले देखे चाहत हँव।'' मँजूर ह केछवा के मया के गोठ ल टारे नइ सकिस अउ तीर म आके नाचे लगिस। अब अइसन रोज होवय. ... मँजूर नाचे अउ केछवा हर देखे। मितानी म मया के धार बोहाय लागिस।

एक दिन संझा सिकारी आके उहाँ अपन फाँदा ल फैला दिस। एला केछवा अउ मँजूर नइ जानिन। बिहनिया ओमा मँजूर ह फँदगे। अब तो मँजूर के करलाई होगे। अपन मितान ल कथे–''मितान!मोला बचावव,सिकारी आही, तहाँ मोला मार डारही। तोर मितानी अउ मया म परान गँवा डारहूँ, तइसे लागथे। उबारे के कुछु उदिम करव।'' केछवा बड़ चतुरा रहिस। ओहर हड़बड़ाइस नहीं। फाँदा म परे मितान ल कथे–''काहीं फिकर झन करव। धीरज बाँधे रहव,तुँहला फाँदा ले छोड़ाहूँ। संकट के बेरा मितान हर मितान के काम नइ आइस त ओहर मितान नोहय।''

एती दूनो मितान के गोठ होते हे अउ ओती सिकारी आगे। फाँदा म फँदे मँजूर ल धरके फाँदा ले निकाले लगिस त केछवा हर सिकारी ल कथे –''तँय तो मोर मितान ल फाँदा म फोकट फँसाए हस। एला मार के का करबे ?'' अतका म सिकारी हर हाँसत कथे–''फसातेंव नहीं त का करतेंव। एहर मोर धंधा आय। एला मारँव नहीं, बजार म बेंच के रुपिया पाहूँ अउ दार–चाँउर बिसाहूँ .... ।''

केछवा कथे–''बस अतकेच। छोड़ दे, मोर मितान ल। जंगल के कोनो जीव ल मारे ले हत्या लगथे। एला छोड़बे त एकर बदला म तोला एक ठन बढ़िया चीज देहूँ, जेन ल बेंच के तोर परिवार बर दार–चाउँर बिसा लेबे।'' सिकारी कहिस–''तोर का बिंसवास।'' केछवा हर पानी भीतर बुड़िस अउ छिन भर म एक ठन मोती लान के कथे–''ले ! एहर मोती आय,बेचबे त खूब पइसा मिलही।''

सिकारी हर मोती ल लेके खुश होगे। मँजूर ल छोड़ दिस अउ कुलकत घर आइस। सिकारी के दू झन बेटा रहँय–कोंदा अउ मंसा। सिकारी हर अपन दूनो बेटा ल मोती ल देखाइस त ओला ले बर दुनो झन झगरा होय लगिन। ऊँकर मनके झगरा ल देख के सिकारी ह सोंचिस–'मोती ह बड़ कीमती हे, एला छोड़त नइ बने,अउ छोड़त हँव त घर म झगरा हे।' सिकारी हर असमंजस म परगे।

एक दिन ओही मेर फाँदा ल फेर फैलाइस।.... मँजूर फँदगे। एक पइँत परान बचे रहिस। अब का होही ? केछवा अउ मँजूर ल गुने ल परगे। मँजूर कथे–''मितान! एक पइँत परान ल फेर बचावव।'' केछवा ल कुछू उपाय सुझत नइ रहय। कथे–''हाँ,मितान! तोला बचाए बर गुनत हँव, ये पइँत जान बचगे त तोला ये ठउर ल छोड़के जंगल म जाए ल परही,जिंहा ये सिकारी झन जा सकय। ओहर बड़ लालची हे। मोती के लालच म घेरी–बेरी फाँदा ल खेलही।'' केछवा के गोठ ल सुन के मँजूर ल थोकिन दुःख लगिस फेर सोंचिस, परान बचाय बर मितान के मया ल छोड़ के जंगल बीच जाएच ल परही। अतका म सिकारी आ गे। मँजूर ल फाँदा म फँदे देख के कुलक गे। एती केछवा हर सिकारी ल कथे– ''ये सिकारी भाई! मोर मितान ल काबर फँसाए हस? तोला तो महीना भर के खरचा के पुरता मोती दे रहेंव। अइसन लालच झन कर,एहर अनियाव आय।''

सिकारी कथे–''तैं तो बात बड़ नियाँव के कहत हस। एमा मोर कोती ले कोनो लालच नइये। मोती ल देखके मोर दूनो बेटा मन मोती ल ले बर झगरे लगिन,मारा–पीटा करे लगिन।ओ मन ल झगरा ले बचाय खातिर मोला फाँदा डारे बर परिस हे। अब ओइसनेच मोती लान के अउ दे देवव त मैं ह ये मँजूर ल ढील देहूँ। मोती ह ओइसनेच होना चाही–न घट,न बढ़।''

केछवा ल उपाय सूझगे। ओ ह सिकारी ल कथे–''सिकारी भइया !ओइसनेच मोती लाने खातिर पहिली वाले मोती के नाप–जोख करे बर परही,तउले बर परही। मैं तोला ओइसनेच मोती दे बर

तियार हँव। फेर पहिली वाले मोती ल लान के तैं मोला दे दे।'' केछवा के बात ल सुन के सिकारी के मन कुलक गे। मन म थोरिक लालच अमागे। ओहा केछवा के बात ल मान गे। फाँदा ले मँजूर ल ढील दिस, सिकारी मंजूर उड़िया गे अउ मोती ल लाय बर घर कोती दउँड़गे।

सिकारी ह मोती लान के केछवा ल दे दिस। केछवा ह मोती ल पानी म फेंक दिस अउ सिकारी ल किहिस–''तँय एक मोती लेवस नहीं अउ मँय ह दू मोती देवँव नहीं।आज तँय बेटा मन के खातिर फाँदा डारे हस। काली अपन घर–गोसइन के कहे म फाँदा डारबे। परनदिन अपन परोसी मन खातिर इही बूता करबे। तोर लालच ह बाढ़तेच जाही। तैं लालची भर नइ हस,बिंसवासघाती घलो हस।'' अइसे कहिके केछवा ह पानी भीतर डुबकी मार दिस। सिकारी ह हाथ रमजत रहिगे।

## छत्तीसगढ़ी शब्द मन के हिन्दी अर्थ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| लुर–लुर करना | = | मँडराना | पोठ | = | समृद्ध |
| लकठा | = | समीप,नजदीक | नीक | = | अच्छा,सुंदर |
| अघात | = | तृप्त होना | गोठ | = | बात या बातचीत |
| फाँदा | = | जाल | करलइ | = | दुःख,व्यथा,विलाप |
| उदिम | = | उपाय | कुलक भरिस | = | खुश हुआ, |
| ढिलना | = | मुक्त या स्वतंत्र करना | | | प्रफुल्लित हुआ |
| रमजत | = | मलता हुआ, रगड़ता हुआ | ठऊर | = | स्थान |

## अभ्यास

### पाठ से

1. मंजूर हर अपन पाँख ल काबर छितराय हे ?
2. केछवा ह मंजूर ल पहिली बार देखके का कहिथे ?
3. मंजूर ह सिकारी के फाँदा मा कइसे फँदगे?
4. अपन मितान के छोड़े के खातिर केछुवा ह सिकारी ल का कहिथे?
5. सिकारी ह मंजूर ल काबर छोड़ देथे ?
6. सिकारी के लालच बाढ़े के का कारण रहिस ?
7. आखिर म केछवा ल का उपाय सूझिस अउ ओ हर का करिस ?
8. सिकारी ह काबर पछतावत रहिगे ?

### पाठ से आगे

1. मंजूर सहीं कहूँ तुम्हर मितान कोनो मुसीबत में फस जाही त तुमन ओला उबारे बर का उदिम करहू ? सोच के लिखव।

2. मंजूर के जगह म केछ्वा ल सिकारी फँसा लेतिस त केछ्वा ल बचाय बर मंजूर का सोचतिस? साथी मन संग चर्चा करके लिखव।
3. मंजूर ल फाँदा म फँसे देखके केछवा कहूँ भाग जातिस त दूनो के मितानी मा का परभाव पड़तीस सोच के लिखव।
4. सिकारी ह मोती के लालच म पहिली मोती ल घलो गवाँदिस अउ लालच नई करतिस त ओकर जीवन म का सुधार होतिस ? साथी मन संग सोच के लिखव।

## भाषा से

1. खाल्हे लिखाय मुहावरा मन के अर्थ लिखव अउ वाक्य म परयोग करव– पोटा–काँपना, करलइ होना, असमंजस म परना, लालच म परना।
2. पाठ म आय 'मितानी' व 'सिकारी' शब्द भाववाचक संज्ञा आय जौन ह मितान, सिकार शब्द म 'ई' प्रत्यय लगके बने हवय। अइसने 'ता' प्रत्यय लगा के 'महान' के महानता 'शत्रु' के शत्रुता शब्द बनाय जाथे। अइसने खाल्हे लिखाय शब्द मन ल **ई** अउ **ता** प्रत्यय लगाके बनावव–
   बीमार, सच्चा, बुरा, प्रबल, विमुख, कांत, शिष्य।
3. खाल्हे लिखाय शब्द मन ल पढ़व–
   रहय–रहना, गावय–गाना, करय–करना, छितरावय–छितराना, मुचमुचावय–मुचमुचाना, लागय–लगना ये सब शब्द मन ह कोनों काम के होय के बोध कराथे इही ल क्रिया कहे जाथे। अइसने पाठ में आय क्रिया शब्द ल खोज के हिंदी में अर्थ लिखव।
4. खाल्हे लिखाय शब्द मन के हिंदी में अर्थ लिखव अउ ओकर उल्टा शब्द लिखव–
   मितानी, खुश, चतुरा, बिसाना, तीर।
5. उचित संबंध जोड़व–

| क | ख |
|---|---|
| खोखमा | फाँदा |
| मंजूर | निरमल |
| पानी | सुघ्घर |
| भौंरा | पाँख |
| सिकारी | गीत |

## योग्यता विस्तार

1. अपन आसपास म मितानी के कोनों किस्सा सुने होहू ओला लिखव।
2. राम अउ सुग्रीव के मितानी के बारे में पता करके अपन भाषा म लिखव।

●●●

75NXBD

पाठ 19

# शहीद बकरी

—श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय

**बहुधा यह बात रेखांकित की जाती है कि संगठन में शक्ति है। अगर कोई भी समूह संगठित है तो वह अत्याचार, अन्याय और उत्पीड़न का डट कर मुकाबला करते हुए उसे परास्त कर सकता है। लेकिन यह भी सच है कि पहल कोई एकाकी ही करता है। ऐसा ही एक पहल इस कहानी में एक युवा बकरी भेड़िये से डट कर मुकाबला करते हुए करती है। युवा बकरी मरने के भय से बाड़े में कैद होना स्वीकार नहीं करती बल्कि वह हत्यारे और निरीह बकरियों का खून करने वाले भेड़िये को घायल, पीड़ा और दर्द से छटपटाते हुए देखना चाहती है। बकरी अपने आक्रमण से भेड़िये को लहूलुहान और घायल कर देती है, यह अवश्य होता है कि इसमें वह अपने साथियों की अकर्मण्यता के कारण ढेर हो जाती है, पर एक उदाहरण अवश्य रख जाती है कि साहस से भरी सिर्फ एक बकरी भी भेड़िये को घायल और घावों के सड़न से मरने को बाध्य कर सकती है।**

हरे—भरे पहाड़ पर बकरियाँ चरने जातीं तो दूसरे—तीसरे रोज एक—न—एक बकरी कम हो जाती। भेड़िए की इस धूर्तता से तंग आकर चरवाहे ने, वहाँ बकरियाँ चराना बंद कर दिया और बकरियों ने भी मौत से बचने के लिए बाड़े में कैद रहकर जुगाली करते रहना ही श्रेष्ठ समझा। लेकिन न जाने क्यों एक युवा नई बकरी को यह बंधन पसंद नहीं आया। अत्याचारी से यों कब तक प्राणों की रक्षा की जा सकेगी ? वह पहाड़ से उतरकर किसी रोज बाड़े में भी कूद सकता है। शिकारी के भय से मूर्ख शुतुरमुर्ग रेत में गर्दन छुपा लेता है। तब क्या शिकारी उसे बख़्श देता है ? इन्हीं विचारों से ओत—प्रोत वह हसरत भरी नजरों से पर्वत की ओर देखती रहती। साथिनों ने उसे आँखों—आँखों में समझाने का प्रयत्न किया कि वह ऐसे मूर्खतापूर्ण विचारों को मन में न लाए। भोग्य सदैव से भोगने के लिए ही उत्पन्न होते रहे हैं। भेड़िए के मुँह हमारा खून लग चुका है, वह अपनी आदत से कभी बाज़ नहीं आएगा।

लेकिन नई युवा बकरी तो भेड़िए के मुँह में लगे खून को ही देखना चाहती थी। वह किस तरह छटपटाता है, यह करतब देखने की उसकी लालसा बलवती होती गई। आखिर एक रोज़ मौका पाकर बाड़े से वह निकल भागी और पर्वत पर चढ़कर स्वच्छंद विचरती, कूदती— फाँदती दिन भर पहाड़ पर चरती रही; मनमानी कुलेलें करती रही। भेड़िए को देखने की उसे उत्सुकता भी बनी रही, परन्तु उसके दर्शन न हुए। झुटपुटा होने पर लाचार, जब वह नीचे उतरने को बाध्य हुई तो रास्ते में दबे पाँव भेड़िया आता हुआ दिखाई दिया। उसकी रक्तरंजित आँखें, लपलपाती जीभ और आक्रमणकारी चाल से वह सब कुछ समझ गई। भेड़िया मुस्कराकर बोला, "तुम बहुत सुंदर और प्यारी मालूम होती हो। मुझे तुम्हारी जैसी साथिन की आवश्यकता थी। मैं कई रोज से अकेलापन महसूस कर रहा था। आओ, तनिक साथ—साथ पर्वतराज की सैर करें।"

बकरी को भेड़िए की बकवास सुनने का अवसर न था। उसने तनिक पीछे हटकर इतने जोर से टक्कर मारी कि असावधान भेड़िया सँभल न सका। यदि बीच का भारी पत्थर उसे सहारा न देता तो औंधे मुँह नीचे गिर गया होता।

भेड़िए की जिंदगी में यह पहला अवसर था। वह किंकर्तव्यविमूढ़–सा हो गया। टक्कर खाकर अभी वह सँभल भी न पाया था कि बकरी के पैने सींग उसके सीने में इतने जोर से लगे कि वह चीख उठा। क्षत–विक्षत सीने से लहू की बहती धार देख, भेड़िए के पाँव उखड़ गए। मगर एक निरीह बकरी के आगे भाग खड़ा होना उसे कुछ जँचा नहीं। वह भी साहस बटोरकर पूरे वेग से झपटा। बकरी तो पहले से ही सावधान थी; वह कतराकर एक ओर हट गई और भेड़िए का सिर दरख्त से टकराकर लहूलुहान हो गया।

लहू को देखकर अब भेड़िए के लहू में भी उबाल आ गया। वह जी–जान से बकरी के ऊपर टूट पड़ा। अकेली बकरी उसका कब तक मुकाबला करती ? वह उसके दाँव–पेंच देखने की लालसा और अपने अरमान पूरे कर चुकी थी। साथियों की अकर्मण्यता पर तरस खाती हुई बेचारी ढेर हो गई।

पेड़ पर बैठे हुए तोते ने मुस्कराकर मैना से पूछा, "भेड़िए से भिड़कर भला बकरी को क्या मिला?"

मैना ने सगर्व उत्तर दिया, "वही जो अत्याचारी का सामना करने पर पीड़ितों को मिलता है। बकरी मर जरूर गई, परन्तु भेड़िए को घायल करके मरी है। वह भी अब दूसरों पर अत्याचार करने के लिए जीवित नहीं रह सकेगा। सीने और मस्तक के घाव उसे सड़–सड़कर मरने को बाध्य करेंगे। काश, बकरी की अन्य साथिनों ने उसकी भावनाओं को समझा होता। छिपने के बजाय एक साथ वार किया होता तो वे आज बाड़े में कैदी जीवन व्यतीत करने के बजाय पहाड़ पर निःशंक और स्वच्छंद विचरती होतीं।"

तोता अपना–सा मुँह लेकर चुपचाप शहीद बकरी की ओर देखने लगा।

# अभ्यास

## पाठ से

1. बकरियों ने कैद में ही रहकर जुगाली करना क्यों उचित समझा ?
2. युवा नई बकरी को बाड़े का बंधन पसंद क्यों नहीं आया ?
3. युवा बकरी ने भेड़िए पर किस तरह वार किया ?
4. भेड़िए ने बकरी को अपने जाल में फँसाने के लिए क्या प्रलोभन दिया ?
5. तोते ने मुस्कुराते हुए मैना से क्या सवाल पूछा और क्यों ?
6. "भोग्य सदैव से भोगने के लिए ही उत्पन्न होते रहे हैं" से क्या तात्पर्य है ?

## पाठ से आगे

1. युवा बकरी द्वारा भेड़िए पर पहले ही आक्रमण करने के पीछे क्या कारण रहे होंगे ? आप विचार कर लिखिए?
2. आपकी समझ में भेड़िए से भिड़कर बहादुरी से अपनी जान गँवाने वाली युवा बकरी को क्या मिला ?

7H36RX

3. यदि अन्य बकरियाँ उस युवा बकरी का साथ देतीं तो आपके अनुसार भेड़िए और बकरी के बीच के संघर्ष का परिणाम क्या होता ?
4. "तोता अपना सा मुँह लेकर शहीद बकरी की ओर देखने लगा" पंक्ति के द्वारा कहानीकार क्या कहना चाहता है? अपने साथियों से बात–चीत कर उत्तर दीजिए।

## भाषा से

1. पाठ में निम्नलिखित मुहावरे आए हैं। आप इन मुहावरों का वाक्य में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि इनका अर्थ स्पष्ट हो जाए –

   औंधे मुँह गिरना, अपना सा मुँह लेकर रह जाना, टूट पड़ना, लहू में उबाल आना, तरस खाना, ढेर हो जाना, पाँव उखड़ना, मुँह में खून लगना, आँखों ही आँखों में समझना।
2. विशेषण के इन उदाहरणों की रचना देखिए। दूर + ई = दूरी, चतुर + आई = चतुराई, महान + ता = महानता। इन में **ई, आई** अथवा **ता** प्रत्यय लगाकर भाववाचक संज्ञा बनाई गई है। इसी प्रकार से निम्नलिखित विशेषणों में उपयुक्त प्रत्यय का प्रयोग कर भाववाचक संज्ञा बनाइए–

   सफल, बेईमान, कटु, मित्र, अकर्मण्य, नादान, सावधान, अत्याचार, स्वच्छंद, श्रेष्ठ।

3. निम्नलिखित शब्दों का हिंदी रूप लिखिए–

   नज़र, ख़ून, दरख़्त, अरमान, हसरत, करतब, मुकाबला, बेचारा।

4. पाठ में आए निम्नांकित शब्दों का विलोम लिखिए–

   सावधान, धूर्त, स्वच्छंद, भारी, सहारा, अपने, हरे–भरे।

5. क. अत्याचारी से **कब तक** प्राणों की रक्षा की जा सकेगी ?

   ख. तब **क्या**, शिकारी उसे बख्श देता है ?

   ऊपर के दोनों वाक्य प्रश्नवाचक वाक्य हैं और इनके अंत में प्रश्नसूचक चिह्न (?) का प्रयोग हुआ है। जब वाक्यों में प्रश्नवाचक शब्द जैसे– **कब, कहाँ, क्यों, कैसे, कौन, क्या** आदि का प्रयोग करते हुए प्रश्न पूछा जाता है तो वहाँ इस चिह्न (?) का प्रयोग होता है। आप भी इसी प्रकार के दस वाक्यों की रचना कीजिए।

## *योग्यता विस्तार*

1. "संगठन में शक्ति है'' इस विषय पर कक्षा में संभाषण प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए और मुख्य बिन्दुओं को लिखिए।
2. सोचिए कि यदि जंगल से गुजरते समय भालू से आपका सामना हो जाए तो आप क्या करेंगे ? साथियों के साथ विचार कर लिखिए और कक्षा में सुनाइए।

●●●

7HUTHV

# पाठ 20

# लक्ष्य-बेध

–श्री रामनाथ 'सुमन'

**किसी भी मनुष्य की सफलता और उसके जीवन की सार्थकता उसके लक्ष्य निर्धारण और उस लक्ष्य प्राप्ति के लिए नियमित कठिन परिश्रम पर निर्भर करता है। यह पाठ दो छोटे दृष्टांत के जरिये जीवन के इन्हीं यथार्थ को, समझ के साथ प्रस्तुत करता है। अर्जुन का जवाब ही उसकी लक्ष्य के प्रति तन्मयता को सिद्ध करता है। वैसा ही उदाहरण मराठों का है जो विचलित मनः स्थिति से उबर कर एक निर्णायक युद्ध करते हुए हारती हुई बाजी जीत लेते हैं। यहाँ महत्वपूर्ण बात यह है कि हम किसी भी कार्य को कैसे करते हैं ? सार्थकता और पहचान उस कार्य को मिलती है जिसे प्रतिबद्ध होकर एकनिष्ठ भाव से किया जाए।**

जिस व्यक्ति ने अपना लक्ष्य निश्चित कर लिया है, उसने अपने जीवन की एक बड़ी कठिनाई दूर कर दी है। वह अनिश्चय, भ्रम, भेद और संदेह के ऊपर उठ जाता है। तब उसके सामने एक प्रश्न होता है, लक्ष्य–बेध कैसे होगा; जीवन के उद्देश्य की सिद्धि कैसे होगी ?

संसार के मनीषियों और कर्मठ पुरुषों ने लक्ष्य–बेध के अनेक उपाय बताए हैं, पर जीवन में सफलता का, लक्ष्य–बेध का, एक मंत्र है जो कभी निरर्थक नहीं हुआ। हमारे कोश में एक छोटा–सा शब्द है–'तन्मयता'। यह छोटा–सा शब्द ही जीवन में लक्ष्य–बेध या कार्य–सिद्धि का मूलमंत्र है।

'तन्मयता' का अर्थ है कि जो लक्ष्य है, उसी से आप भर जाएँ, उसी में लीन हो जाएँ। वह फैलकर आपके संपूर्ण जीवन और कार्य की प्रत्येक दिशा को ढँक ले। सोते–जागते, उठते–बैठते, चलते–फिरते, प्रत्येक क्रिया में, केवल वह लक्ष्य आपको दिखे, चारों ओर वही वह हो। आपका समस्त ध्यान उसी में केंद्रित हो, उससे अलग आपका जीवन असंभव हो जाए।

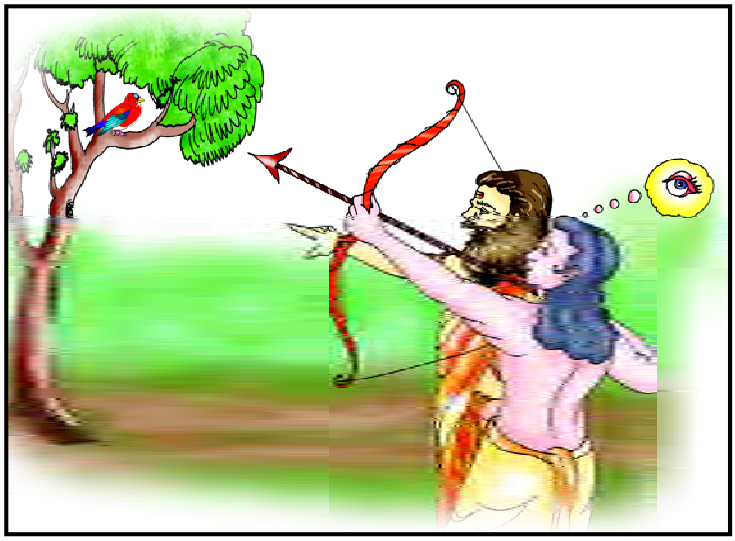

इस तन्मयता की बात करते हुए इतिहास की दो घटनाएँ याद आ रही हैं। पहली घटना महाभारत काल की है। आचार्य द्रोण राजकुमारों को बाणविद्या सिखा रहे थे। समय पर शिक्षा समाप्त हुई और राजकुमार आचार्य के समीप परीक्षा के लिए एकत्र हुए। आचार्य उन्हें एक वनस्थली में ले गए। एक वृक्ष के ऊपर बैठी चिड़िया की आँखों की पुतली

के लक्ष्य–बेध का निश्चय हुआ। आचार्य ने सबको निशाना ठीक करने को कहा और तब एक छोटा–सा प्रश्न किया, "तुम्हें क्या दिखाई देता है ?"

किसी ने कहा, "वह वृक्ष की पतली टहनी है। उस पर लाल रंग की चिड़िया बैठी है। उसकी आँख दिखाई दे रही है।''

किसी ने कहा, "मुझे चिड़िया दिखाई देती है, उसकी आँख में निशाना लगा रहा हूँ।" मतलब किसी ने कुछ उत्तर दिया, किसी ने कुछ; पर सबको अनेक पदार्थ दिखते रहे और उनके बीच लक्ष्य–बेध की तत्परता भी दिखाई पड़ी। जब अर्जुन की बारी आई और आचार्य ने उससे वही प्रश्न दोहराया तो उसने कहा–

"गुरुदेव, मुझे सिवाय चिड़िया की आँख की पुतली के और कुछ दिखलाई नहीं देता।"

आचार्य ने शिष्य की पीठ ठोकी और आशीर्वाद दिया। अर्जुन परीक्षा में सफल हुए।

दूसरी घटना मराठा इतिहास की है। सिंहगढ़ की विजय का दृढ़ संकल्प करके मराठों ने उस पर आक्रमण किया। सारे मराठा सैनिक एक गोह की सहायता से सिंहगढ़ पर चढ़ गए। घोर युद्ध हुआ। युद्ध में उनका नेता तानाजी मारा गया। उसके मारे जाते ही मराठों की सेना हिम्मत हारकर भागने लगी और जिस रस्से के बल चढ़कर ऊपर किले पर आई थी, उसी के सहारे नीचे उतरने का इरादा करने लगी। तानाजी के छोटे भाई सूर्याजी ने जब यह देखा तो आकर चुपके से रस्से का किले की ओरवाला हिस्सा काट दिया और जब मराठे उधर भागे तो चिल्लाकर कहा–"मराठो, भागते कहाँ हो ? वह रस्सा तो मैंने पहले ही काट दिया।" जब मराठों ने देखा कि निकल भागने का कोई उपाय नहीं है, तब सब कुछ भूलकर ऐसे लड़े कि सिंहगढ़ विजय कर लिया।

दोनों घटनाएँ स्वयं अपनी बात कहती हैं। अर्जुन की उस परीक्षा के बाद हजारों वर्ष बीत गए हैं, पर आज भी जीवन की परीक्षा में कोटि–कोटि मनुष्यों के सामने आचार्य द्रोण का वह प्रश्न उपस्थित है, "तुम्हें क्या दिखाई देता है ?"

इस प्रश्न के उचित उत्तर पर ही जीवन की सिद्धि निर्भर है। मानवजीवन की सफलता–असफलता की यह एक चिरन्तन कथा है। यह उत्तर लक्ष्य–बेध का एक ही उपाय बताता है–'लक्ष्य में तन्मयता'। जहाँ साधक लक्ष्य में तन्मय है, जहाँ उसे और कुछ दिखाई नहीं देता, जहाँ वह सब कुछ भूल गया है, अपने चारों ओर के ध्यान बँटानेवाले पदार्थों को भूल गया है, लक्ष्य है, लक्ष्य है और कुछ नहीं, वहाँ लक्ष्य– बेध निश्चित है।

दूसरी घटना भी यही कहती है कि जब तक रस्सा काटकर पीछे लौटने की संपूर्ण संभावनाओं का अंत आपने नहीं कर दिया, जब तक लक्ष्य से मन को इधर–उधर हटानेवाला एक भी साधन आपने बचा रखा है, तब तक लक्ष्य–बेध नहीं होगा।

इन दोनों में एक ही बात दोहराई गई है कि लक्ष्य में चित्त को केंद्रित करके लक्ष्य–बेध करो।

धनुष से छूटनेवाला बाण वायुमंडल में यहाँ–वहाँ नहीं घूमता। वह अपने चारों ओर के पदार्थों से नहीं उलझता। वह दाएँ–बाएँ, ऊपर–नीचे नहीं देखता। वह जिस क्षण छूटता है, उसी क्षण से अपने लक्ष्य में केंद्रित होता है। उसका लक्ष्य एक है, उसकी दिशा एक है। वह सीधा जाकर अपने लक्ष्य में मिल जाता है।

कुतुबनुमा की सुई की भाँति एक दिशा और एक लक्ष्य में केंद्रित होना उद्‌देश्य–सिद्धि का उपाय है। इससे हमारे जीवन के मार्ग में, दूसरे सैकड़ों प्रकाश हमें अपने मार्ग से बहका देने के लिए चमकेंगे और प्रयत्न करेंगे कि हमें अपने कर्त्तव्य और सत्य से डिगा दें पर हमें चाहिए कि अपने उद्‌देश्य की सुई को ध्रुव तारे की ओर से कभी न हटने दें।

मन की संपूर्ण चेतना को, इच्छाशक्ति को, किसी एक कार्य, दिशा या लक्ष्य में केंद्रित कर देना ही तन्मयता है। जब सूर्य की किरणों को किसी आतिशी शीशे के सहारे एक कागज के टुकड़े पर केंद्रित करते हैं तो कागज जल उठता है। जल में प्रच्छन्न विद्युत को कुछ साधनों से केंद्रित करके बड़े–बड़े कारखाने चलाए जाते हैं। शक्ति पहले भी वहीं रहती है, पर बिखरी होने से वह बेकार है। एकाग्र करके उससे संसार को हिलाया जा सकता है। वैज्ञानिकों का कथन है कि एक एकड़ भूमि की घास में इतनी शक्ति बिखरी हुई होती है कि उसके द्वारा संसार की सारी मोटरों और चक्कियों का संचालन किया जा सकता है।

संसार में काम करनेवाले बहुत हैं, काम को बोझ समझकर करनेवाले और भी अधिक हैं, पर लक्ष्य के प्रति समर्पित होकर, उसमें एकनिष्ठ होकर काम करनेवाले बहुत थोड़े हैं। पर ये थोड़े से मनुष्य ही हैं जो संसार को हिला देते हैं, जो अपनी एकाग्रता से जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं। आप अपने लिए जो भी लक्ष्य चुनिए, उसमें अपने मन और शरीर, अपनी संपूर्ण शक्तियों को केंद्रित कर लीजिए। वह और आप एक हो जाइए। दुनिया को भूल जाइए, अपने को भूल जाइए, केवल लक्ष्य के दर्शन कीजिए और तब उसे बेध लीजिए। संसार आपका है, जीवन आपका है, सफलता आपकी है।

## अभ्यास

### पाठ से

1. लेखक के अनुसार लक्ष्य भेद का मूल मंत्र क्या है और क्यों?
2. किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति में तन्मयता की क्या भूमिका है?
3. पाठ में तन्मयता के उदाहरण कौन–कौन से हैं ?
4. प्रसिद्ध धनुर्धर अर्जुन के लक्ष्य भेद से संबंधित में कौन सी कथा है ?
5. सिंहगढ़ के किले को मराठे कैसे जीत पाए ?

6. कुतुबनुमा की सुई हमें क्या सीख देती है ?
7. संसार में काम करनेवाले कैसे–कैसे लोग हैं?
8. लेखक के अनुसार लक्ष्य भेद के लिए क्या आवश्यक है?

## पाठ से आगे

1. आप सभी अपने–अपने लक्ष्य की कल्पना कीजिए तथा सोचिए कि अपने लक्ष्य की प्राप्ति कैसे करेंगे। आपस में चर्चा कर लिखिए।
2. अर्जुन की जगह आप होते तो अपने गुरु के प्रश्नों का आप क्या–क्या उत्तर देते? कल्पना कर अपने उत्तर लिखिए।

3. लक्ष्य से सफलता और असफलता जुड़ी हुई है। परीक्षा में सफल होना आपका लक्ष्य होता है तो इसमें अपनी सफलता के लिए क्या–क्या करना चाहेंगे? आपस में चर्चा कर लिखिए।
4. आचार्य द्रोणाचार्य द्वारा ली गई परीक्षा में अर्जुन के अतिरिक्त सभी राजकुमार क्यों असफल हो गए? साथियों से बातचीत कर इस प्रश्न का उत्तर लिखिए।
5. मराठा सेनापति सूर्याजी द्वारा सिंहगढ़ किले पर जीत के लिए किले की ओर वाली रस्सी का हिस्सा काटा जाना क्या उचित प्रतीत होता है ? शिक्षक और साथियों से बातचीत कर इसका उत्तर लिखिए।

## भाषा से

1. पाठ में इस प्रकार के प्रयोग आपको देखने को मिलेंगे, जैसे–**उस** परीक्षा, **इस** प्रश्न, **जिस** क्षण, **उनका** नेता, **जब** मराठे। शब्दों का इस प्रकार का प्रयोग सार्वनामिक विशेषण के उदाहरण है। अर्थात् जब कोई सर्वनाम शब्द का संज्ञा शब्द से पहले आना तथा वह विशेषण शब्द की तरह संज्ञा की विशेषता बताना। पाठ से सार्वनामिक विशेषण के उदाहरणों को खोज कर लिखिए।

2. पाठ में समानोच्चरित शब्द या समोच्चरित शब्द का प्रयोग हुआ है। ये शब्द सुनने और उच्चारण करने में समान प्रतीत होते हैं, किन्तु उनके अर्थ भिन्न–भिन्न होते हैं। जैसे–

   और ( तथा ), ओर ( तरफ )।

   चौक ( चौराहा ), चौंक (चौंक जाना, आश्चर्य में पड़ना)।

   ऐसे ही समान उच्चारण वाले शब्दों को पाठ से ढूँढ़ कर लिखिए।

   - निम्नलिखित शब्दों के जोड़े दिए गए हैं। इनका अपने वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए जिससे उनके अर्थ स्पष्ट हो सके–

     अवधि–अवधी, गाड़ी–गाढ़ी, उतर–उत्तर, प्रमाण–प्रणाम, दिन–दीन, देव–दैव, धन–धान, पक्का–पका।

3. 'संसार' और 'परिवार' जैसे शब्दों में इक प्रत्यय लगाकर सांसारिक और पारिवारिक शब्द बनते हैं। इसी प्रकार से निम्नलिखित शब्दों में इक प्रत्यय का प्रयोग कर शब्द बनाइए– स्वभाव, तर्क, अलंकार, न्याय, वेद, व्यापार, लोक, विज्ञान, व्यवहार, समर।
4. पाठ में प्रयुक्त हुए निम्नलिखित शब्दों के विपरीत शब्दों को लिखिए– असफलता, एकाग्र, केन्द्रित, एकनिष्ठ, प्रच्छन्न. इच्छा, निश्चित, मतलब, विजय, संचालक।

## योग्यता विस्तार

1. दृढ़ इच्छा शक्ति और लगन के सबसे निकट उदाहरण के रूप में एकलव्य उल्लेखनीय पात्र है। एकलव्य के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त कर कक्षा में सुनाइए।
2. ध्रुवतारा को हम अन्य किन नामों से जानते हैं ? ध्रुवतारे के संबंध में प्रसिद्ध कहानी को अपने बड़े बुजुर्गों से जानकर कक्षा में सुनाइए।
3. लक्ष्य भेद की कई अन्य कहानियाँ आपके परिवेश और समाज में प्रचलित होंगी उन्हें पता कर लिखिए और कक्षा में सुनाइए। इसके अलावा आप अपने साथियों के साथ मिलकर कहानी बनाइए और सुनाइए।

7IMH2T

# पाठ 21

# सुवागीत

—लेखक—मंडल

**हमर छत्तीसगढ़ के संस्कृति ह बड़ जुन्ना संस्कृति आय। ये ह मुँहअँखरा—साहित्य के कोठी आय। ये कोठी म आने—आने किसम के गीत घलो भरे हे। इही गीत मन म सुवागीत के महक ह कारी—कमोद धान कस होथे—महर—महर। गाँव के नारी—परानी मन ये गीत ल अपन हिरदे ले गाथें, जइसे ये गीत ह उँकर मन के हिरदे के भाषा होय।**

छत्तीसगढ़ ह लोकगीत के फुलवारी आय। जेमा रकम — रकम के लोकगीत के फूल फुले हे। लोकगीत ओला कहिथे जेन ह तइहा जुग ले मुँहअँखरा लोक—जीवन म रचे — बसे हे अउ आज ले एहा मुँहअँखरा चले आवत हे। न एखर लिखइया के नाँव—पता हे,न एकर गवइया के नाँव—पता ।

हमर छत्तीसगढ़ म करमा,ददरिया,भोजली,गउरा,जँवारा,पंथी,डंडागीत गाये जाथे। अइसने एक ठन सुवागीत घलो आय। सुवा मायने मिट्ठू। तइहा जुग म मिट्ठू ले संदेसा पठोय जात रहिस। सुवागीत म नारी—परानी मन अपन अंतस के मया—पीरा ल गीत रूप म उद्गारथें। अउ सुवा ल संबोधित करके गाथें। एकरे सेती ये गीत ल सुवागीत कहिथें।

सुवागीत कातिक महिना म देवारी तिहार के दू—चार दिन आगू ले शुरू होथे। सुवागीत, गीत भर नोहय,एमा नृत्य घलो होथे। सुवागीत अउ नृत्य ह टोली म होथे, जेमा नारी — परानी मन दस—बारा झन रहिथें। माटी के सुवा बना के ओला टुकनी म राखथें। टुकनी के सुवा ल मँझोत म मढ़ा के नारी—परानी मन गोल घेरा बना के थपोली बजाथें अउ सुवागीत गाके नाचथें। सुवागीत म कोनो बाजा के प्रयोग नइ होय। हाथ के थपोली ह ताल के काम करथे। एमा लइका मन,मोटियारी अउ सियानिन मन के अलग—अलग दल रहिथे। दल वाले मिलके गाथें त बड़ नीक लागथे। निहर—निहर के, झूम—झूम के अउ घूम—घूम के, ताली बजा के नाचथें त सुवागीत अउ नृत्य के सोभा देखतेच बनथे।

सुवा नचइया जम्मो दाई—दीदी मन गाँव भर गिंजर—गिंजरके घरो—घर सुवानृत्य करथें। सुवागीत—नृत्य कब ले शुरू होय हे,एकर कोनो लिखित रूप नइ मिलय। फेर सियान मन कहिथें के ये गजब जुन्ना परंपरा आय। सुवानृत्य काबर नाचे जाथे ? ये सवाल के उत्तर म सियान मन बताथें के सुवानृत्य ले सकलाय धान—चाँउर अउ रुपिया—पइसा ले गउरा बिहाव के खरचा पूरा होथे।

सुवागीत ल नारी–परानी के पीरा के गीत कहे गे हे। काबर के सुवागीत म ओकर अंतस के पीरा अउ ओखर जिनगी के दुख–दरद जादा सुने बर मिलथे। सुवागीत के ये विशेषता हे के एहा 'तरी–हरी नाना,नाना सुवा हो',के बोल ले शुरू होथे। जइसे –

तरी–हरी नाना मोर नाह नारी ना ना रे सुवा मोर
के तिरिया जनम झनि देय,
तिरिया जनम मोर गउ के बरोबर रे सुवना
जहाँ रे पठोय तिंहा जाय,ना रे सुवना .....

सुवा गीत म नारी के दुख–पीरा भर ह नइये, एमा घर–दुवार, खेत–खार,बारी–बखरी, जंगल–पहार,मया–दुलार,साज–सिंगार,धरम–करम,जीवन के मरम, देश अउ समाज के विषय घलो समाय हे, जइसे चिरइ–चुरगुन के बोली उपर ये गीत –

तरी हरी नाहना मोर नाना सुवा रे मोर
तरी हरी ना मोर ना

कोन चिरइया मोर चितर काबर रे सुवना
के कोन चिरइया के उज्जर पाँख–ना रे सुवना
भरही चिरइया मोर चितर काबर
बकुला चिरइया के उज्जर पाँख–ना रे सुवना

कोन चिरइया मोर सुख सोवय निंदिया
कोन चिरइया जागय रात–ना रे सुवना
भरही चिरइया सुख सोवय निंदिया रे सुवना
बकुला जागय सरी रात–ना रे सुवना

नान्हे नोनी ल सुवा नाचे के साध हे त ओ ह अपन दाई करा गोहरावत हे अउ ओकर गहना–गुरिया ल पहिरे बर माँगत हे। एखर सुग्घर बरनन ये गीत म हवय –

दे तो दाई गोड़ के पइरी ल
कहाँ जाबे
सुवा नाचे बर
दे तो दाई तोर बहूँटा ल
कहाँ जाबे
सुवा नाचे बर
दे तो दाई तोर सुतिया ल
कहाँ जाबे
सुवा नाचे बर

घर–परिवार ले आगू देश अउ समाज के हाल–चाल घलो सुवागीत के विषय आय। अजादी के पहिली देश–परेम के भावना जगाय बर सुवागीत ह सबल माध्यम रहिस–

सुवना हो .....
दीदी के घर ह सुतंत्र होगे
जोर मारिस भाँटो ह, सुवना हो.....
होगे सुराजी भाँटो ह सुवना
महूँ होहूँ सुराजी .....
कोने डहर के बबा आइस
कोने डहर के बाती बारिस
कान फुँकाहूँ ओ सुवना.....

कान फुँकाहूँ ओ सुवना.....
संत के बानी ये, जागौ रे सुवना...
सुराजी गीत ल, गावौ ओ सुवना...
रेलवाही म सुतगे बबा ह सुवना....
चलो जाबो रेलवाही सुवना.....

सुवागीत म कथागीत गायन के घलो परंपरा मिलथे। जइसे हरिसचंद,राम बनवास,सीता हरन, कालिया दहन, मोरध्वज, सुरजा रानी अउ अइसने कतको प्रसंग सामिल हे–

तरी–हरी नाना मोर ना ना नाना
मय का जानँव, मय का करँव
मोर राम नइ हे ओ
अब सीता ल लेगथे लंका के रावन
मय का करँव
जोगी के रूप धरे निसाचर,
दे भिक्छा मोहि माई,
लेकर भिक्छा अँगन बीच ठाढ़े
रथ में लिए बैठाई
मय का करँव

सुवा नाचे के बाद घर मालकिन ह सुवा नचइया मन के मान–गउन करथे,उँकर टुकनी म धान–चाँउर दे के बिदा करथे त सुवा नचइया मन गीत गाके असीस दे बर नइ भुलाँय। सुवागीत छत्तीसगढ़ के नारी मन के जिनगी के दरपन आय,उँकर हिरदे के उद्‌गार आय,जेन ह मोंगरा फूल कस ममहावत हे। हमर लोकगीत के फुलवारी ह अइसने ममहावत रहय, इही साध हे।

## छत्तीसगढ़ी शब्द मन के हिन्दी अर्थ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| किसम | = | प्रकार | ओला | = | उसे |
| तइहा जुग | = | अतीत | मुँहअँखरा | = | मुखाग्र |
| अइसने | = | इसी प्रकार | एखरे सेती | = | इसी कारण |
| कातिक | = | कार्तिक | थपोली | = | ताली |
| नीक | = | अच्छा,ठीक | गिंजर–गिंजर | = | घूम–घूमके |
| निहर–निहर | = | झुक–झुककर | जुन्ना | = | पुराना |
| सकलाना | = | इकट्ठा होना | तिरिया | = | नारी |
| नोनी | = | बेटी,लड़की | गोड़ | = | पैर |

## अभ्यास

### पाठ से

1. कइसने गीत ल लोकगीत कहिथें ?
2. हमर छत्तीसगढ़ में गाए जाने वाला लोकगीत मन के नाव लिखव।
3. सुवागीत ल सुवागीत काबर कहिथें ?
4. सुवानाच कब नाचे जाथे अउ कोन तरह ले नाचे जाथे ?
5. सुवागीत म ढोलकी ले ताल दे जाथे ।
6. सुवा नाच–गीत ह नारी–परानी के गीत काबर माने गेहे।
7. सुवा नाच म माटी के सुवा काबर बनाय जाथे।
8. सुवा नचइया मन घर–मालकिन ल का असीस देथें।

### पाठ से आगे

1. कोन–कोन विषय ऊपर सुवागीत गाए जाथे, बने ओरिया के लिखव अउ अपन कक्षा में उही एकोठिन गीत ल गा के देखव।
2. सुवागीत के चार पंक्ति लिखव जेमा नारी–परानी के हिरदे के पीरा परगट होथे।
3. सुवागीत म कथा–गीत के उदाहरण लिखव।

4. सुवा नचइया मन घरो–घर जाथें। ओमनला देखके आप मनके मन में का–का भाव उठते, लिखव।

5. सुवा नचइया मन के मान–गउन म जउन धान–चाँउर अउ पइसा–कउड़ी मिलथे, तेला सुवा नचइया मन कामे खरचा करत होही, पूछ के लिखव ?

7J6964

## भाषा से

1. 'दुख–दरद' अउ 'मान–गउन' शब्द मन ऊपर धियान देवव। ये मन जोड़ी वाला (शब्द–युग्म) शब्द आयँ। पाँच ठन जोड़ी वाला (शब्द–युग्म) शब्द सोंच के लिखव अउ अपन वाक्य म प्रयोग करव।

7JF57R

2. 'गिंजर–गिंजर' शब्द ऊपर धियान देवव। इहाँ 'गिंजर' शब्द ह दू बेर आय हे। यहू मन जोड़ी वाला शब्द आयँ। फेर अइसन जोड़ी वाला शब्द मन ल 'पुनरुक्त शब्द' केहे जाथे। अइसन शब्द के परयोग अपन भाव ऊपर जोर दे खातिर अउ ओकर अर्थ ल पोठ बनाय बर करे जाथे।

   पाँच ठन पुनरुक्त शब्द सोंच के लिखव अउ अपन वाक्य म परयोग करव।

3. ये पाठ म 'नोहे' शब्द के प्रयोग करे गे हे। ये शब्द ह 'नइ' अउ 'हवय' के मेल ले बने हे। अइसने अउ शब्द हें– नइये (नइ + हे),थोकिन (थोर + किन)। अइसन शब्द मन मुँह ला सुख दे खातिर अउ समय ल बचाय बर अपने–अपन बनत रहिथें।

   ऊपर के उदाहरण असन पाँच शब्द खोज के लिखव अउ वाक्य बनावव।

## योग्यता विस्तार

1. सुवागीत के जइसे छत्तीसगढ़ के अउ दूसर लोकगीत मन ल घलो सकेलव।

2. डंडा–नृत्य–गीत कब नाचे–गाये जाथे ? एकर बारे म अपन गाँव के सियान मन ले पूछव।

7JP19E

3. घर के सियान मन ले पूछ के अउ सुवागीत अपन कापी म लिखव अउ सकेलव।

4. सुवागीत के तर्ज म एक ठन गीत बनावव अउ गावव।

●●●

7JXHB2

# पाठ 22

# सुब्रह्मण्य भारती

– लेखकमंडल

**देश के स्वाधीनता संग्राम में जहाँ कुछ देशभक्तों ने अपने तेजस्वी भाषणों, नारों से विदेशी सत्ता का दिल दहलाया, वहीं कुछ ऐसे साहित्यकार भी थे जिन्होंने अपने काव्य–बाणों से विपक्षी को आहत किया। हिंदी में यदि 'मैथिलीशरण गुप्त', 'सोहनलाल द्विवेदी', 'सुभद्राकुमारी चौहान', 'रामधारी सिंह 'दिनकर' आदि ने अपनी काव्य–रचनाओं से भारतीय नवयुवकों के मन में देश–प्रेम के भाव भरे तो देश की अन्य भाषाओं में भी ऐसे देशभक्त कवि, साहित्यकार हुए जिनकी रचनाओं ने अँग्रेजी राज्य की जड़ें हिला दीं। तमिल भाषा के ऐसे ही कवि थे 'सुब्रह्मण्य भारती'। उनके संबंध में विस्तृत जानकारी इस पाठ में पढ़िए।**

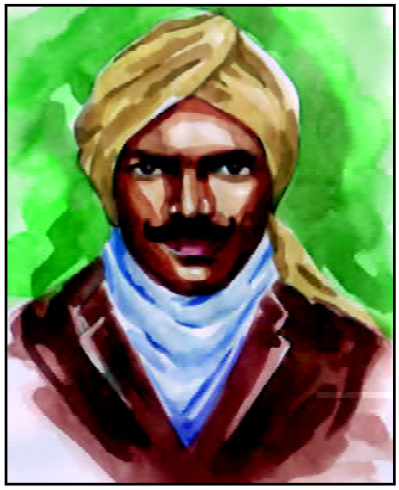

सुब्रह्मण्य भारती बीसवीं सदी के महान तमिल कवि थे। उनका नाम भारत के आधुनिक इतिहास में एक उत्कट देशभक्त के रूप में लिया जाता है। देश के स्वतंत्रता–संग्राम के लिए उन्होंने जिस शस्त्र का प्रयोग किया, वह था उनका लेखन, विशेषतया कविता। उनकी कविताओं ने तमिलवासियों को जाग्रत कर स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

सुब्रह्मण्य भारती का जन्म तमिलनाडु में एक मध्यवर्गीय परिवार में 11 दिसंबर, सन् 1882 को हुआ था। उनके पिता का नाम चिन्नास्वामी अय्यर और माँ का नाम लक्ष्मी अम्माल था। बचपन में भारती को सुब्बैया कहकर पुकारा जाता था। बचपन से ही वे कविताएँ लिखने और उनका पाठ करने के बहुत शौकीन थे। एट्टयपुरम् के राजा ने ग्यारह वर्षीय सुब्बैया को दरबार में कविता पाठ करने के लिए आमंत्रित किया। राजा के दरबार में एकत्र हुए विख्यात कवि उनका कविता पाठ सुनकर दंग रह गए। उन्होंने उन्हें 'भारती' की उपाधि से सुशोभित किया। इस तरह वे 'सुब्रह्मण्य भारती' के नाम से प्रसिद्ध हो गए।

जब सुब्बैया चौदह वर्ष के थे तभी उनका विवाह हो गया था। उनकी पत्नी चेल्लम्माल उस समय सात वर्ष की थीं। कुछ दिनों बाद सुब्बैया के माता–पिता का स्वर्गवास हो गया। सन् 1898 में भारती आगे पढ़ने के लिए वाराणसी (बनारस), अपनी काकी के पास, चले गए। बनारस में उन्होंने हिंदी, अँग्रेजी और संस्कृत भाषाएँ सीखीं।

बनारस में रहते हुए भारती के व्यक्तित्व में बहुत परिवर्तन आया। उन्होंने बड़ी–बड़ी पैनी मूँछें रख लीं। वे सिर पर पगड़ी पहनने लगे। उनकी विचारधारा में भी महान परिवर्तन आया। उनके हृदय में उग्र राष्ट्रीयता के बीज के कारण, उन्हें ब्रिटिश राज के बंधन में बँधे भारतीयों का दुःख व उनकी पीड़ा महसूस होने लगी।

अपने साथ देश–प्रेम की भावना सुलगाए, देशभक्त कवि भारती चार वर्ष बाद बनारस से घर लौटे। जीविका के लिए वे चेन्नई (तत्कालीन मद्रास) में प्रसिद्ध तमिल दैनिक 'स्वदेशमित्रन्' में सहायक संपादक की हैसियत से नौकरी करने लगे, जिसके संस्थापक थे महान नेता जी.सुब्रह्मण्य अय्यर। अपने गीतों के माध्यम से भारतीय लोगों के हृदयों में राष्ट्रीयता की भावना जगाने लगे। जंगल की आग की तरह फैलते–फैलते ये गीत, शीघ्र ही राज्य के अधिकतम व्यक्तियों के हृदय तक पहुँच गए।

सन् 1907 में भारती ने सूरत में काँग्रेस के अधिवेशन में भाग लिया। उग्रवादी विचारों से प्रभावित होने के कारण, उन्हें यह विश्वास हो गया था कि नरमपंथी दृष्टिकोण से देश कभी भी स्वतंत्र नहीं हो सकता। उनके मन में बाल गंगाधर तिलक और विपिन चन्द्र पाल के प्रति बहुत सम्मान उत्पन्न हो गया। वे लोग क्रांतिकारियों की तरह भारत की स्वाधीनता के लिए संघर्ष करने को तत्पर थे। उन्हें लगा कि स्थिति क्रांतिकारी मोड़ लेना चाहती है।

भारती का देशभक्तिपूर्ण लेखन बहुत शक्तिशाली होता जा रहा था, फिर भी कोई उसे छापने को तैयार नहीं था। लोग सरकार के क्रोध से डरते थे। यहाँ तक कि 'स्वदेशमित्रन्' के संपादक ने भी उनके दृढ़, उग्रवादी विचारों को छापने से इंकार कर दिया। इसलिए भारती ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया और सन् 1907 में वे अपना ही 'इंडिया' नामक एक साप्ताहिक निकालने लगे। इसमें वे अपने विचारों को स्वतंत्रता से छापते और जनता उत्सुकता से उन्हें पढ़ती।

ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध आंदोलन भड़कता जा रहा था। शासकों ने इसे दबाने के लिए नेताओं और आंदोलनकर्त्ताओं को पकड़ना और जेल में बंद करना शुरू कर दिया। भारती किसी भी दिन अपनी गिरफ्तारी के वारंट का इंतजार कर रहे थे। उनके दोस्त और अनुयायी नहीं चाहते थे कि वे सींखचों के पीछे बंद हों इसलिए गिरफ्तारी से बचने के लिए, भारती सन् 1908 में पाण्डिचेरी चले गए। वहाँ भी ब्रिटिश सरकार के गुप्तचर, उनकी गतिविधियों पर कड़ी नजर रखे हुए थे। भारती को उन गुप्तचरों का पता लग गया था।

अपने दुखपूर्ण क्षणों में भी भारती का ईश्वरीय शक्ति पर से विश्वास नहीं हटा। इससे उन्हें पाण्डिचेरी में सबसे कठिन समय बिताने में सहायता मिली। जब उनके पास धन नहीं था, उनके प्रशंसकों ने आर्थिक रूप से और अन्य तरीकों से उनकी मदद की। यहाँ तक कि मकान का किराया न देने पर भी उनके मकान–मालिक ने उन्हें कुछ नहीं कहा।

भारती स्वयं किसी से सहायता नहीं माँगते थे। सहायता माँगने से उनके स्वाभिमान को ठेस लगती थी, किंतु गरीबी उनकी उदारता को कम नहीं कर पाई थी। एक बार उन्होंने अपना बहुमूल्य जरी के बॉर्डरवाला अंगवस्त्र तक, जिसे किसी अमीर प्रशंसक ने उन्हें दिया था, एक गरीब को दे दिया था। जब चेल्लम्माल ने इस बात के लिए उन्हें डाँटा तो वे हँस दिए और बोले कि उस गरीब आदमी पर वह अच्छा लग रहा था।

दूसरों की खुशी उनकी अपनी खुशी थी। वे अपने लेखन में अक्सर यह बात व्यक्त करते थे कि समस्त जीवित प्राणी उस सर्वोच्च शक्ति की अनुपम रचना हैं और उसकी नजर में हम सब बराबर हैं।

ऐसा लगता था कि जंगली जानवर भी भारती के सच्चे प्यार को पहचानते थे। एक बार, जब भारती और चेल्लम्माल चिड़ियाघर में घूम रहे थे, वे शेर के पिंजरे के बहुत करीब चले गए और जंगल के राजा को बुलाकर उससे बोले कि कविता का राजा तुमसे मिलने आया है। जवाब में शेर दहाड़ा और उसने भारती को अपना स्पर्श करने दिया। इस आश्चर्यजनक दृश्य को देखकर अन्य दर्शक भौंचक्के रह गए।

भारती को बच्चों से बहुत प्यार था। उन्होंने बच्चों के लिए 'द चाइल्ड साँग' (बच्चे का गीत) लिखा, उसे धुन दी और गाया भी।

भागो और खेलो, भागो और खेलो,
आलसी मत बनो, मेरे प्यारे बच्चो,
मिलजुलकर खेलो, मिलजुलकर खेलो,
कभी भी घबराओ नहीं, मेरे प्यारे बच्चो।
यही जीवन का ढंग है, मेरे प्यारे बच्चो।

भारती ने स्वतंत्र भारत के ऐसे लोगों की कल्पना की थी जो उच्च विचारों को आत्मसात कर उन्हें बढ़ावा दें। वे सहज ही पिछड़ी जाति के हिंदुओं और मुसलमानों से हिलमिल जाते थे।

अब तक गांधी–जी का सार्वभौमिक प्रेम व भाईचारे का संदेश देशभर में चारों ओर फैलने लगा था। उससे प्रभावित होकर भारती ने लिखा –

"रे मेरे मन ! मधुर
दया दिखा शत्रु पर"

उनका विजयनाद का गीत, जिस पर नृत्य भी किया जाता है, कहता है.....

"मानव–मानव एक समान
एक जाति की हम संतान
यही दृष्टि है खुशी आज की
बजा नगाड़ा, करो घोषणा प्रेम–राज्य की।"

भारती ने गांधी–जी की प्रशंसा में कविता लिखी,'बहुत वर्षों तक जीओ, गांधी महात्मा...'

भारती गांधी–जी से चेन्नई (मद्रास) में सन् 1919 में केवल एक बार मिले थे और वह भी कुछ क्षणों के लिए। गांधी–जी ने राजा–जी और अन्य काँग्रेसी नेताओं और देशभक्तों से कहा था, "भारती देश का एक ऐसा रत्न है जिसकी सुरक्षा और संरक्षण करना चाहिए।"

लेकिन बहुत जल्दी ही उनका अन्त आ गया। भारती नियमित रूप से मंदिर जाते थे। वहाँ मंदिर के हाथी को नारियल देने में उन्होंने कभी भी चूक नहीं की। एक दिन हाथी मस्ती में था। इस बात से अनभिज्ञ भारती हमेशा की तरह नारियल खिलाने उसके करीब गए। हाथी ने उनके अपनी विशाल सूँड़ मारी और वे एक उखड़े हुए पेड़ की तरह गिर गए। वे बुरी तरह घायल हो गए। भीड़ जमा हो गई और उन्हें देखने लगी, पर कोई भी पास जाकर उन्हें बचाने की हिम्मत न जुटा पाया। यह खबर जंगल की आग की तरह फैल गई। जैसे ही यह खबर भारती के घनिष्ठ मित्र कानन के कानों तक पहुँची, वे भागे हुए आए और उन्होंने भारती को बचाया।

अच्छी चिकित्सा होने के कारण भारती की हालत कुछ हद तक सुधर गई। वे मन से अपने आपको स्वस्थ मानते थे और इसलिए यह विश्वास करने से इंकार करते थे कि उनकी सेहत गिर रही है। वे तब तक अपने क्षीण स्वर में गाते रहे, जब तक कि 12 सितंबर, सन् 1921 को उनकी आवाज़ सदा के लिए शांत न हो गई।

जब भारत स्वतंत्र हुआ तब भारती की रचनाएँ विस्तृत रूप से प्रकाशित होने लगीं। आज विश्व के पुस्तकालयों में उनकी किताबें संगृहीत हैं। अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद होने के साथ–साथ अँग्रेजी, रूसी और फ्रेंच भाषा में भी उनकी पुस्तकों का अनुवाद हुआ है।

सुब्रह्मण्य भारती की याद में एट्टयपुरम् में 'भारती मंडप' स्थापित किया गया है। यहाँ, तमिल में महात्मा गांधी द्वारा लिखे शब्दों को पढ़ा जा सकता है, "जिन्होंने भारती को अमर बनाया, उन प्रयासों को मेरा आशीर्वाद।"

चेन्नई के समुद्रतट पर भारती की एक प्रतिमा है। ऐसा प्रतीत होता है कि अनंत लहरों का लयबद्ध नाद, उनकी कविताओं को गुनगुना रहा है।

भारती द्वारा रचित उनका आखिरी गीत, जो उन्होंने चेन्नई (मद्रास) के समुद्रतट पर हुई सभा में अपनी मृत्यु से कुछ सप्ताह पहले गाया था, उनके बहुत लोकप्रिय गीतों में से एक है–

"भारतीय समुदाय अमर हो
जय हो भारत–जन की जय हो।
भारत–जनता की जय–जय हो।
जय हो, जय हो, जय हो।"

## टिप्पणी

तमिलनाडु = दक्षिण भारत का एक राज्य। इसकी राजधानी चेन्नई है। यहाँ की राजभाषा 'तमिल' है।

बाल गंगाधर तिलक = काँग्रेस में उग्र पंथ के नेता। इन्होंने ही यह नारा दिया था –"स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम इसे लेकर रहेंगे।''

विपिनचन्द्र पाल = लोकमान्य तिलक के सहयोगी, बंगाल में काँग्रेस के सर्वमान्य नेता।

पाण्डिचेरी = भारत के पूर्वी तट पर फ्रांस का उपनिवेश था। अब केन्द्र शासित राज्य है। यहाँ पोरोविल पर्वत पर महर्षि अरविन्द का आश्रम विश्वविख्यात है।

राजा जी = चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य। स्वतंत्र भारत के प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल।

# अभ्यास

## पाठ से

1. सुब्बैया का नाम भारती कब और क्यों पड़ा ?
2. बनारस में रहते हुए सुब्बैया के व्यक्तित्व में क्या परिवर्तन आया ?
3. भारती स्वयं का साप्ताहिक अखबार क्यों निकालने लगे ?
4. भारती अपने लेखन में अक्सर किस बात को व्यक्त करने पर जोर दिया करते थे ?
5. महात्मा गाँधी ने भारती जी के बारे में क्या कहा था ?
6. भारती ने स्वतंत्र भारत में कैसे लोगों की कल्पना की थी ?
7. हाथी के हमले के समय भारती को क्यों कोई बचा नहीं पाया ?

## पाठ से आगे

1. तमिलनाडु के रहनेवाले भारती जी जब बनारस में पढ़ने के लिए आए तो उन्होंने तमिल के साथ–साथ हिंदी और अंग्रेजी भाषाएँ भी सीखीं। आप सोचकर लिखिए कि इन भाषाओं के सीखने से भारती जी को कौन–कौन से लाभ हुए होंगे।
2. आप पाठ में देखते हैं कि भारती जी दूसरों तक अपने विचारों को पहुँचाने के लिए कविता, साप्ताहिक पत्र आदि का सहारा लेते हैं। आप अपनी बातों को दूसरे तक पहुँचने के लिए किन–किन साधनों का उपयोग करना चाहेंगे ?

7K7SCP

3. पाठ में बार–बार समाचार पत्रों का उल्लेख हुआ है। आप किन–किन समाचार पत्रों के बारे में जानते हैं और उनके पढने से आप को क्या लाभ होता है ? साथियों से चर्चा कर लिखिए।
4. भारती ने बच्चों के लिए गीत "चाइल्ड साँग लिखा और गाया। जिसमें भागो और खेलो आलसी मत बनो, मिल–जुलकर खेलो कभी घबराओ नहीं यही जीवन का ढंग है ! इन पंक्तियों में से देखें तो बच्चे क्या–क्या करते हैं और क्यों ?

## भाषा से

1. पाठ में इन शब्दों का प्रयोग हुआ है– माता–पिता, समुद्रतट, पुस्तकालय, बहुमूल्य, स्वर्गवास आदि जो सामासिक शब्द कहे जाते हैं, अर्थात दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए एक नवीन एवं सार्थक शब्द को समास कहते हैं। जैसे– 'पुस्तकालय' अर्थात् 'पुस्तक का आलय या घर' दूसरे शब्दों में यह भी कह सकते हैं कि 'समास' वह क्रिया है, जिसके द्वारा कम–से–कम शब्दों में अधिक–से–अधिक अर्थ प्रकट किया जाता है।

प्रायः समास के छः रूप देखने को मिलते हैं –

1. तत्पुरुष समास 2. कर्मधारय समास 3. अव्ययीभाव समास

4. द्वंद्व समास 5. बहुव्रीहि समास 6. द्विगु समास।

7HC5RL

**तत्पुरुष समास :–** पुस्तकालय– पुस्तक का आलय, समुद्रतट–समुद्र का तट तत्पुरुष समास के उदाहरण हैं। इस समास का दूसरा पद (उत्तर पद) प्रधान होता है अर्थात् विभक्ति का लिंग, वचन दूसरे पद के अनुसार होता है इसका विग्रह करने पर कर्ता व सम्बोधन की विभक्तियों(ने,हे,ओ,अरे) के अतिरिक्त किसी भी कारक की विभक्त प्रयुक्त होती है। जैसे– सेनापति –सेना **का** स्वामी, शरणागत शरण **में** आया हुआ, सत्याग्रह –सत्य **के लिए** आग्रह, जलज – जल **में** जन्मा हुआ।

**कर्मधारय समास–** बहुमूल्य, स्वर्गवास, सज्जन, दहीबड़ा कर्मधारय समास के उदाहरण हैं। जिस समास का उत्तरपद प्रधान हो और पूर्वपद तथा उत्तरपद में विशेषण–विशेष्य अथवा उपमान–उपमेय का संबंध हो वह कर्मधारय समास कहलाता है। जैसे– कमलचरण– कमल **जैसा** चरण, महाराजा – महान **है जो** राजा, महादेव–महान **है जो** देव, विद्याधन– विद्या **रूपी** धन।

**द्वंद्व समास**–दोनों पद प्रधान होते हैं। दोनों पद प्रायः एक दूसरे के विलोम होते है, पर सदैव नहीं। इसका विग्रह करने पर और, अथवा, या का प्रयोग होता है। जैसे माता पिता– (माता **और** पिता) लोटा–डोरी – (लोटा **और** डोरी )

अपनी पुस्तक से इन प्रकार के समास के उदाहरण को खोज कर लिखिए।

2. नीचे लिखे शब्दों में से जो अव्यय शब्द न हों उन्हें चिह्नित कर लिखिए–

- अरे, वाह, जूता, और, तथा, शेर, शायरी
- किन्तु, लड़का, परन्तु, कार्य, बल्कि, धीरे–धीर
- कन्या, इसलिए, अतः एवं, पत्र, शब्द, अतएव
- सीख, सोना, अवश्य, यदि, वाह, अर्थात, व, आदि

3. एक ही अर्थ को प्रकट करनेवाले शब्द को समानार्थी या पर्यायवाची शब्द कहते हैं। बॉक्स में कुछ शब्द और उनके समानार्थी दिए गए हैं, उनकी सही जोड़ी बनाइए–

| |
|---|
| स्वतंत्र, समुद्र, निलय, मनुष्य, भारती, वाराणसी, सरस्वती, जगत, वसुधा, निर्बल, आजाद, सागर, क्षीण, धरती, भव, बनारस, मानव, गृह। |

## योग्यता विस्तार

1. 'वन्दे मातरम्' और 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा' भारत के प्रसिद्ध देश–भक्ति के गीत हैं। इन गीतों को खोजकर याद कीजिए और इनके रचनाकारों के सम्बन्ध में जानकारी हासिल कीजिए।

2. भारती जी ने साहित्य–रचना के माध्यम से स्वतंत्रता–आन्दोलन में सक्रिय सहयोग दिया। हिन्दी साहित्यकारों ने भी अपनी साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से यही कार्य किया। उन साहित्यकारों के नाम लिखिए और उनकी देश–प्रेम की कुछ रचनाएँ पढ़िए और कक्षा में सुनाइए।

●●●

## सड़क सुरक्षा

### "जीवन अनमोल है, सावधान रहें सुरक्षित रहें"

1. हमेशा सड़क की बायीं ओर चलें।
2. यदि किसी वाहन से आगे निकलना हो (Overtake) तो उसके दाहिने तरफ से निकलें।
3. जेब्रा क्रॉसिंग से ही सड़क पार करें।
4. छोटे बच्चे अपने बड़ों का हाथ पकड़कर सड़क पार करें।
5. सड़क पर चलते वक्त मोबाइल का इस्तेमाल न करें।
6. वाहन चलाते समय मोबाइल पर बात न करें।
7. नशे की हालत में वाहन न चलाएँ।
8. ट्रैफिक लाइट का पालन करें।
9. विद्यालय, अस्पताल, मंदिर आदि के पास धीमी गति से गाड़ी चलाएँ।
10. गाँव/शहर (रिहायशी बस्तियों से गुजरते समय गाड़ी की गति 20 कि.मी. प्रति घंटा रखे।
11. अंधे मोड़ पर गाड़ी की गति धीमी रखें एवं हार्न का इस्तेमाल करें।
12. सड़क किनारे लिखे निर्देशों का पालन करें।
13. 'दुर्घटना से देर भली' इस सूत्र वाक्य का स्वयं व परहित में अनिवार्य रूप से पालन करें।
14. हेलमेट एवं सीट बेल्ट का उपयोग करें।

**यातायात नियमों का पालन अवश्य करें।**

# पाठ 23

# राजीव गाँधी

## (भारत में दूरसंचार क्रांति के अग्रदूत)

– डॉ विद्यावती चन्द्राकर

आज लाखों भारतीय स्व. राजीव गाँधी जी को एक देशभक्त, शहीद और देश का एक कर्त्तव्यनिष्ठ बेटा मानते हैं, जिन्होंने अपने केवल 5 वर्षों के प्रधानमंत्रित्व काल में समय की लहरों से कभी न मिटने वाले अमिट उपलब्धियों से गढ़ी गौरवशाली तकनीक संपन्न आधुनिक भारत का स्वप्न देखा और इस ओर देश को अग्रसर किया।

नाना पं. जवाहरलाल नेहरू, माता श्रीमती इंदिरा गाँधी (पूर्व प्रधानमंत्री) तथा पिता श्री फिरोज गाँधी (पूर्व सांसद) के घर में जन्म लेने के बावजूद भी राजीव जी की राजनीति में कोई विशेष रूचि नहीं थी। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा देहरादून से प्राप्त कर उच्च शिक्षा इंग्लैंड में पूरी की। राजीव जी का विवाह सन् 1968 में एंटोनियो माइनो से हुआ जो उस समय इटली की नागरिक थीं। विवाह उपरांत एंटोनियो माइनो ने अपना नाम बदलकर सोनिया गाँधी कर लिया। राजीव जी के दो बच्चे हैं–राहुल एवं प्रियंका।

राजीव गाँधी जी एक एयरलाइन्स में पायलट की नौकरी करते थे। सन् 1980 में अपने छोटे भाई संजय गाँधी जी की एक हवाई दुर्घटना में असामयिक मृत्यु के बाद माता इंदिरा जी को सहयोग देने के लिए उन्होंने सन् 1981 में राजनीति में प्रवेश किया था। राजीव जी ने अमेठी से लोकसभा का चुनाव जीतकर अपने राजनीतिक जीवन की शुरूआत की। 31 अक्टूबर 1984 को अपने ही अंगरक्षकों द्वारा माता श्रीमती इंदिरा गाँधी जी (तत्कालीन प्रधानमंत्री) की हत्या किए जाने के बाद राजीव जी को उसी दिन प्रधानमंत्री पद की शपथ दिलाई गई और उन्हें कुछ दिन बाद कांग्रेस (इ) पार्टी का नेता चुन लिया गया। राजीव गाँधी पूर्व से ही लोकसभा के निर्वाचित सदस्य थे, फिर भी राजनीतिक शुचिता का परिचय देते हुए, उन्होंने पुनः लोकसभा का चुनाव समय पूर्व करवाए ताकि कोई यह ऊँगली न उठा सके कि जनता ने इंदिरा जी को देखकर कांग्रेस को बहुमत दिया था, राजीव को नहीं। राजीव गाँधी के नेतृत्व में भारत के लोकतंत्र के इतिहास में कांग्रेस ने 542 में से 411 सीटें जीतकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया।

श्री राजीव गाँधी गंभीर स्वभाव वाले व्यक्ति थे। उनकी रूचि छात्र जीवन से ही विज्ञान एवं इंजीनियरिंग में थी। उनकी सोच आधुनिक थी। उनका मानना था कि विज्ञान और तकनीक के सहयोग से ही उद्योगों का समुचित विकास हो सकता है। अपनी इसी दूरदर्शिता का परिचय देते हुए उन्होंने कंप्यूटर को आमजन तक पहुँचाने के लिए विशेष पहल कर इक्कीसवीं सदी के भारत को प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सुदृढ़ किया। आज पूरे देश में जो कंम्प्यूटरीकृत व्यवस्था देखने को मिल रही है, इसमें राजीव गाँधी जी का महत्वपूर्ण व उल्लेखनीय योगदान रहा है।

भारत में दूरसंचार क्रांति के अग्रदूत राजीव गांधी ने स्न 1984 में Centre for Development of Telematics (C-DOT) की स्थापना कर भारतीय दूरसंचार नेटवर्क की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया। फलस्वरूप शहर से लेकर गाँव तक दूरसंचार का जाल (1986) बिछना प्रारंभ हो गया और गाँव–शहर, देश–दुनिया सब आपस में जुड़ने लगे।

शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता को संबल प्रदान करने हेतु राजीव गाँधी जी ने सन् 1986 में शिक्षा विभाग के लिए नई शिक्षा नीति (NEP) का प्रारूप तैयार कर उसे क्रियान्वित किया।

राजीव गांधी ने अपने प्रधानमंत्रित्व काल में सन् 1989 में संविधान में 61वाँ संशोधन कर मताधिकार की उम्र सीमा 21 वर्ष को कम करके 18 वर्ष कराया। इससे करोड़ों युवा जो 18 वर्ष के थे, उन्हें चुनावों में मत देने का अधिकार प्राप्त हो गया और वे विभिन्न चुनावों में अपने–अपने मतानुसार जनप्रतिनिधियों को चुनने के लिए समर्थ हो गए। स्थानीय स्वराज्य संस्थाओं में महिलाओं को 33 आरक्षण दिलवाने का काम राजीव गाँधी जी द्वारा किया गया।

उनका मानना था कि सत्ता के विकेंद्रीकरण के लिए पंचायती राज की व्यवस्था को सबल व समर्थ बनाकर ही निचले स्तर तक लोकतंत्र को पहुँचाया जा सकता है, अतएव पंचायती राज की मजबूती के लिए सन् 1991–92 में संविधान में 73वाँ संशोधन कर पंचायती राज व्यवस्था को सशक्त किया। फलस्वरूप 24 अप्रैल 1993 को (उनके मरणोपरांत) पूरे भारत में त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था लागू हुई।

21 मई 1991 में राजीव गाँधी जी की हत्या हो गई परंतु आज भी राजीव गाँधी जी को भारत में दूरसंचार क्रांति के अग्रदूत के रूप में आदरपूर्वक स्मरण किया जाता है।

## अभ्यास

### पाठ से

**एक वाक्य में उत्तर दीजिए–**

1. राजीव जी प्रधानमंत्री बनने से पूर्व कहाँ नौकरी करते थे?
2. राजीव जी की हत्या कब हुई?
3. देश राजीव जी को किस रूप में स्मरण करता है?
4. एंटोनियो माइनो कौन थी तथा एंटोनियो माइनो का परिवर्तित नाम क्या है?
5. महिलाओं के हित में श्री राजीव गाँधी ने क्या कार्य किए?

**दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–**

1. किन परिस्थितियों में श्री राजीव गाँधी को प्रधानमंत्री पद की शपथ दिलायी गई?
2. प्रोद्योगिकी के क्षेत्र में श्री राजीव जी के योगदान का वर्णन कीजिए।
3. 61वाँ संविधान संशोधन एवं 73वाँ संविधान संशोधन किस बारे में था?
4. राजनीतिक शुचिता का परिचय देने के लिए राजीव गाँधी जी ने क्या किया?
5. राजीव गाँधी जी ने पंचायती राज व्यवस्था के सशक्तिकरण के लिए क्या किया?
6. विज्ञान और तकनीक के सहयोग से ही उद्योगों का समुचित विकास हो सकता है? इस बात से आप कहाँ तक सहमत हैं? लिखिए।
7. स्व. राजीव गाँधी जी का पारिवारिक परिचय लिखिए।

●●●

# शब्दकोश

शब्दकोश में शब्दों का संयोजन तथा उनके अर्थ समझिए। रिक्त स्थानों पर, बॉक्स में दिए गए, पूर्व में पढ़े शब्द और उनके अर्थ, शब्द कोश के क्रम में लिखिए।

## अ

अइहैं – आएँगे
अकर्मण्यता – निकम्मापन
अकिंचन – तुच्छ, छोटा
..... – .....
अक्षुण्य – बिना टूटे, अखण्डित
अगोचर – जो दिखाई न दे
..... – .....
अजैविक – जिनका सम्बन्ध जीवों से न हो
अट्टालिका – अटारी
अटूट – न टूटनेवाला, दृढ़, मजबूत
अंतिम घड़ियाँ – मृत्यु का आखिरी क्षण
अनश्वर – जो कभी नष्ट न हो, जिसका नाश न हो ।
अनर्गल – व्यर्थ, बेकार
अनभिज्ञ – जिसकी जानकारी न हो
..... – .....
अनिश्चय – निश्चय नहीं
अनुकरणीय – अपनाने योग्य
अनुराग – प्रेम
अनुपम – जिसको उपमा न दी जा सके, जिसकी समानता न हो
..... – .....
अपरिमित – जिसकी सीमा न हो
..... – .....
अभिमान – घमंड
..... – .....
अमराई – आम का बगीचा
अवधि – समय–सीमा
अवस्था – हालत
..... – .....
..... – .....
अश्रु – आँसू
असहनीय – जो सहन न किया जा सके
असामान्य – जो मामूली न हो, विशेष

अखिल, अजीव, अनाथ, अचल, अनूठी, अपूर्ण, अभाव, अभियान, अमिय, अविकल, अशिव

## आ

..... – .....
आँखें भर आना – आँखों में आँसू आ जाना
आँजना – लगाना (काजल आदि)
आकर्षण – मन को अपनी ओर खींचनेवाला
आक्रमण – हमला
..... – .....
आगत – आया हुआ
आगमन – आना
..... – .....
..... – .....
आच्छादित – ढँकी हुई
आतंक – भय, उपद्रव
..... – .....
आतुरता – व्याकुलता, अकुलाहट
आदि – आरंभ, पहले
आदी – अभ्यस्त होना
आधीन – किसी के वश में होना
आध्यात्मिक – आत्मा– परमात्मा संबंधी
आभार – कृतज्ञता
आमंत्रित – बुलाया गया
आमोद – प्रसन्नता
आराध्य – पूज्य
आलिंगन – गले लगना, बाहों में भर लेना
आवेश – जोश
आयाम – फैलाव, विस्तार
आरोप – इलजाम, दोष लगाना
आर्थिक – धन से संबंधित
आशय – इच्छा रखना
आशीष – आशीर्वाद
आस्तीन – कमीज या कुर्ते की बाँह

आधार, अजीब, आतंकवाद, आग्रह, आघात, आँखें दिखाना, आकांक्षा

## इ

इंदु – चंद्रमा
इंद्रप्रस्थ – महाभारत काल का एक प्रसिद्ध नगर जो दिल्ली के निकट था

इज्जत – सम्मान
इति – अंत
इत्यादि – वगैरह

## ई

ईख – गन्ना
ईश – ईश्वर
ईर्ष्या – जलन
ईर्ष्यालु – जलन रखनेवाला

## उ

उच्च – ऊँचा
उड़ा देना – खत्म कर देना
उत्सव – त्यौहार
..... – .....
..... – .....
उपरान्त – बाद में
उपलब्धियाँ – प्राप्तियाँ
उपासना – आराधना, पूजा–सेवा करना
..... – .....
उलाहना – अटकाव, झंझट
उलूक – उल्लू

उत्सुक, उन्नत, उभय

## ऊ

ऊँघ – नींद का झोका
ऊटपटाँग – उल्टा–सीधा काम

## ए,ऐ

एकत्रित – इकट्ठे
..... – .....
..... – .....
..... – .....
..... – .....

एकलव्य, एकमत, ऐश्वर्य, ऐक्य

ओ

ओत–प्रोत – भरा हुआ
..... – .....
..... – .....

ओष्ठ, ओसारा,

## औ

..... – .....
..... – .....
औषधि – दवा

औषधालय, औद्योगिक

## क

कंचन – सोना
..... – .....
कटि – कमर
कतार – पंक्ति
कदाचित – शायद
..... – .....
कमरिया – कम्बल
कर – हाथ, टैक्स
..... – .....
काक – कौआ
..... – .....
कान पकना – कोई बात सुनते–सुनते ऊब जाना
काफिला – यात्रियों का समूह
कारावास – जेल, कैदखाना, बंदीगृह
कालिंदी – जमुना/यमुना (नदी का नाम)
कालिमा – अँधेरे का कालापन
किंकर्त्तव्यविमूढ़ होना – क्या करें, क्या न करें, निश्चय न कर पाना
..... – .....
..... – .....
कुलीन – अच्छे परिवार का
कृति – रचना
केंद्रित करना – किसी एक बिंदु पर ध्यान एकाग्र करना
कोप – क्रोध
क्षत–विक्षत – बुरी तरह घायल,

किश्ती, कलरव, काजी, कीट, कगार, कदापि,

## ख

..... – .....
..... – .....
खड्ग – तलवार

खतरे की घंटी – चेतावनी देना
खपत – उपयोग
..... – .....
खरामा–खरामा – धीरे–धीरे
खिताब – उपाधि
..... – .....
खिसक जाना – चुपके से चले जाना
..... – .....
खुसुर–फुसुर – बिना आवाज किए बातें करना
..... – .....
खेल बनाना – मजाक बनाना
..... – .....

खलल, खुदा, खग, खैर, खंजर, खर, खिन्न

## ग

..... .....
गतिरोध – बाधा
गला भर आना – भावुक हो जाना
ग्लानि – पछतावा, पश्चाताप
गिरि – पर्वत, पहाड़
..... .....
गुप्तचर – जासूस
..... – .....
गूढ़ – रहस्यपूर्ण

ग्वारन – ग्वाले, गाय चरानेवाले

गंजा, गुंजाइश, गुबारा, गंध

## घ

..... .....
घटक – अंग
घट–घट – प्रत्येक हृदय में
घन – बादल
घनघोर – बहुत अधिक
घनेरी – बहुत अधिक
..... .....
घाघ – भारी चालाक व्यक्ति
घाटी – दो पर्वतों के बीच का गहरा भू–भाग
..... – .....
..... – .....

घपला, घालमेल, घात, घंटिका

## च

..... – .....
चक्का बँधा होना – स्थिर न रहना
चना–चबेना – सूखे, भुने खाद्य पदार्थ
..... .....
चमन – उद्यान, बगीचा
चलायमान – गतिमान
..... .....
चातुरी – चतुराई
..... .....
चिरन्तन – पुराना, पुरातन
चीत्कार – दुखभरी, ऊँची आवाज
..... .....
चुभन – चुभने का दर्द
..... .....
चेष्टा – प्रयास
चैन – संतुष्टि, आराम
चैन आना – मन शान्त होना,

चपत, चहल–पहल, चुनौती, चेतना, चिर, चंद

## छ

..... – .....
..... – .....
छटा – दृश्य, चमक
..... – .....
छिन्न–भिन्न होना – बिखर जाना
छींकौ – सींका
..... – .....
छुद्र – छोटी

छूँछी, छुआछूत, छग, छत्र, छंद

## ज

..... – .....
जंजीर – बेड़ी
जगत – संसार, दुनियाँ
जन साधारण – साधारण जनता
जनानी – औरत, औरतों की
..... – .....

जमात – एक तरह के लोगों का समूह
..... – .....
जलचर – जल के जीव–जन्तु
जलवृष्टि – पानी गिरना, वर्षा होना,
जागरूक – सजग
जायो – पैदा किया
जिय – मन
..... – .....
जैविक – जीवों, प्राणियों से सम्बन्धित
..... – .....
जोर – दबाव, जबर्दस्ती
जोरो – जोड़कर
जोशांदा – सर्दी, जुखाम दूर करने की दवा
ज्वर – बुखार
..... – .....

जंजाल, जमघट, जयंती, जंग, जोखिम, जिहाद, ज्योतिष,

## झ

..... – .....
..... – .....
..... – .....
..... – .....
झिड़की – डाँट, डपटना
झुटपुटा – सुबह जब कुछ उजाला, कुछ अँधेरा हो

झंकार, झिझक, झंझट, झाड़

## ट

..... – .....
..... – .....
टहल – सेवा, चाकरी
..... – .....
..... – .....
टोटा – कभी
..... – .....

टालमटोल, टोह, टैक्सी, टंकण, टक्कर

## ठ

..... – .....
..... – .....
..... – .....
..... – .....
ठिठक जाना – संकोचपूर्वक रुक जाना

ठिकाना, ठट्ठा, ठग, ठसक

## ड

..... – .....
..... – .....
..... – .....
..... – .....
डोम – एक अनुसूचित जाति जो श्मशान में चिता जलाने का काम करती थी।

डंके की चोट कहना, डगर, डील–डौल, डंठल,

## त

..... – .....
..... – .....
तत्काल – उसी समय, तुरंत
तृण – तिनका, घास
तंदुरुस्त – स्वस्थ
तृप्ति – संतुष्टि
तथाकथित – ऐसा कहा हुआ`
तत्परता – शीघ्रतापूर्वक
तन्मय – लीन
तन्मयता – लीन होना
तपस्या – कठिन साधना
तमाशा बनाना – हँसी का पात्र बनाना
तसल्ली देना – धैर्य बँधाना
ताप – गर्मी
तापित – तपा हुआ
..... – .....
ताल – तालाब
..... – .....
..... – .....
..... – .....

ताम्र, तिमिर, तंत्र, तुरंग, तीक्ष्ण, तंत्र–मंत्र

## थ

थका–हारा – थकावट से चूर
..... – .....
..... – .....

थल, थर्राना

## द

दंडसंहिता – सजा देनेवाले नियम
..... – .....
दरख्त – वृक्ष
दर–दर – द्वार–द्वार
दर्प – घमंड
..... – .....
दशक – दस वर्ष की अवधि
..... – .....
दामन – आँचल
दिलचस्पी – रुचि
दिलीप – रघुकुल के एक सम्राट
दीर्घ – लंबा समय
दीर्घजीवी – लंबे समय तक जीनेवाले
दीर्घायु – लंबी आयु
दुखद – दुख देनेवाला, कष्टप्रद
..... – .....
दुर्गन्ध – बदबू
दुर्गम – जहाँ जाना बहुत कठिन हो
..... – .....
दृष्टिपात – देखना
देशद्रोही – देश से द्रोह करनेवाला
..... – .....
..... – .....

दंत, दसमुख, दुर्गति, दृष्टि, द्युति, दबंग, दैत्य,

## ध

..... – .....
..... – .....
धरातल – जमीन पर
..... – .....
धूर्त – कुटिल
धूर्तता – कुटिलता
..... – .....
धेनु – गाय
..... – .....

धीर, धंधा, धूमकेतु, धरा, ध्येय

## न

नभ – आकाश
नभ–चुम्बी – बहुत ऊँचे, आकाश को चूमने वाला
नत होना – झुकना
..... – .....
नाती – लड़की का लड़का, लड़के का लड़का
नादान – नासमझ
..... – .....
निखार आना – अधिक सुंदर लगना
निरन्तर – लगातार
निराधार – आधारहीन
निर्जन – सुनसान
निर्बुद्धि – मूर्ख, बुद्धिहीन
निर्भर – आश्रित, अवलंबित
निर्वासन – निकालना (देश निकाला)
निश्चेष्ट – निष्क्रिय
निश्छल – छलरहित, बिना कपट के
निश्शंक – बिना किसी शंका के, निस्संदेह
..... – .....
निष्काम – बिना कामना के
निष्ठा – लगन
नीड़ – घोंसला
..... – .....
नीरोग – रोग रहित , बिना रोग के
नूपुर – घुँघरू (महिलाओं के पाँव का गहना)
..... – .....

नीरव, नृप, नर, नाभि, निष्कलंक

## प

..... – .....
..... – .....
पखेरू – पक्षी
पतियायो – विश्वास कर लिया
परकाज – दूसरों के काम
परकोटा – मकान/बाड़ी/भूमि के चारों तरफ घिरा हुआ क्षेत्र, घेरा
परास्त – हार
परिवर्तित – बदला हुआ
पर्यटन – भ्रमण, घूमना

पाछे – पीछे
पाटलीपुत्र – वर्तमान पटना नगर
पाद–प्रक्षालन – चरण धोना
पाहन – पत्थर
..... – .....
पीड़ा – कष्ट, दुःख
पुरंदर – इंद्र
पुरातत्वविभाग – प्राचीन ऐतिहासिक स्थलों, की देखरेख करनेवाला विभाग
पेशगी – अग्रिम राशि
पैशाचिक – राक्षस जैसा, क्रूर
..... – .....
पोता – पुत्र का पुत्र
प्रकांड – बहुत बड़ा, उत्तम
प्रखर – तेज
प्रच्छन्न – छुपा हुआ
प्रणयन – रचना, ग्रन्थ लिखना
प्रतिज्ञा – संकल्प, शपथ
प्रतिध्वनि – आवाज का वापस आना/लौटकर गूंजना
प्रतिबद्ध – बँधा हुआ
प्रतिशोध – बदला
प्रतिष्ठा – सम्मान, इज्जत
प्रदूषित – जो दूषित हो गई हो
प्रफुल्लता – अति प्रसन्नता
प्रयत्न – कोशिश, प्रयास, उपाय
प्रवाहित – बहता हुआ
प्रशासनिक – शासकीय
प्राण पखेरू उड़ना – मृत्यु होना, मरना
प्रावधान – व्यवस्था
प्रेरणा – उकसाने की क्रिया
..... – .....

पंथ, पंकज, पिशाच, पोत, प्रोत्साहन

## फ

..... – .....
..... – .....
फरार – लापता या, भागा हुआ व्यक्ति
..... – .....
फुरि – सांच, सच, सत्य
..... – .....

फक्कड़, फरियाद, फौज, फंदा

## ब

..... – .....
बंदी छोर – बंधन खोलनेवाला
बख्श देना – क्षमा कर देना
बछल – वत्सल, गाय का बछड़े के प्रति जैसा प्रेम
बटोहिया – राहगीर
बतियाना – बातचीत करना
बरबस – जबर्दस्ती
बलवती – अधिक प्रबल
बलात – बलपूर्वक
बलिदान – कुर्बानी
बहियाँ – बाँह, भुजाएँ
बात की सँभार – वचन की रक्षा, बात को सँभाल के
बाध्य – विवश
बाला – युवती, बालिका
बावजूद – इसके होते हुए भी
बिनवै – विनती करता है
बियापे – अनुभव होता है
बुजुर्ग – वृद्ध, बूढ़े
..... – .....
..... – .....
बैन – वचन
बैजन्तीमाल – एक प्रकार की माला, जिसमें पाँच रंग के फूल होते हैं, विजयमाल
..... – .....

बुध, बैरागी, बुनियादी, बंदी

## भ

..... – .....
भय – डर
भरमाकर – बहकाकर
..... – .....
भाँड़ा फूट जाना – रहस्य प्रगट हो जाना
भाँज दो – तेज कर दो
..... – .....

भाल – मस्तक
भाष्यकार – मूल ग्रंथ की व्याख्या लिखने वाला
..... – .....
भूत उतारना होगा – घमंड चूर करना होगा
भूमिगत – भूमि के अन्दर, जमीन के भीतर
..... – .....
भृकुटी – भौंह
भोटदेशी – भोट प्रदेश के रहने वाले,
भोर – सुबह
..... – .....

भव, भार, भंजक, भुजंग, भूलभुलैया, भौतिक

## म

..... – .....
मंद – धीमा
मंदाग्नि – पाचन शक्ति का बिगड़ जाना,
मंदित – मढ़ा हुआ
मझारन – मध्य
मधुमेह – डायबिटीज नामक रोग, जिसमें पेशाब के साथ शक्कर भी आती है।
मधुवन – गोकुल के आसपास की भूमि, कृष्ण का रासलीला–स्थल
मनहर – मन को हरन करनेवाला, लुभाने वाला
मनीषी – ज्ञानी, पंडित
मनुजत्व – मानवता, आदमीयत
मनोकामना – मन की इच्छा
मनोरथ – मन की इच्छा
मनोरम – मन को अच्छा लगनेवाला, मन को रमानेवाला
मात देना – परास्त करना
मानुस – मनुष्य
मारक – मारनेवाला
माहिर – कुशल
मुकाबला – प्रतियोगिता, भिड़ंत
मुक्त – स्वतंत्र
मुखबिर – पुलिस को अपराधियों की सूचना देनेवाला
मुखर – अधिक बोलनेवाला
मुख्यतः – मुख्य रूप से
मुग्ध – मोहित होना
मुट्ठी में होना – वश में होना
मुठभेड़ – टक्कर
..... – .....
मेहतर – सफाई करनेवाला
मोर – मेरा, मयूर
मोहक – मन को मोह लेनेवाला
..... – .....
..... – .....

मोहताज, मूर्छा, मौन, मंजु

## य

..... – .....
यंत्रणा – पीड़ा, क्लेश
..... – .....
याचक – भिखारी, माँगनेवाला
..... – .....
यातना – अतिकष्ट, पीड़ा
..... – .....
युक्ति – उपाय
योगाभ्यासी – योग का अभ्यास करनेवाला
..... – .....
न्यारा – अलग, भिन्न

यम, योग्य, यंत्र, यान, याचना

## र

..... – .....
..... – .....
रकम – धन, पैसा
रघुवंश – महाकवि कालिदास द्वारा रचित महाकाव्य, महाराज रघु की कथा
रफ्तार – गति
रसाल – आम
..... – .....
राजति – शोभायमान होते हैं
राष्ट्रीयता – राष्ट्र प्रेम की भावना
..... – .....
..... – .....
रिसाई – नाराज होना
रुँआँसी – रोने जैसे

राष्ट्र, रिक्त, राह, रंज, रंक

## ल

लकुटि – लाठी, छड़ी
लखो – देखो
..... – .....
लामा – तिब्बत के बौद्ध भिक्षु, तिब्बती साधु
..... – .....
..... – .....
लिबास – वेश–भूषा
..... – .....
लेक – दर्रा
लैहों – लूँगी, पाऊँगी
..... – .....
..... – .....

लिखित, लीन, लोक, लवण, लायक, लोचन

## व

वंदन – वंदना, वंदनवार
..... – .....
वाष्प इंजन – भाप से चलने वाला इंजन
विकल – व्याकुल
विकल्प – इसके बदले में
विख्यात – प्रसिद्ध, जाहिर
..... – .....
..... – .....
विद्यमान – उपस्थित, मोजूद
विधि – प्रकार, तरीके
..... – .....
विराटता – विशालता
विवश – लाचार, मजबूर
विस्मित – आश्चर्यचकित
विशेषज्ञ – विषय का जानकार
वैकल्पिक – इसके बदले में
वैदिक युग – जिस युग में वेदों की रचना की गई
वैजंतीमाल – एक प्रकार की माला जिसमें पाँच रंगो के फूल होते हैं। विजय माला
..... – .....
व्यर्थ – बेकार, फालतू
व्यस्त – किसी काम में लगा हुआ
व्यापक – जो सब जगह हैं
व्याप्त – फैली हुई, फैला हुआ, समाया हुआ

व्यंग्य, वियोग, विजयनाद, वाष्प, विगत

## श

..... – .....
शंख – माप की इकाई, गणना की इकाई, एक समुद्री जीव का शरीर, जिसके मर जाने पर उसे पूजा आदि कार्य में बजाने के काम में लेते हैं
..... – .....
शतरंज – एक प्रकार का खेल
..... – .....
शरीरान्त – शरीर का अंत, मृत्यु, देहावसान
शारीरिक – शरीर संबंधी
..... – .....
शोभा – सौंदर्य
..... – .....
शौकीन – शौक करने वाला, किसी भी काम में अधिक रुचि रखने वाला।
श्मशान – मुर्दा जलाने का स्थान
..... – .....
श्रृंगार – साज, सज्जा
..... – .....
श्रेष्ठ – अच्छा

शौक, शैल, शंका, शत, शपथ, श्वेत, श्रेय,श्रोत

## स

सँकरी – तंग, पतली
संकल्प – प्रण, प्रतिज्ञा
संकेत – इशारा
संग्रहीत – एकत्र की गई
संग्राम – युद्ध
..... – .....
संचालन – कार्यक्रम की प्रस्तुति

संजोग – सुअवसर
संसर्ग – साथ
संयंत्र – कारखाना
सकल – पूरा, सम्पूर्ण
सखी – सहेली
सचेत करना – चेतावनी देना
सतत् – हमेशा, लगातार
सत्कार – स्वागत
..... – .....
सदी – सौ वर्ष का समय
सदृश – के समान, उसके जैसे
सन्नाटा – खामोशी
सफर – यात्रा
समग्र – पूर्ण, पूरी
समर्पित – अर्पित करना, न्यौछावर करना
समाधि – शव को मिट्टी में गाड़ना
सम्मान – आदर
समुचित – सही तरीके से,
सरवर – तालाब, सरोवर
सर्वत्र – सब जगह
सर्वव्यापी – सब जगह रहनेवाला
सर्वाधिक – सबसे अधिक
सर्वोच्च – सबसे ऊँचा
सहचर – साथ चलनेवाला
सहभागिता – सहयोग, भागीदारी
सहमत होना – रजामंदी
सहृदयता – हृदय में दया करुणा का भाव
साँझ – सायंकाल
साँझ ढले – सूर्यास्त के बाद
सांत्वना – तसल्ली
..... – .....
साहब – स्वामी, प्रभु
साहस – हिम्मत
साहस छूट जाना – हिम्मत हारना
सिंह–पौर – सिंह की आकृतिवाला दरवाजा, महल का प्रवेश द्वार
सिर फुटव्वल – सिर फोड़ने जैसी भारी मारपीट
..... – .....
..... – .....
सुकुमार – कोमल
सुगीत – सुंदर गीत
..... – .....
सुर्राभ – सुगंधित वायु
सूक्ष्म – बहुत छोटा, कठिनाई से समझ में आने योग्य
सेहत – स्वास्थ्य
सैलानी – यात्री, घुमक्कड़, सैर करनेवाले
सौंदर्य – सुंदरता
सौर–ऊर्जा – सूर्य से प्राप्त होनेवाली शक्ति
स्निग्ध – चिकनाई युक्त
स्वर्गवास – मृत्यु, देहांत, स्वर्ग में रहना
स्वच्छंद – स्वतंत्र
स्वाँग रचना – भिन्न–भिन्न प्रकार के रूप बनाकर अभिनय करना।
स्मरण – याद
स्मरणशक्ति – याददास्त, याद रखने की शक्ति
स्नेह – प्रेम
स्नेहभाजन – प्रेमपात्र, प्रेम के हकदार

सिरहाने, सिर्फ, संघर्ष, सुभट, सार्थक, सदा

## ह

..... – .....
हमार – हमारा
हरगिज – कभी भी
हल्ला मचना – शोर–शराबा होना
हाड़ी – बटलोही के आकार का मिट्टी का बर्तन
हाँसी – हँसी, ठिठोली
हाथ फैलाना – भीख माँगना, याचना करना
..... – .....
ह्रास – कम होना
हित – भलाई
हिम – बर्फ
हिमवृष्टि – बर्फ की वर्षा
..... – .....
..... – .....
हृदयग्राहिणी – हृदय में रखने योग्य
..... – .....
होणी – भविष्य में जो होना है
..... – .....

हुंकार, हास, होड़, हड़कंप, हेतु

# ब्रेल एक परिचय

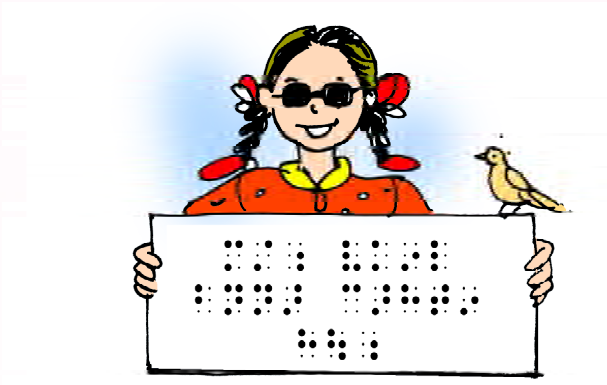



## क्या आप जानते है यह क्या लिखा है

यह लिखा है –मैं वकील बनना चाहती हूं।

देवनागिरी, गुरूमुखी इत्यादि लिपियों की तरह ही ब्रेल भी एक लिपि है। ब्रेल लिपि का उपयोग दृष्टिहीन व्यक्तियों द्वारा पढ़ने एवं लिखने के लिये किया जाता है। ब्रेल लिपि का अविष्कार लुई ब्रेल द्वारा सन् 1829 में किया गया था। ब्रेल लिपि उभरे हुए छः बिन्दुओं पर आधारित होती है, इन छः बिन्दुओं से मिलकर एक सेल बनता है, प्रत्येक सेल में एक वर्ण (अक्षर) लिखा जाता है। ब्रेल लिखने के लिये स्टाइलस एवं विशेष प्रकार की स्लेट का उपयोग किया जाता है जिसमें छः–छः बिन्दुओं के कई सेल बने होते हैं इसे ब्रेल स्लेट कहा जाता है। ब्रेल स्लेट में मोटे कागज़ की शीट पर स्टाइलस के द्वारा लिखा जाता है। ब्रेल स्लेट की सहायता से ब्रेल लिपि में लिखते समय सीधे हाथ से उलटे हाथ की तरफलिखा जाता है जिससे की उभार दूसरी तरफ आते हैं। इन्ही उभारों को हाथ की उंगलियों की सहायता से छू कर पढ़ा जाता है। ब्रेल के छः बिन्दुओं का क्रम इस प्रकार होता है।

ब्रेल बिन्दु

इन छः बिन्दुओं को लेकर 63 अलग–अलग आकृतियां बनाई जा सकती है।
कुछ आकृतियां निम्न प्रकार हैं

## ब्रेल चार्ट

नोट : उभारे हुए बिन्दुओं को यहां मोटे बिन्दुओं के रूप में दिखाया गया है।

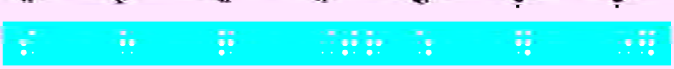

Copyright © [illegible] ARU[illegible] All rights reserved.